قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝٣١

(३१) (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो!) तुम्हारा क्या उद्देश्य है ?[1]

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ۝٣٢

(३२) उन्होंने उत्तर दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं ।[2]

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ۝٣٣

(३३) ताकि हम उन पर मिट्टी के कंकरियों की वर्षा करें ।[3]

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝٣٤

(३४) जो तेरे प्रभु की ओर से नामांकित हो चुकी हैं उन सीमा उलंघन करने वालों के लिए ।[4]

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝٣٥

(३५) तो जितने ईमान वाले वहाँ थे, हमने उन्हें निकाल दिया ।[5]

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝٣٦

(३६) तथा हमने वहाँ मुसलमानों का मात्र एक ही घर पाया ।[6]

---

[1] خَطْب कथा, अभियान । अर्थात इस शुभसूचना के अतिरिक्त तुम्हारा और क्या कार्य एवं उद्देश्य है जिसके लिए तुम्हें भेजा गया है ।

[2]इससे अभिप्राय लूत की जाति है जिसका सबसे बड़ा अपराध लिवातत (समलैंगिक मैथुन) था ।

[3]बरसायें का अभिप्राय है कि इन कंकड़ियों से मार डालें । यह कंकड़ियाँ विशुद्ध पत्थर की थीं, न कि आकाशीय ओले थे, अपितु मिट्टी से बनी हुई थीं ।

[4]مُسَوَّمَة (मुसौव्वमः) नामांकित अथवा निशान लगी, उनका विशेष चिन्ह था अथवा वह प्रकोप के लिए विशेष थीं । कुछ कहते हैं कि जिस कंकड़ी से जिसकी मौत होनी थी, उस पर उसका नाम लिखा होता था । مُسْرِفِين जो शिर्क तथा पथभ्रष्टता में बहुत बढ़े हुए तथा दुराचार एवं पाप में सीमा पार करने वाले हैं ।

[5]अर्थात प्रकोप आने से पूर्व हमने वहाँ से उनको निकल जाने का आदेश दे दिया था ताकि वे प्रकोप से सुरक्षित रहें ।

[6]तथा यह अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम का घर था जिसमें

وَتَرَكْنَا فِيهَآ ءَايَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ۝٣٧

(३७) तथा वहाँ हमने उनके लिए जो कष्टदायी यातना का भय रखते हैं, एक पूर्ण निशानी छोड़ी।[1]

وَفِى مُوسَىٰٓ إِذْ أَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ۝٣٨

(३८) तथा मूसा की कथा में (भी हमारी ओर से चेतावनी है) जबकि हमने उसे फ़िरऔन की ओर स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा।

उनकी दो पुत्रियाँ तथा कुछ ईमान वाले थे। कहते हैं कि यह कुल तेरह थे। इनमें आदरणीय लूत की पत्नी सम्मिलित नहीं थी, अपितु वह अपनी जाति के साथ विनाश होने वालों में थी। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इस्लाम का अर्थ है आज्ञापालन तथा समर्पण। अल्लाह के आदेशों के पालन पर सिर झुकाने वाला मुस्लिम है। इस आधार पर प्रत्येक मोमिन मुसलमान है। इसीलिए उनके लिए मोमिन शब्द प्रयोग किया तथा पुनः उन्ही के लिये मुस्लिम शब्द बोला गया है। इससे प्रमाणित किया गया है कि इनके चरितार्थ में कोई अंतर नहीं, जैसाकि कुछ लोग मोमिन तथा मुस्लिम के बीच करते हैं। क़ुरआन ने जो कहीं मोमिन तथा कहीं मुस्लिम शब्द का प्रयोग किया है तो वह उन अर्थों के अनुसार है जो अरबी शब्दार्थों के आधार पर उनके बीच है। अतः शाब्दिक प्रयोग के मुक़ाबले में धार्मिक तथ्यों को लेना अधिक अनिवार्य है धार्मिक तथ्यों के आधार पर उनके मध्य वही अन्तर है जो जिब्रील अलैहिस्सलाम की हदीस से सिद्ध है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि इस्लाम क्या है ? तो आपने फ़रमाया : لا إله إلا الله (ला एलाह इल्लल्लाह) की गवाही, नमाज़ की स्थापना, ज़कात देना, हज तथा रमज़ान के महीने का रोज़ा (व्रत)। तथा जब ईमान के विषय में प्रश्न किया गया तो फ़रमाया : अल्लाह पर ईमान लाना, उसके फ़रिश्तों, किताबों, रसूलों, प्रलय का दिन तथा अच्छे एवं बुरे भाग्य के प्रति विश्वास रखना। अर्थात दिल से इन चीज़ों पर विश्वास रखना तथा आज्ञा एवं कर्तव्यों का पालन इस्लाम है। इस आधार पर प्रत्येक मोमिन मुसलमान तथा प्रत्येक मुसलमान मोमिन है। (फ़तहुल क़दीर) तथा जो लोग मोमिन तथा मुस्लिम के बीच अंतर करते हैं वे कहते हैं कि यह सही है कि यहाँ क़ुरआन ने एक ही गिरोह के लिए मोमिन तथा मुस्लिम के शब्द प्रयोग किये हैं, परन्तु इनके बीच जो अंतर है उसके आधार पर प्रत्येक मोमिन मुस्लिम भी है फिर भी प्रत्येक मुस्लिम का मोमिन होना आवश्यक नहीं। (इब्ने कसीर) जो भी हो यह ज्ञान संबंधी बहस है तथा दोनों गिरोहों के पास अपने-अपने तर्क हैं।

[1]यह आयत अथवा पूर्ण लक्षण वह प्रकोप के चिन्ह हैं जो इन विध्वस्त बस्तियों में एक युग तक शेष रहे। तथा यह संकेत भी उन्ही के लिए हैं जो ईश्वरीय प्रकोप का भय रखते हैं, क्योंकि शिक्षा तथा सदुपदेश का प्रभाव भी वही स्वीकार करते हैं तथा आयतों (निशानियों) में मनन-चिन्तन भी वही करते हैं।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तो उसने अपने बल बूते पर मुख मोड़ा[1] तथा कहने लगा कि यह जादूगर है अथवा दीवाना है।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) अन्ततः हमने उसे तथा उसकी सेना को अपनी यातना में पकड़ कर समुद्र में डाल दिया, वह था ही निंदनीय।[2]

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾

(४१) उसी प्रकार आदियों में भी[3] (हमारी ओर से चेतावनी है) जबकि हमने उन पर बाँझ (अशुभ) आँधी भेजी।[4]

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾

(४२) वह जिस-जिस वस्तु पर आती थी उसे जीर्ण अस्थियों की तरह चूर-चूर कर देती थी।[5]

وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा समूद (की कथा) में भी (शिक्षा है) जब उनसे कहा गया कि तुम कुछ दिनों तक लाभ उठा लो।[6]

---

[1]दृढ़ पहलू को रुक्न कहते हैं। यहाँ अभिप्राय उसकी अपनी शक्ति तथा सेना है।

[2]अर्थात उसके काम ही ऐसे थे कि जिन पर वह निन्दा का पात्र था।

[3] أي: تركنا في قصة عاد آية आद की कथा में भी हमने निशानी छोड़ी।

[4] الرِّيحَ العَقِيمَ (बाँझ हवा) जिसमें शुभ-सम्पन्नता नहीं थी। वह हवा वृक्षों को फलदार करने वाली थी न वर्षा की संदेशवाहक, अपितु केवल विनाश एवं प्रकोप की वायु थी।

[5]यह उस हवा का प्रभाव था जो आद के समुदाय पर प्रकोप के रूप में भेजी गई। यह प्रचंड वायु सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर चलती रही। (अल-हाक्क:,७)

[6]अर्थात जब उन्होंने अपने ही माँग किये चमत्कार से प्रकट ऊँटनी को वध कर दिया तो उनसे कह दिया गया कि अब तीन दिन तुम और दुनिया का स्वाद ले लो। तीन दिन के बाद तुम ध्वस्त कर दिये जाओगे। यह इसी तरफ संकेत है। कुछ ने इसे सालेह अलैहिस्सलाम की नबूअत के आरम्भ का वचन माना है। शब्दों का यह अर्थ भी हो सकता है बल्कि पूर्व वाक्य-क्रम से यही अर्थ अधिक उचित है।

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنظُرُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) परन्तु उन्होंने अपने प्रभु के आदेशों की अवहेलना की, जिस पर उन्हें उनके देखते-देखते (तीव्र) कड़क[1] ने नष्ट कर दिया।

فَمَا اسْتَطَٰعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) बस न तो वह खड़े हो सके[2] तथा न बदला ले सके।[3]

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा नूह (अलैहिस्सलाम) के समुदाय का भी इससे पूर्व (यही हाल हो चुका था) वे भी बड़े अवज्ञाकारी लोग थे।[4]

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَٰهَا بِأَيْيدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा आकाश को हमने (अपने) हाथों से बनाया है[5] तथा नि:संदेह हम विस्तार करने वाले हैं।[6]

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَٰهَا فَنِعْمَ الْمَٰهِدُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा धरती को हमने फ़र्श बना दिया है,[7] तो हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

---

[1]यह صَاعِقَةٌ (तीव्र कड़क) आकाशीय चीख़ थी तथा उसके साथ नीचे से رَجْفَةٌ (भूकम्प) था, जैसाकि सूर: *आराफ़-७८* में है।

[2]कि वे भाग सकें।

[3]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से अपने आपको नहीं बचा सके।

[4]नूह का समुदाय, आद, फ़िरऔन तथा समूद आदि समुदायों से बहुत पहले गुज़र चुका है। इसने भी अल्लाह की आज्ञापालन के बजाये विद्रोह का मार्ग अपनाया था। अन्तत: उसे जल पल्वन में डुबो दिया गया।

[5] السَّمَاءَ को ज़बर (अ की मात्रा) بَنَيْنَا के कारण है जो लुप्त है। بَنَيْنَا السَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا

[6]अर्थात आकाश पहले ही बहुत विशाल है परन्तु हम उसको उससे भी अधिक विस्तृत बनाने का सामर्थ्य रखते हैं, अथवा आकाश से वर्षा करके जीविका विस्तृत करने का सामर्थ्य रखते हैं। अथवा مُوسِعٌ को وُسْعٌ से माना जाये (शक्ति तथा सामर्थ्य रखने वाले) तो अर्थ होगा कि हमारे भीतर ऐसे और भी आकाश तथा धरती बनाने का सामर्थ्य तथा शक्ति मौजूद है। हम आकाश तथा धरती बनाकर थक नहीं गये हैं, बल्कि हमारी शक्ति तथा सामर्थ्य असीम है।

[7]अर्थात बिस्तर की भाँति उसे बिछा दिया।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा प्रत्येक वस्तु को हमने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है[1] ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो ।[2]

فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तो तुम अल्लाह की ओर दौड़-भाग (अर्थात ध्यान) करो ।[3] नि:संदेह मैं तुम्हें उसकी ओर से स्पष्ट रूप से सचेत करने वाला हूँ ।

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥١﴾

(५१) तथा अल्लाह के साथ किसी अन्य को देवता न बनाओ । नि:संदेह मैं तुम्हें उसकी ओर से स्पष्ट रूप से सचेत करने वाला हूँ ।[4]

كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾

(५२) इसी प्रकार जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं, उनके पास जो भी रसूल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है अथवा दीवाना है ।

أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) क्या ये इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं,[5] नहीं बल्कि ये सभी उद्दण्ड हैं ।[6]

---

[1]अर्थात प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा नर तथा मादा अथवा उसके मुक़ाबिल तथा विलोम को भी पैदा किया है । जैसे प्रकाश-अंधकार, थल-जल, चाँद-सूर्य, मीठा-कड़ुवा, रात-दिन, भला-बुरा, जीवन-मृत्यु, ईमान-कुफ्र, सौभाग्य-दुर्भाग्य, स्वर्ग-नरक, जिन्न-इंसान, आदि । यहाँ तक कि जीवधारी की तुलना में निर्जीव । अत: आवश्यक है कि संसार का भी जोड़ा हो अर्थात परलोक, दुनिया के मुक़ाबिले में अन्य जीवन ।

[2]यह जान लो कि इन सबका रचयिता मात्र एक अल्लाह है, जिसका कोई शरीक (साझी) नहीं है ।

[3]अर्थात कुफ्र (अविश्वास) तथा अवज्ञा से तौबा तथा क्षमा माँग कर तुरन्त अल्लाह के सदन में झुक जाओ, इसमें देर न करो ।

[4]अर्थात तुम्हें हमने खोल-खोल कर डराया तथा तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ कि केवल एक अल्लाह की ओर झुको । उसी पर विश्वास तथा भरोसा करो तथा मात्र उसी एक की इबादत करो । उसके साथ अन्य उपास्यों को शरीक (साझी) न करो । ऐसा करोगे तो याद रखो कि स्वर्ग की सुविधाओं तथा सुखों से सदैव के लिये वंचित हो जाओगे ।

[5]अर्थात प्रत्येक बाद में आने वाली जातियों ने इसी प्रकार अल्लाह के रसूलों का इंकार किया और उन्हें जादूगर तथा उन्मादग्रस्त कहा, जैसे पहले समुदाय आगामी समुदायों को वसीयत करके जाते रहे । एक के पश्चात एक प्रत्येक समुदाय ने यही मार्ग अपनाया ।

[6]एक-दूसरे को वसीयत तो नहीं अपितु प्रत्येक समुदाय ही अपनी-अपनी जगह उद्दण्ड है ।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आप उनसे मुख फेर लें, आप पर कोई आरोप नहीं।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) तथा शिक्षा देते रहें, नि:संदेह ये शिक्षा ईमानवालों को लाभ देगी।[1]

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

(५६) मैंने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।[2]

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

(५७) न मैं उनसे जीविका चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें।[3]

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

(५८) अवश्य अल्लाह (तआला) तो स्वयं जीविका प्रदान करने वाला शक्तिशाली एवं बलवान है।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ

(५९) तो जिन लोगों ने अत्याचार किया है उन्हें भी उनके साथियों के भाग के समान

इसलिए उन सबके दिल समान हैं तथा उनके चरित्र भी मिलते-जुलते हैं। इसलिए पिछलों ने वही कुछ कहा जो अगलों ने कहा तथा किया।

[1]इसलिए कि सदुपदेश से लाभ उन्हीं को पहुँचाता है। अथवा अभिप्राय यह है कि आप शिक्षा देते रहें, इससे वह अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे जिनके संबंध में अल्लाह के ज्ञान में है कि वह ईमान लायेंगे।

[2]इसमें अल्लाह के उस इरादे (मशीयत) को व्यक्त किया गया जो धर्मविधान के अनुसार वह बंदों से चाहता है। कि सम्पूर्ण मानव और जिन्न मात्र एक अल्लाह की उपासना करें तथा आज्ञापालन भी उसी एक का करें। यदि इसका सम्बन्ध उत्पत्ति के इरादे से होता तो सब उसकी वन्दना तथा आज्ञापालन के लिए विवश होते तथा कोई उससे फिरने का सामर्थ्य न रखता। अर्थात इसमें इंसानों तथा जिन्नों को उनके जीवन का उद्देश्य स्मरण कराया गया है, जिसे यदि उन्होंने भूलाये रखा तो आख़िरत में कड़ी पूछ होगी तथा वह उस परीक्षा में विफल माने जायेंगे जिसमें अल्लाह ने उन्हें इरादे तथा पसंद की स्वाधीनता दे रखी है।

[3]अर्थात मेरी इबादत तथा आज्ञापालन से मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि यह मुझे कमाकर खिलायें, जैसाकि दूसरे स्वामियों का होता है, अपितु जीविका के सभी कोष तो मेरे ही पास हैं, मेरी इबादत तथा आज्ञापालन से तो स्वयं उन्हीं का लाभ होगा।

أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾

भाग मिलेगा[1] अत: वे मुझसे शीघ्र न माँगें ।[2]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

(६०) तो ख़राबी है नास्तिकों को उनके उस दिन की जिसका वह वचन दिये जाते हैं ।

سُورَةُ الطُّورِ

सूरतु तूर-५२

सूर: तूर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्चास आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

وَالطُّورِ ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है तूर की ।[3]

وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ﴿٢﴾

(२) तथा लिखी हुई किताब की ।[4]

فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ﴿٣﴾

(३) जो झिल्ली के खुले हुए पृष्ठों में है ।[5]

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾

(४) तथा आबाद घर की ।[6]

---

[1] ذَنُوب (ज़नूब) का अर्थ भरा हुआ डोल है । कूयें से डोल में पानी निकाल कर बाँटा जाता है, इसीलिए यहाँ डोल को भाग के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है । अभिप्राय यह है कि अत्याचारियों को यातना से भाग मिलेगा, जैसे इससे पहले कुफ़्र तथा शिर्क करने वालों को उनकी यातना का भाग मिला था ।

[2] किन्तु यह यातना का भाग उन्हें कब पहुँचेगा, यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है । इसलिए प्रकोप की माँग में शीघ्रता न करें ।

[3] तूर वह पर्वत है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) से अल्लाह ने बात की । उसे तूर सीना भी कहा जाता है । अल्लाह ने उसके इसी महत्व के कारण उसकी शपथ ली है ।

[4] مَسْطُور (मस्तूर) का अर्थ है लिखित वस्तु, इसके विभिन्न चरितार्थ वर्णन किये गये हैं । क़ुरआन मजीद, लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) सभी अवतरित किताबें अर्थात लोगों के कर्म जो फ़रिश्ते लिखते हैं ।

[5] यह مَسْطُور से संबंधित है । رَقّ (रक्क) वह पतली खाल जिस पर लिखा जाता था । مَنْشُور (मंशूर) का अर्थ है फैलाया तथा खुला हुआ ।

[6] यह بيت معمور (बैते मअमूर) सातवें आकाश पर वह वंदना गृह है जिसमें फ़रिश्ते इबादत करते हैं । यह वन्दना गृह फ़रिश्तों से इस प्रकार भरा रहता है कि प्रतिदिन सत्तर

(५) तथा ऊँची छत की ।[1]

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٥ۙ

(६) तथा भड़काए हुए सागर की ।[2]

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٦ۙ

(७) निःसंदेह आपके प्रभु का प्रकोप होकर रहने वाला है ।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧ۙ

(८) उसे कोई रोकने वाला नहीं ।[3]

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٨ۙ

(९) जिस दिन आकाश थरथराने लगेगा ।[4]

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝٩ۙ

हज़ार फ़रिश्ते इबादत के लिए आते हैं, जिनकी फिर प्रलय तक दोबारा बारी नहीं आयेगी, जैसाकि मेराज की हदीसों में वर्णन किया गया है। कुछ ने बैते मअमूर से ख़ानये काबा अभिप्राय लिया है जो उपासना के लिए आने वाले मनुष्यों से प्रत्येक समय भरा रहता है। मअमूर का अर्थ है आबाद तथा भरा हुआ।

[1]इससे अभिप्राय आकाश है जो धरती के लिए छत के समान है। क़ुरआन ने उसे दूसरे स्थान पर 'सुरक्षित छत' कहा है। ﴿وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ﴾ (*अल-अम्बिया*-३२) कुछ ने इससे अर्श तात्पर्य लिया है जो सभी उत्पत्तियों के लिए छत है।

[2] مسجور (मस्जूर) का अर्थ है भड़का हुआ। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय वह पानी है जो अर्श के नीचे है जिससे क़यामत (प्रलय) के दिन वर्षा होगी। उससे मृत शरीर जीवित हो जायेंगे। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय सागर हैं, उनमें क़यामत के दिन आग भड़क उठेगी, जैसाकि फ़रमाया :

﴿وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ﴾

"तथा जब सागर भड़का दिये जायेंगे" (*अत्तकवीर*-६)

इमाम शौकानी ने इसी भावार्थ को उत्तम माना है। कुछ ने मस्जूर का अर्थ भरा हुआ लिया है। इमाम तबरी ने इसी कथन को लिया है। इसके और भी कई अर्थ वर्णन किये गये हैं। (देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]यह उपरोक्त सौगंधों का उत्तर है। अर्थात यह सभी वस्तुऐं अल्लाह की महाशक्ति का प्रदर्शन हैं, इस बात का प्रमाण हैं कि अल्लाह का वह प्रकोप भी निश्चय होकर रहेगा जिसका उसने वादा किया है। उसे टालने पर कोई समर्थ न होगा।

[4] مــور (मौर) का अर्थ है गति तथा उथल-पुथल क़यामत के दिन आकाश के प्रबंध में जो उथल-पुथल तथा तारों की टूट-फूट के कारण जो बिखराव पैदा होगा, उसको इन शब्दों से व्यंजित किया गया है, तथा यह उपरोक्त यातना के लिए समय है। अर्थात यह प्रकोप उस दिन होगा जब आकाश थरथरायेगा तथा पर्वत अपने स्थान छोड़कर रूई के गालों के समान तथा रेत के कणों की भाँति उड़ जायेंगे।

وَّ تَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

(१०) तथा पर्वत चलने-फिरने लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

(११) उस दिन झुठलाने वालों की (पूर्ण) ख़राबी है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٢

(१२) जो अपनी अनायास बातों में उछल-कूद कर रहे हैं।[1]

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣

(१३) जिस दिन वे धक्के दे-देकर[2] नरक की आग की ओर लाये जायेंगे।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٤

(१४) यही (नरक की) वह अग्नि है जिसे तुम झूठ कहते थे।[3]

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝١٥

(१५) (अब बताओ) क्या यह जादू है?[4] अथवा तुम देखते ही नहीं हो।[5]

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٦

(१६) इसमें जाओ, (नरक में) अब तुम्हारा धैर्य रखना तथा न रखना तुम्हारे लिए समान है। तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायेगा।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۝١٧

(१७) नि:संदेह सदाचारी लोग स्वर्ग में तथा सुखों में हैं।[6]

---

[1]अर्थात अपने कुफ्र तथा असत्य में लीन तथा सत्य को झुठलाने और उपहास में लगे हुए हैं।

[2]اَلدَّعُّ (अद्दअ) का अर्थ है बड़ी कड़ाई के साथ ढकेलना।

[3]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्ते (ज़बानिय:) उन्हें कहेंगे।

[4]जैसे तुम दुनिया में पैग़म्बरों को जादूगर कहा करते थे, बतलाओ क्या यह भी जादू का कोई काम है?

[5]अथवा जिस प्रकार तुम दुनिया में सत्य के दर्शन से अंधे थे, यह दण्ड भी तुम्हें नहीं सूझ रहा है? यह डाँट-फटकार के लिये उन्हें कहा जायेगा, अन्यथा प्रत्येक वस्तु उनके दर्शन में आ चुकी होगी।

[6]काफ़िरों तथा हतभागों के बाद ईमानवालों तथा भाग्यशालियों की चर्चा की जा रही है।

فَٰكِهِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَىٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

(१८) उन्हें जो उनके प्रभु ने प्रदान कर रखी हैं, उस पर प्रसन्न हैं ।[1] तथा उन्हें उनके प्रभु ने नरक की यातना से भी बचा लिया है ।

كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तुम मजे से ख़ाते-पीते रहो उन कर्मों के बदले जो तुम करते थे ।[2]

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

(२०) समतल बिछे हुए सुन्दर तख़्त पर तकिये लगाये हुए ।[3] तथा हमने उनके विवाह बड़े-बड़े नयनों वाली हूरों से कर दिये हैं ।

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَىْءٍ ۚ كُلُّ ٱمْرِئٍۭ

(२१) तथा जो लोग ईमान लाये तथा उनकी संतान ने भी ईमान में उनका अनुगमन किया हम उनकी सन्तान को उन तक पहुँचा देंगे तथा उनके कर्मों से हम कुछ कम न करेंगे ।[4]

---

[1]अर्थात स्वर्ग के घर, खाने, वस्त्र, सवारियाँ, सुंदर पत्नियाँ तथा अन्य सुखों, उन सब पर वह आनंदित होंगे, क्योंकि यह वरदान दुनिया के सुखों से अत्याधिक बढ़कर होंगे तथा مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ का चरितार्थ ।

[2]दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى ٱلْأَيَّامِ ٱلْخَالِيَةِ﴾ (अल-हाक्क:-२४) इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह की दया प्राप्त करने के लिए ईमान के साथ सत्कर्म अति आवश्यक है ।

[3]مَصْفُوفَةٍ (मस्फ़ूफ़:) एक-दूसरे से मिले हुए, जैसेकि वह पंक्तिबद्ध हैं । अथवा कुछ ने उसका भावार्थ वर्णन किया है कि वह परस्पर सम्मुख होंगे, जैसे रण क्षेत्र में सेनायें सम्मुख होती हैं । इस भाव को क़ुरआन के अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ﴾

"एक-दूसरे के सम्मुख आसनों पर आसीन होंगे ।" (*अस्साफ़्फ़ात-४४*)

[4]अर्थात जिनके पिता अपनी स्वच्छता, सदाचार तथा सत्कर्म के कारण स्वर्ग की उच्च श्रेणियों में पदासीन होंगे, अल्लाह तआला उनकी ईमानदार संतान के भी पद उँचे करके उन्हें उनके पिताओं के साथ मिला देगा । यह नहीं करेगा कि उनके बापों के पद घटा कर उनकी संतान की नीची श्रेणियों में उनको लाये । अर्थात ईमानवालों पर दुहरा अनुग्रह फ़रमायेगा । एक तो यह कि पिता तथा पुत्रों का परस्पर मिलन करा देगा ताकि

بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝٢١

प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्मों का गिरवी है ।[1]

وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝٢٢

(२२) हम उनके लिए मेवे तथा रूचिकर मांस का प्राचुर्य कर देंगे ।[2]

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا

(२३)(प्रसन्नता के साथ) वे एक-दूसरे से (शराब के) प्याले की छीना-झपटी करेंगे,[3] जिस शराब

उनके नयन ठण्डे हों, दूसरा यह कि नीचे पदों वालों को उठाकर उच्च पदों पर आसीन कर देगा। अन्यथा दोनों के मिलन का यह भी तरीका हो सकता है कि प्रथम श्रेणी वालों को द्वितीय श्रेणी प्रदान कर दे। यह बात चूंकि उसके कृपा तथा उपकार के विपरीत होगी, इसलिए वह ऐसा नहीं करेगा, अपितु द्वितीय श्रेणी वालों को प्रथम श्रेणी प्रदान करेगा । यह तो अल्लाह का वह उपकार है जो संतान पर पिताओं के सत्कर्मों की बरकत (शुभ) से होगा। हदीस में आता है कि संतान की दुआ तथा इस्तिग़फ़ार (प्रार्थना तथा क्षमा-याचना) से बापों के दर्जे भी बढ़ते हैं। जब एक व्यक्ति का पद स्वर्ग में ऊंचा होता है तो वह पूछता है कि हे अल्लाह इसका कारण क्या है ? अल्लाह फ़रमाता है, "इसका कारण तेरी संतान की तेरे लिए क्षमा-याचना की प्रार्थना है ।" (मुसनद अहमद २\५०९) इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें आता है कि इंसान मर जाता है तो उसके कर्म का क्रम भी समाप्त हो जाता है, परन्तु तीन चीज़ों का पुण्य मृत्यु के पश्चात भी चालू रहता है, एक सदक़ये जारिया (जारी रहने वाला दान), दूसरा वह ज्ञान जिससे लोग लाभान्वित होते हैं, तीसरी नेक औलाद (सदाचारी संतान) जो उसके लिए प्रार्थना करती हो। (मुस्लिम, किताबुल वसीयः, बाबु मा यलहकुल इंसान मिनस सवाबे बाद वफ़ातेही)

[1] رَهِينٌ (रहीन) مَرْهُون (मर्हून) (बंधक) के अर्थ में है, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का बंधक होगा । यह मोमिन तथा काफ़िर दोनों के लिए सामान्य है तथा अर्थ यह है कि जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। अथवा इससे अभिप्राय केवल काफ़िर हैं कि वह अपने दुष्कर्म में फँस जायेंगे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۞ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴾

"प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों में गिरफ्तार होगा सिवाय दायें हाथ वालों (ईमानवालों) के ।" *(अल-मुद्दस्सिर-३८,३९)*

[2] أمددناهم यह زدناهم के अर्थ में है, अर्थात अत्याधिक देंगे ।

[3] يتنازعون- يتعاطون و يتناولون एक-दूसरे से लेंगे। अथवा वह अर्थ है जो अनुवाद में है । كأس (कास) उस प्याले तथा जाम को कहते हैं जो मदिरा अथवा अन्य किसी पेय पदार्थ से भरा हुआ हो। ख़ाली वर्तन को कास नही कहते। (फ़तहुल क़दीर)

وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

के आनन्द में न अपशब्द निकलेंगे तथा न पाप होगा ।[1]

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उनके चारों ओर सेवा के लिए (सेवक) बालक चल-फिर रहे होंगे, जैसेकि वे मोती थे जो छिपाकर रखे थे ।[2]

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा आपस में एक-दूसरे की ओर मुख करके प्रश्न करेंगे ।[3]

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

(२६) कहेंगे कि इससे पूर्व हम अपने घर वालों में बहुत डरा करते थे ।[4]

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

(२७) तो अल्लाह (तआला) ने हम पर बड़ा उपकार किया तथा हमें तेज़ गर्म हवाओं के प्रकोप से बचा लिया ।[5]

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

(२८) हम इसके पूर्व ही उसकी इबादत किया करते थे,[6] निःसंदेह वह अत्यन्त परोपकारी एवं अत्यन्त दयालु है ।

---

[1]उस मदिरा में सांसारिक मदिरा का प्रभाव नहीं होगा । उसे पीकर न कोई बहकेगा कि अपशब्द कहे, न इतना बेसुध होगा कि पाप करे ।

[2]अर्थात स्वर्गवासियों की सेवा के लिए उसे नवयुवक सेवक भी दिये जायेंगे जो उनकी सेवा के लिए फिर रहे होंगे । सुंदरता एवं शोभा तथा स्वच्छता एवं सफाई में वह ऐसे होंगे जैसे मोती, जिसे ढंक रखा गया हो ताकि हाथ लगने से उसकी चमक-दमक मांद न पड़े ।

[3]एक-दूसरे से सांसारिक समाचार पूछेंगे कि संसार में किस दशा में जीवन यापन करते रहे तथा ईमान एवं कर्म की मांगें कैसे पूरी करते रहे ।

[4]अर्थात अल्लाह की यातना से । इसलिए अल्लाह के उस दण्ड से बचने का प्रबंध भी करते रहे, इसलिए कि इंसान को जिस चीज़ का भय होता है उससे बचने के लिए वह दौड़ धूप भी करता है ।

[5]سَمُوم (समूम) लू, झुलसाने वाली गर्म हवा को कहते हैं । नरक के नामों में से एक नाम भी है।

[6]अर्थात केवल उसी एक की वंदना (इबादत) करते थे, उसके साथ किसी को साझी नहीं करते थे । अथवा यह अर्थ है कि उसी से नरक की यातना से बचने की प्रार्थना करते थे ।

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

(२९) तो आप समझाते रहें, क्योंकि आप अपने प्रभु की कृपा से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं न दीवाना ।[1]

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِۦ رَيْبَ ٱلْمَنُونِ ﴿٣٠﴾

(३०) क्या (काफ़िर) इस प्रकार कहते हैं कि यह कवि है, हम उस पर कालचक्र (अर्थात मृत्यु) की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।[2]

قُلْ تَرَبَّصُوا۟ فَإِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

(३१) (आप) कह दीजिए कि तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ ।[3]

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَٰمُهُم بِهَٰذَآ ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) क्या उनकी बुद्धियाँ उन्हें यही सिखाती हैं ?[4] अथवा ये लोग ही उद्दण्ड हैं ।[5]

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या ये कहते हैं कि इस (नबी) ने (क़ुरआन) स्वयं गढ़ लिया है, वास्तविकता यह है कि वे ईमान नहीं लाते ।[6]

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आप शिक्षा-दिक्षा तथा उपदेश का काम करते रहें तथा यह आप के विषय में जो कुछ कहते रहते हैं, उसकी ओर कान न धरें, इसलिए कि आप अल्लाह की कृपा से न काहिन हैं न उन्मादी (जैसाकि यह कहते हैं) अपितु आप पर हमारी ओर से प्रकाशना आती है, जो काहिन पर नहीं आती, आप जो कथन सुनाते हैं वह बुद्धि एवं ज्ञान का दर्पण होता है, एक उन्मादी से ऐसी बातें क्योंकर संभव हैं ?

[2]رَيْب (रैब) का अर्थ है कालचक्र, مَنُون (मनून) मौत के नामों में से एक नाम है। अभिप्राय यह है कि मक्का के क़ुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि कालचक्र से संभवतः इस (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मौत आ जाये तथा हमें चैन मिल जाये, जो इसकी तौहीद (अद्वैत) की निमन्त्रण ने हमसे छीन लिया है।

[3]अर्थात देखो कि मौत किसे पहले आती है तथा विनाश किसका भाग्य बनता है ?

[4]अर्थात आपके विषय में जो यह इस प्रकार अनाप-शनाप मिथ्या एवं अशुद्ध बातें करते रहते हैं, क्या उनकी बुद्धियाँ उन्हें यही समझाती हैं ?

[5]नहीं अपितु यह उद्दण्ड तथा पथभ्रष्ट लोग हैं, तथा यही उद्दण्डता एवं पथभ्रष्टता उन्हें इन बातों पर उभार रही हैं।

[6]अर्थात क़ुरआन गढ़ने के आरोप पर उकसाने वाला भी उनका कुफ़्र ही है।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۝٣٤

(३४) अच्छा, यदि यह सच्चे हैं तो भला इस जैसी एक (ही) बात यह (भी) तो ले आयें ।[1]

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۝٣٥

(३५) क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के स्वयं ही पैदा हो गये हैं ?[2] अथवा ये स्वयं पैदा करने वाले हैं ?[3]

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝٣٦

(३६) क्या उन्होंने ने ही आकाशों तथा धरती को पैदा किया है ? बल्कि ये विश्वास न करने वाले लोग हैं ।[4]

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ۝٣٧

(३७) अथवा क्या इनके पास तेरे प्रभु के कोषागार हैं ? [5] अथवा (उन कोषागारों के) ये रक्षक हैं ।[6]

---

[1]अर्थात यदि यह अपने दावे में सच्चे हैं कि यह कुरआन मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सवयं गढ़ लिया है तो फिर यह भी इस जैसी किताब बनाकर प्रस्तुत कर दें, जो वाक्य-क्रम, चमत्कार एवं प्रभाव, विचित्र भाषा-शैली, तथ्यों की नियति तथा समस्याओं के समाधान में इसका मुकाबला कर सके ।

[2]अर्थात यदि वास्तव में ऐसा है तो फिर किसी को यह अधिकार नहीं कि उन्हें किसी बात का आदेश दे अथवा रोके । किन्तु जब ऐसा नहीं है, अपितु उन्हें एक स्रष्टा ने पैदा किया है, तो स्पष्ट है कि उसका उन्हें पैदा करने का एक विशेष उद्देश्य है, वह उन्हें पैदा करके यूँ ही कैसे छोड़ देगा ?

[3]अर्थात यह स्वयं भी अपने रचयिता नहीं हैं, बल्कि यह अल्लाह के रचयिता होने को स्वीकार करते हैं ।

[4]बल्कि अल्लाह के धमकियों तथा वादों के बारे में संदेह में हैं ।

[5]कि जिसे ये चाहें जीविका प्रदान करें तथा जिसे चाहें रोक दें, अथवा जिसे चाहें नुबूवत (ईशदूतत्व) प्रदान करें ।

[6] مُصَيْطِرٌ अथवा مُسَيْطِرٌ (मुसैतिर), سَطْرٌ (सतर) से बना है, लेखक जो रक्षक तथा निरीक्षक हो । वह चूँकि पूरा विवरण लिखता है, इसलिए यह संरक्षक एवं निरीक्षक के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । अर्थात क्या अल्लाह के कोषों अथवा उसकी कृपाओं पर उनका अधिकार है कि जिसे चाहें दें अथवा न दें ।

(३८)अथवा क्या इनके पास कोई सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सुनते हैं ?[1] (यदि ऐसा है) तो उनका सुनने वाला कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करे।	أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾
(३९) क्या अल्लाह की तो सब पुत्रियाँ हैं तथा तुम्हारे लिए पुत्र हैं ?	أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾
(४०) क्या तू इनसे कोई पारिश्रमिक माँगता है कि ये उसके बोझ से दबे जा रहे हैं ?[2]	أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾
(४१) क्या इनके पास परोक्ष का ज्ञान है जिसे ये लिख लेते हैं ?[3]	أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾
(४२) क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं ?[4] तो (विश्वास कर लें) कि छल करने वाला गुट काफ़िरों का है।[5]	أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾
(४३) क्या अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई अन्य ईष्टदेव (उपास्य) है? (कदापि नहीं) अल्लाह (तआला) उनके शिर्क से (शुद्ध) एवं पवित्र है।	أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

---

[1]अर्थात क्या यह उनका दावा है कि सीढ़ी द्वारा यह भी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान आकाशों पर जाकर फ़रिश्तों की बातें अथवा उनकी ओर जो प्रकाशना की जाती है, वह सुन आये हैं।

[2]अर्थात उसे अदा करना उनके लिए कठिन हो।

[3]कि अवश्य उनसे पहले मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम मर जायेंगे तथा उनकी मौत उसके बाद आयेगी।

[4]अर्थात हमारे पैगम्बर के साथ, जिससे उसका विनाश हो जाये।

[5]अर्थात चाल उन्हीं पर पलट जायेगी तथा सब हानि उन्हीं को होगी, जैसे फ़रमाया :

﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ﴾

"तथा बुरी चालों का संकट उन चाल वालों ही पर पड़ता है।" (फ़ातिर-४३)

जैसाकि बद्र के रण में यह काफ़िर मारे गये तथा अन्य कई स्थानों पर अपमानित हुए।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

(४४) यदि ये लोग आकाश के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें, तब भी कह दें कि यह तह पर तह बादल है ।[1]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तो आप उन्हें छोड़ दें यहां तक कि वे अपने उस दिन से मिल जायें जिसमें ये अचेत कर दिये जायेंगे ।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) जिस दिन उन्हें उनकी चाल कुछ काम न आयेगी तथा न वे सहायता किये जायेंगे ।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) निःसंदेह अत्याचारियों के लिए इसके अतिरिक्त अन्य यातनायें भी हैं,[2] परन्तु उन लोगों में से अधिकतर लोग अंजान हैं ।[3]

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

(४८) तू अपने प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा में धैर्य से काम ले, निःसंदेह तू हमारी आँखों के सामने है । प्रातःकाल जब तू उठ[4] अपने प्रभु

---

[1]अभिप्राय यह है कि अपने कुफ़्र तथा उदण्डता से फिर भी नहीं रुकेंगे, अपितु ढीठाई का प्रदर्शन करते हुए कहेंगे कि यह प्रकोप नहीं बल्कि एक पर एक बादल चढ़ा आ रहा है । जैसाकि कुछ अवसरों पर ऐसा होता है ।

[2]अर्थात संसार में, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾

"अवश्य हम उन्हें निकट की कुछ छोटी-सी यातना इस बड़ी यातना के अतिरिक्त चखायेंगे ताकि वे लौट आयें ।" (*अलिफ़॰लाम॰मीम अस्सजदः-२१*)

[3]इस बात से कि यह सांसारिक प्रकोप तथा आपदा इसलिए हैं कि मानव अल्लाह की ओर ध्यान दें । यह बात वह नहीं समझते, इसलिए पापों से क्षमा नहीं माँगते । अपितु कई बार पहले से भी अधिक पापों में लीन हो जाते हैं । जैसे एक हदीस में फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ जब रोगी होकर स्वस्थ हो जाता है तो उसकी मिसाल ऊंट की-सी होती है । वह नहीं जानता कि उसे रस्सियों से क्यूं बांधा गया तथा फिर क्यूं खुला छोड़ा गया ? (सुनन अबू दाऊद, किताबुल जनायज़ न॰ ३०८९)

[4]इस खड़े होने से कौन-सा खड़ा होना अभिप्राय है ? कुछ कहते हैं कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों, जैसाकि नमाज़ के आरम्भ में «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ» पढ़ी

की पवित्रता तथा प्रशंसा का वर्णन कर।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

(४९) तथा रात्रि को भी उसका जप[1] कर तथा तारों के डूबते समय भी।[2]

सूरतुन नज्म-५३

سُوْرَةُ النَّجْمِ

सूर: नज्म* मक्का में अवतरित हुई, इसमें बासठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

जाती है। कुछ कहते हैं कि जब जागकर खड़े हों। उस समय भी अल्लाह की तस्वीह महिमागान तथा प्रशंसा मस्नून (उचित) है। कुछ कहते हैं कि जब किसी बैठक (सभा) से खड़े हों जैसे हदीस में आता है। जो व्यक्ति किसी बैठक से उठते समय यह दुआ पढ़ लेगा तो उसके बैठक के पापों का प्रायश्चित हो जायेगा।

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ ! وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

(तिर्मिज़ी बावु मा यक़ूलु इज़ा क़ाम मिन मज्लिसिही)

[1]इससे अभिप्राय क्यामुल्लैल, अर्थात तहज्जुद की नमाज़ है, जो आजीवन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नियम रहा।

[2] أي: وقـت إدبارهـا من آخر الليـل (रात के ढ़लने के समय रात के अन्तिम भाग में)। इससे अभिप्राय फ़ज्र की दो रकअत सुन्नतें हैं। ऐच्छिक नमाज़ों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसका अत्याधिक ध्यान रखते थे। तथा एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फ़ज्र की दो (रकअत) सुन्नतें दुनिया तथा उसकी प्रत्येक चीज़ से उत्तम है (सहीह बुख़ारी, कितावुत तहज्जुद, बावु तआहुदे रकअतयिल फ़ज्र व मन सम्माहुमा ततौउअन व मुस्लिम कितावुस् सलाति, बावु इस्तिहबावे रकअतयिल फ़ज्र)

*यह प्रथम सूर: है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरे काफ़िरों के जन-समूह में सुनाया। इस के पश्चात जितने लोग आप के पीछे थे सब ने सजदा किया सिवाये उमय्या विन सिलफ़ के, उस ने अपनी मुट्ठी में मिट्टी ले कर उस पर सजदा किया। अन्तत: वह कुफ़्र ही की दशा में मारा गया। (सहीह बुख़ारी, व्याख्या सूर: नज्म) आदरणीय ज़ैद विन सावित कहते हैं कि मैंने इस सूरह का पाठ आपके सामने किया तो आपने इसमें सजदा नहीं किया। (सहीह बुख़ारी, उपरोक्त बाव) इसका अभिप्राय यह हुआ कि सजदा करना मुस्तहव (अच्छा) है, अनिवार्य नहीं। कभी छोड़ भी दिया जाये तो जायज़ (उचित) है।

(१) सौगन्ध है सितारे की जब वे गिरे ।[1]

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ①

(२) कि तुम्हारे साथी ने न मार्ग खोया है न वह टेढ़े मार्ग पर है ।[2]

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ②

(३) तथा न वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं ।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ③

(४) वह तो केवल प्रकाशना (आकाशवाणी) है जो अवतरित की जाती है ।[3]

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ④

(५) उसे पूर्ण शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है ।

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ⑤

(६) जो शक्तिशाली है,[4] फिर वह सीधा खड़ा हो गया ।

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ⑥

---

[1]कुछ भाष्यकारों ने तारा से सुरय्या (कृतिका नक्षत्र) अभिप्राय लिया है तथा कुछ ने जोहरा तारा लिया है, तथा कुछ ने साधारण तारा लिया है । هَوَىٰ (हवा) ऊपर से नीचे गिरना, अर्थात जब रात्रि के अन्त में फ़ज्र के समय वह गिरता है, अथवा शैतानों को मारने के लिए गिरता है, अथवा कुछ के अनुसार प्रलय के दिन गिरेंगे ।

[2]यह सौगन्ध का उत्तर है । صَاحِبُكُم (तुम्हारा साथी) कहकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता को स्पष्ट किया गया है कि नबूअत (दूतत्व) से पहले उसने चालीस वर्ष तुम्हारे बीच गुजारे हैं । उसके रात-दिन के सभी कर्म तुम्हारे सामने हैं । उसका स्वभाव तथा कर्म तुम्हारा जाना पहचाना है । सच्चाई तथा अमानतदारी के सिवा उसके आचरण में तुम ने कुछ और भी देखा है ? अब चालीस वर्ष बाद जो वह नबूअत का दावा करता है तो तनिक सोचो कि वह किस प्रकार झूठ हो सकता है ? वास्तव में न वह पथभ्रष्ट हुआ है न बहका है । अल्लाह ने दोनों प्रकार की गुमराहियों से अपने पैग़म्बर की पवित्रता वर्णन की है ।

[3]वह कुमार्ग तथा बहक कैसे सकता है ? वह तो अल्लाह की प्रकाशना के बिना मुँह ही नहीं खोलता, यहाँ तक कि हँसी, दिल्लगी के समय भी आप के मुख से सत्य के सिवा कुछ न निकलता था । (तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर्र, बाबु माजाअ फ़िल मजाहे) इसी प्रकार क्रोध की स्थिति में भी आपको अपनी मनोभावना पर इतना नियंत्रण था कि आप के मुख से कोई बात यथार्थ के विपरीत न निकलती । (अबू दाऊद, किताबुल इल्म, बाबुन फ़ि किताबिल इल्मे)

[4]इससे अभिप्राय जिब्रील फ़रिश्ता है जो बलवान तथा अत्याधिक शक्तिशाली है । पैग़म्बर पर प्रकाशना लाने तथा उसे शिक्षा देने वाला यही फ़रिश्ता है ।

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ۞

(७) तथा वह उच्च आकाश के किनारों (क्षितिज) पर था ।[1]

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۞

(८) फिर निकट हुआ तथा उतर आया ।[2]

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى ۞

(९) तो वह दो कमान के बराबर दूरी पर रह गया, बल्कि उससे भी कम ।[3]

فَأَوْحٰى إِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى ۞

(१०) तो उसने अल्लाह के भक्त को संदेश पहुँचाया[4] जो भी पहुँचाया ।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأٰى ۞

(११) हृदय ने झूठ नहीं कहा जिसे (संदेष्टा ने) देखा ।[5]

---

[1]अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम, अर्थात प्रकाशना (वह्यी) सिखाने के पश्चात आकाश के किनारों पर जा खड़े हुए ।

[2]अर्थात फिर धरती पर उतरे तथा धीरे-धीरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समीप पहुँचे ।

[3]कुछ ने अनुवाद किया है, दो हाथों के बराबर । यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा जिब्रील अलैहिस्सलाम की परस्पर समीपता का वर्णन है । अल्लाह तआला तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निकटता का वर्णन नहीं, जैसाकि कुछ लोग विश्वास दिलाते हैं । आयत के पूर्व क्रम से पूर्णरूप से स्पष्ट है कि इसमें मात्र जिब्रील तथा पैग़म्बर की चर्चा है । इसी निकटता के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को उनके मूल रूप में देखा । तथा यह नबी होने के आरम्भिक युग की घटना है जिसकी चर्चा इन आयतों में की गई । दूसरी बार मूल रूप में मेराज (आकाश-भ्रमण) की रात में देखा ।

[4]अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए जो प्रकाशना अथवा संदेश लेकर आये थे, वह उन्होंने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक पहुँचाया ।

[5]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को वास्तविक रूप में देखा कि उनके छः सौ पंख हैं । एक पंख पश्चिम तथा पूर्व के बीच दूरी के बराबर था इसको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल ने झुठलाया नहीं, अपितु अल्लाह की इस महानशक्ति को स्वीकार किया ।

(१२) क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो (पैग़म्बर-संदेष्टा) देखते हैं। — أَفَتُمَٰرُونَهُۥ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿١٢﴾

(१३) उसे तो एक बार और भी देखा था। — وَلَقَدْ رَءَاهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ﴿١٣﴾

(१४) सिदरतुल मुन्तहा के निकट।[1] — عِندَ سِدْرَةِ ٱلْمُنتَهَىٰ ﴿١٤﴾

(१५) उसी के निकट जन्नतुल मावा है।[2] — عِندَهَا جَنَّةُ ٱلْمَأْوَىٰٓ ﴿١٥﴾

(१६) जबकि सिदरह को छिपाये लेती थी वह वस्तु जो उस पर छा रही थी।[3] — إِذْ يَغْشَى ٱلسِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿١٦﴾

(१७) न तो दृष्टि बहकी, न सीमा से बढ़ी।[4] — مَا زَاغَ ٱلْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿١٧﴾

(१८) निश्चय उसने पने प्रभु की बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ देख लीं।[5] — لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ ءَايَٰتِ رَبِّهِ ٱلْكُبْرَىٰٓ ﴿١٨﴾

---

[1]यह मेराज की रात में जब जिब्रील को वास्तविक रूप में देखा, उसका वर्णन है। यह सिद्रतुल मुन्तहा एक बैरी का वृक्ष है, जो छठें या सातवें आकाश पर है तथा यह अंतिम सीमा है। उससे ऊपर कोई फ़रिश्ता नहीं जा सकता। फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश भी यहीं से प्राप्त करते हैं।

[2]इसे "जन्नतुल मावा" इसलिए कहते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम का आवास तथा निवास यही था। कुछ कहते हैं कि आत्मायें यहीं आकर एकत्र होती हैं।

[3]यह सिद्रतुल मुंतहा की उस स्थिति का वर्णन है जब मेराज की रात आपने उसे देखा। सोने के पतंगे उसके आसपास मंडला रहे थे फ़रिश्तों का प्रतिबिम्ब उस पर पड़ रहा था, तथा प्रभु के प्रतापों का प्रदर्शन भी वही था। (इब्ने कसीर आदि) इसी स्थान पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन वरदानों से सम्मानित किया गया। पांच समय की नमाज़ें, सूरः बक़रः की अंतिम आयतें, तथा उस मुसलमान की क्षमा का वादा जो शिर्क के दोषों से पवित्र होगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु ज़िक्रे सिदरतिल मुंतहा)

[4]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहें दायें-बायें हुई न उस सीमा से उच्च तथा पार हुई जो आपके लिए निर्धारित की गई थी। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[5]जिनमें जिब्रील अलैहिस्सलाम तथा सिद्रतुल मुंतहा का देखना तथा अन्य प्राकृति के प्रतीकों का दर्शन है जिसका कुछ विवरण मेराज की हदीसों में वर्णित है।

أَفَرَءَيۡتُمُ ٱللَّٰتَ وَٱلۡعُزَّىٰ ١٩

(१९) क्या तुम ने लात तथा उज्जा को देखा।

وَمَنَوٰةَ ٱلثَّالِثَةَ ٱلۡأُخۡرَىٰٓ ٢٠

(२०) तथा तीसरे अन्तिम मनात को।[1]

---

[1]यह मुशरेकीन (बहुदेववादियों) को फटकारने के लिए कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह है जिसने जिब्रील अलैहिस्सलाम जैसे महान फ़रिश्तों को पैदा किया। मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसे उसके संदेशवाहक (रसूल) हैं, जिन्हें उसने आकाशों पर बुलाकर अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों का दर्शन भी कराया तथा उन पर प्रकाशना भी उतारता है। क्या तुम जिन पूज्यों की उपासना करते हो उनमें भी यह अथवा इस प्रकार के गुण हैं ? इस संदर्भ में अरब के तीन मुख्य देवताओं के नाम उदाहरणार्थ लिये। 'लात' कुछ के निकट यह शब्द अल्लाह के नाम से लिया गया है। कुछ के विचार से 'लात' 'यलीत' से है, जिसका अर्थ मोड़ना है। पुजारी उसकी ओर अपनी गरदनें मोड़ते तथा उसकी परिक्रमा करते थे, इसलिए यह नाम पड़ गया। कुछ कहते हैं कि लात में 'त' अक्षर संयुक्त है। यह لَتَّ يَلُتُّ से कर्ता संज्ञा है अर्थात (सत्तू घोलने वाला)। यह एक सदाचारी व्यक्ति था, जो हाजियों को घोल-घोल कर सत्तू पिलाया करता था। जब यह मर गया तो लोगों ने उसकी समाधि को पूजास्थल बना लिया, फिर उसकी प्रतिमा तथा मूर्ति बन गई। यह तायेफ़ में बनू सक़ीफ़ का सबसे बड़ा देवता था। عُزّیٰ (उज्जा) कहते हैं कि यह अल्लाह के सगुण नाम عَزِیز (अज़ीज़) से लिया गया है, तथा यह أَعَزّ (अअज़्ज़) का स्त्रिलिंग है عَزِیزَة (अज़ीज़ह) के अर्थ में। कुछ कहते हैं कि यह गतफ़ान में एक वृक्ष था, जिसकी पूजा की जाती थी। कुछ कहते हैं कि यह भूतनी थी जो कुछ वृक्षों में प्रकट होती थी। कुछ कहते हैं कि यह श्वेत पत्थर था जिसे पूजते थे। यह कुरैश तथा बनू कनाना का विशेष देवता था। مَنَاة (मनात) मना, यमनी से है जिसका अर्थ 'बहाना' है। इसकी निकटता प्राप्त करने के लिये लोग उसके पास पशुओं की अत्याधिक बलि दिया करते थे तथा उनका रक्त बहाते थे। यह मक्का तथा मदीना के मध्य एक बुत (देवता) था। (फ़तहुल क़दीर) यह क़ुदैद के सामने मुशल्लल की जगह में था। बनू खुज़ाआ का यह विशेष देवता था। अंधकार (अज्ञान) युग में औस तथा ख़ज़रज के लोग यहीं से एहराम बाँधते थे तथा इस देवता की परिक्रमा भी करते थे। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इसके सिवा विभिन्न क्षेत्रों में मूर्तियाँ फैली हुई थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के पश्चात तथा अन्य अवसरों पर उन बुतों तथा अन्य बुतों (मूर्तियों) का विध्वस्त करा दिया। उन पर बने कलशों एवं भवनों को धराशायी करा दिया। उन वृक्षों को कटवा दिया जिनकी पूजा एवं सम्मान किया जाता था, तथा उन सभी अवशेषों तथा स्मारकों को मिटा दिया जो मूर्तिपूजा की यादगार थे। इस कार्य के लिए आपने आदरणीय ख़ालिद बिन वलीद, आदरणीय अली, आदरणीय अम्र बिन आस तथा जरीर पुत्र अब्दुल्लाह अलबजली आदि (अल्लाह इन सभी से प्रसन्न हो) को, जहाँ-जहाँ यह मूर्तियाँ थीं, भेजा तथा उन्होंने जाकर इन सबको ढाकर अरब द्वीप से शिर्क का नाम मिटा दिया। (इब्ने कसीर) इस्लाम के प्रथम युग के बहुत समय पश्चात एक बार

(२१) क्या तुम्हारे लिए पुत्र तथा उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियाँ हैं ?[1]	اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾
(२२) यह तो अब अत्यन्त अन्याय का विभाजन है ।[2]	تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾
(२३) वास्तव में ये केवल नाम हैं जो तुमने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने उनके रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई प्रमाण नहीं उतारा । ये लोग तो केवल अटकल तथा अपनी मनोकांक्षाओं के पीछे पड़े हुए हैं, तथा नि:संदेह उनके प्रभु की ओर से उनके पास मार्गदर्शन आ चुका है ।	اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾
(२४) क्या प्रत्येक व्यक्ति जो कामना करे उसे सुलभ है ?[3]	اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾
(२५) अल्लाह ही के लिए है यह लोक तथा वह लोक ।[4]	فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

फिर अरब में यह शिर्क के प्रदर्शन सामान्य हो गये थे । जिसके लिये अल्लाह तआला ने शैख़ अब्दुल वहाब को यह प्रोत्साहन दिया कि उन्होंने दरईया के अधिकारी को मिलाकर इन शिर्क के प्रतीकों को निरस्त कर दिया, तथा इसी का नवीनकरण एक बार फिर नज्द तथा हिजाज के शासक सुलतान अब्दुल अज़ीज़ (वर्तमान सऊदी शासकों के पिता तथा इस राज्य के निर्माता) ने किया । सभी पक्की क़ब्रों तथा क़लशों को ढाकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत (विधान) को प्रचलित किया । तथा इस प्रकार (अल्लाह के अनुग्रह) से अब पूरे सऊदी अरब में इस्लामी विधानानुसार न कोई पक्की समाधि है, न क़ब्र और न कोई मज़ार ।

[1]मुशरेकीन मक्का फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे, जैसाकि यह विषय अनेक स्थान पर गुज़र चुका है ।

[2]ضیزی (ज़ीज़ा) सत्य तथा तथ्य से हटी हुई ।

[3]अर्थात यह जो चाहते हैं कि उनके यह देवता उन्हें लाभ पहुँचायें तथा उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करें यह संभव ही नहीं है ।

[4]अर्थात वही होगा जो वह चाहेगा, क्योंकि सब अधिकार उसी के हाथ में है ।

(२६) तथा बहुत से फ़रिश्ते आकाशों में हैं जिनकी सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं दे सकती, परन्तु यह अन्य बात है कि अल्लाह (तआला) अपनी इच्छा से तथा अपनी प्रसन्नता से जिसे चाहे आज्ञा दे दे ।[1]

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾

(२७) निःसंदेह जो लोग आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को देवियों की संज्ञा देते हैं ।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰۤىِٕكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾

(२८) यद्यपि उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल अपने अनुमान के पीछे पड़े हुए हैं तथा निःसंदेह आभास (एवं अनुमान) सत्य के सापेक्ष कुछ काम नहीं देता ।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ۚ ﴿٢٨﴾

(२९) तो आप उससे मुख मोड़ लें जो हमारी याद से मुख मोड़े तथा जिनका उद्देश्य केवल साँसारिक जीवन के अन्य कुछ न हो ।

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۗ ﴿٢٩﴾

(३०) यही उनके ज्ञान की सीमा है । आपका प्रभु उससे भली-भाँति परिचित है जो उसके मार्ग से भटक गया है तथा वही भली-भाँति परिचित है उससे भी जो संमार्ग प्राप्त है ।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾

(३१) तथा अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है,

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ

---

[1]अर्थात फ़रिश्ते जो अल्लाह की निकटतम सृष्टि हैं उनको भी सिफ़ारिश का अधिकार केवल उन्ही लोगों के लिये प्राप्त होगा जिनके लिये अल्लाह पसन्द करेगा । जब यह बात है तो फिर यह पत्थर की मूर्तियाँ कैसे सिफ़ारिश कर सकेंगी जिनसे तुम आशा लगाये बैठे हो? फिर अल्लाह मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिए किसी को सिफ़ारिश करने का अधिकार ही कहाँ देगा जब कि शिर्क उसके यहाँ अक्षम्य है, जिसे वह कदापि क्षमा नहीं करेगा ?

أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ﴿٣١﴾

ताकि वह (अल्लाह तआला) कुकर्मियों को उनके कर्मों का बदला दे तथा सत्कर्मियों को अच्छा बदला प्रदान करे ।[1]

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ

(३२) उन लोगों को जो महापापो से बचते हैं तथा निर्लज्जा से भी[2] सिवाय किसी छोटे से पाप के ।[3] नि:संदेह तेरा प्रभु उदार क्षमाशील

---

[1]अर्थात मार्गददर्शन तथा पथभ्रष्ट करना उसी के हाथ में है। वह जिसे चाहता है मार्ग-दर्शन देता है तथा जिसे चाहता है गुमराही के गडढे में डाल देता है, ताकि सदाचारियों को उनके सत्कर्मों का फल तथा दुराचारियों को उनके कुकर्मों का प्रतिकार दे। ﴿وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ﴾ यह मध्यवर्ती वाक्य है, तथा لِيَجْزِيَ का संबंध विगत कथन से है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]كَبَائِر (कबायेर) كَبِيرَة (कबीरह) का बहुवचन है। महापाप की परिभाषा में मतभेद है। अधिकतर धर्म ज्ञानियों के निकट प्रत्येक वह पाप महापाप है जिस पर नरक की चेतावनी है अथवा जिसके करने पर कड़ी निंदा क़ुरआन तथा हदीस में की गई है, तथा धर्मज्ञानी यह भी कहते हैं कि छोटे पाप भी बार-बार एवं स्थायी रूप से करने से महापाप बन जाते हैं। इसके अलावा इसके अर्थ तथा गुण में मतभेद के समान ही उसकी संख्या में भी बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वानों ने उन्हें पुस्तकों में एकत्र कर दिया है, जैसे ज़हबी की "किताबुल क़बायेर" तथा "अज्-ज़वाजिर" आदि। فَوَاحِش (फ़वाहिश) فَاحِشَة का बहुवचन है, निर्लज्जा पर आधारित कर्म, जैसे व्याभिचार, बाल-मैथुन आदि। कुछ कहते हैं कि जिन पापों पर दण्ड निर्धारित है वह सब फ़वाहिश हैं। आजकल निर्लज्जा के प्रदर्शन बहुत सामान्य बन गये हैं इसलिए निर्लज्जा को सभ्यता समझ लिया गया है, यहाँ तक कि अब मुसलमानों ने भी इस लज्जाहीन सभ्यता को अपना लिया है। जैसाकि घरों में टी॰वी॰, वी॰सी॰आर आदि व्याप्त हैं। नारियों ने न केवल पर्दे को त्याग दिया हैं, बल्कि बन-संवर कर तथा सौन्दर्य एवं शोभा की विज्ञापन बनकर बाहर निकलने को अपना आचरण बना लिया है। मिश्रित शिक्षा, मिश्रित संस्थायें एवं सभायें तथा अन्य बहुत से अवसरों पर नर-नारी का बेधड़क मिश्रण तथा वार्तालाप नित्य दिन बढ़ता ही जा रहा है, जबकि यह सभी फ़वाहिश (निलर्ज्जता) के अन्तर्गत आते हैं। जिनके विषय में यहाँ बतलाया जा रहा है कि उन लोगों को मोक्ष प्राप्त होना है वे महापापों तथा फ़वाहिश से बचते हैं, न कि उनमें लीन होते हैं।

[3]لَمَم (लमम) का शाब्दिक अर्थ है कम तथा छोटा होना। इसी से इसके प्रयोग हैं أَلَمَّ بِالْمَكَان (घर में थोड़ी देर ठहरा), أَلَمَّ بِالطَّعَام (तनिक-सा खाया) इसी प्रकार किसी चीज़ को स्पर्श कर लेना अथवा उसके समीप होना, अथवा कोई काम एक बार अथवा दो बार

وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ﴿٣٢﴾

है, वह तुम्हें भली-भाँति जानता है जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया तथा जबकि तुम अपनी माताओं के गर्भ में भ्रूण थे,[1] तो तुम अपनी पवित्रता स्वयं वर्णन न करो ।[2] वही सदाचारियों को भली-भाँति जानता है ।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या आपने उसे देखा जिसने मुख मोड़ लिया ।

وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾

(३४)तथा बहुत कम दिया एवं हाथ रोक लिया ।[3]

أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या उसे परोक्ष का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है ?[4]

करना, उसे नित्य तथा निरन्तर न करना, अथवा केवल मनोगत होना, यह सभी रूप لَمَمٌ (लमम) कहलाते हैं । (फ़तहुल क़दीर) इसके इस अर्थ तथा प्रयोग के आधार पर इसका अर्थ छोटा पाप किया जाता है, जिसका अभिप्राय है महापाप के आरम्भिक कर्म करना, किन्तु महापाप से बचना अथवा कोई पाप एक-दो बार करना फिर सदा के लिए उसे त्याग देना, अथवा किसी पाप का मन में विचार करना किन्तु व्यवहीक रूप से उसके समीप न जाना, यह सभी छोटे पाप होंगे, जो अल्लाह तआला माहपापों से बचने के कारण क्षमा कर देगा ।

[1] أَجِنَّةٌ (अजिन्नह) جَنِينٌ (जनीन) का बहुवचन है जो भ्रूण गर्भ के बचचे को कहा जाता है, इसलिए कि यह लोगों की आँखों से ओझल होता है ।

[2] अर्थात जब उससे तुम्हारी कोई स्थिति तथा गतिविधि गुप्त नहीं, यहाँ तक कि जब तुम माता के गर्भ में थे जहाँ कोई तुम्हें देखने पर समर्थ नहीं था वहाँ भी वह तुम्हारी प्रत्येक अवस्था से अवगत था, तो स्वयं पवित्र बनने तथा अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने की क्या आवश्यकता है ? अभिप्राय यह है कि ऐसा काम न करो ताकि दिखावे से तुम बचो ।

[3] अर्थात थोड़ा-सा देकर हाथ रोक लिया अथवा तनिक-सा आज्ञापालन किया, फिर पीछे हट गया । أَكْدَىٰ का मूल अर्थ है कि धरती खोदते-खोदते कड़ा पत्थर आ जाये तथा खुदाई संभव न हो, अंततः वह खोदना छोड़ दे । अतः जो किसी को कुछ दे परन्तु पूरा न दे, कोई काम प्रारम्भ करे परन्तु उसे अंत तक न पहुँचाये ।

[4] अर्थात क्या वह देख रहा है कि उसने अल्लाह के मार्ग में व्यय किया तो उसका माल समाप्त हो जायेगा ? नहीं, यह परोक्ष का ज्ञान उसके पास नहीं है । अपितु वह खर्च

(३६) क्या उसे उस बात की सूचना नहीं दी गयी जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के ग्रन्थ में था,

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

(३७) तथा वफ़ादार इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के ग्रन्थ में था ?

وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾

(३८) कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾

(३९) तथा यह कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए केवल वही है जिसका प्रयत्न स्वयं उसने किया।[1]

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

करने से केवल कंजूसी, मायामोह तथा परलोक पर अविश्वास के कारण भाग रहा है तथा अल्लाह की आज्ञापालन न करने के भी यही कारण हैं।

[1]अर्थात जिस प्रकार कोई किसी अन्य के पाप का उत्तरदायी नहीं होगा, इसी प्रकार उसे आख़िरत में फल भी उसी चीज़ का मिलेगा, जिसमें उसने अपना परिश्रम किया होगा। (इस प्रतिकार का सम्बन्ध आख़िरत से है, संसार से नहीं, जैसाकि कुछ कम्युनिष्ट विद्वान इसका यह भावार्थ विश्वस्त कराकर तथा अनुपस्थित जमीनदारी तथा किरायादारी को अवैध बताते हैं)। हाँ, इस आयत से उन विद्वानों का तर्क देना सहीह है जो कहते हैं कि क़ुरआन के पाठ का पुण्य मृत व्यक्तियों को नहीं पहुँचता, इसलिए कि यह उस मृत का कर्म नहीं है, न उसका परिश्रम। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को मृतों के लिए क़ुरआन पढ़ने का कोई प्रोत्साहन दिया न कथन से अथवा संकेत से उसकी ओर मार्गदर्शन किया। ऐसे ही सहाबा केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम से भी यह काम सिद्ध नहीं। यदि यह कर्म पुण्य का कर्म होता तो सहाबा केराम अवश्य उसे अपनाते। तथा इबादत एवं पुण्य कर्म होने के लिए स्पष्ट प्रमाण अनिवार्य है, इसमें विचार तथा अनुमान नहीं चल सकता। हाँ, दुआ-दान का पुण्य मुर्दों को अवश्य पहुँचता है। इस पर सभी विद्वान सहमत हैं, क्योंकि धर्म-विधान से यह प्रमाणित है, तथा जो हदीस मरणोपरान्त तीन कर्मों का क्रम जारी रहने के संदर्भ में आती है तो वह वास्तव में मनुष्य के अपने कर्म हैं, जो किसी न किसी प्रकार से शेष रहते हैं। संतान को स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंसान की अपनी कमाई कहा है। (अन्नसाई, किताबुल बुयूअ, बाबुल हस्से अलल कसब) चालूदान, वक़्फ़ (स्थिरदान) के समान इंसान के अपने ही कर्म हैं।

﴿وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ﴾

"तथा हम लिखते जाते हैं वे कर्म भी जिनको लोग आगे भेजते हैं तथा उनके वे कर्म भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं।" (*यासीन*-१२)

(४०) तथा यह कि निःसंदेह उसका प्रयत्न शीघ्र देखा जायेगा।[1]

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾

(४१) फिर उसे पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾

(४२) तथा यह कि आपके प्रभू ही की ओर पहुँचना है।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

(४३) तथा यह कि वही हँसाता है तथा वही रुलाता है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾

(४४) तथा यह कि वही मारता है तथा वही जीवित करता है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾

(४५) तथा यह कि उसी ने जोड़ा अर्थात नर-मादा पैदा किया है।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ﴿٤٥﴾

(४६) वीर्य से जबकि वह टपकाया जाता है।

مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

(४७) तथा यह कि पुनः जीवित करना उसी का दायित्व है।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾

(४८) तथा यह कि वही धनवान बनाता है तथा धन देता है।[2]

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾

इसी प्रकार वह ज्ञान जिसका उसने लोगों में प्रचार-प्रसार किया तथा लोगों ने उसका अनुगमन किया यह उसका प्रयास तथा कर्म है तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस «مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى، كَانَ لَهُ مِنَ الأَجْرِ مِثْلَ أُجُورِ مَنْ تَبِعَهُ، من غيرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا». (अबू दाऊद किताबुस्सुन्नह, बाबु लुज़ूमिस्सुन्नह) के अनुसार अनुगामियों का फल भी उसे पहुँचता रहेगा। अतः यह हदीस आयत के प्रतिकूल नहीं। (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उसने संसार में अच्छा या बुरा जो कुछ भी किया, गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किया, क़यामत के दिन आगे आ जायेगा तथा उस पर उसे पूरा प्रतिफल दिया जायेगा।

[2]अर्थात किसी को इतना धन देता है कि उसे किसी की आवश्यकता नहीं होती तथा उसकी सभी आवश्यकतायें पूरी हो जाती हैं। किसी को इतना धन दे देता है कि उसके पास आवश्यकता से अधिक बच जाता है तथा उसे एकत्र करके रखता है।

وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۙ﴿۴۹﴾

(४९) तथा यह कि वही शेअ्रा (तारे) का प्रभु है ।[1]

وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَ ا ۨالْاُوْلٰى ۙ﴿۵۰﴾

(५०) तथा यह कि उसी ने प्रथम आद को नष्ट किया है ।[2]

وَثَمُوْدَا۟ فَمَآ اَبْقٰى ۙ﴿۵۱﴾

(५१) तथा समूद को भी (जिनमें से) एक को भी शेष न रखा ।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۭ﴿۵۲﴾

(५२) तथा उससे पूर्व नूह के समुदाय को, नि:संदेह वे अत्यन्त अत्याचारी एवं उद्दण्ड थे ।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ﴿۵۳﴾

(५३) तथा मूतफ़िका (नगर अथवा उल्टी हुई बस्तियों को) उसी ने उलट दिया ।[3]

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿۵۴﴾ۚ

(५४) फिर उस पर छा दिया जो छा दिया ।[4]

فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾

(५५) तो हे मनुष्य ! तू अपने प्रभु के किस-किस उपहार पर झगड़ेगा ?[5]

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾

(५६) यह (नबी) डराने वाले हैं पूर्व के डराने वालों में से ।

---

[1]पालनहार तो वह प्रत्येक वस्तु का है । यहाँ इस तारे का नाम इसलिए लिया है कि अरब के कुछ क़बीले उसकी उपासना करते थे ।

[2]आद जाति को اُولیٰ (प्रथम) इसलिए कहा गया है कि यह समूद जाति से पहले हुई । अथवा इसलिए कि नूह की जाति के बाद सर्वप्रथम यह जाति नष्ट की गई । कुछ कहते हैं कि आद नाम की दो जातियाँ गुजरी हैं, यह प्रथम है जिसे प्रचंड वायु से विध्वस्त किया गया जबकि दूसरी काल चक्रों के साथ विभिन्न नामों से चलती तथा बिखरती शेष रही ।

[3]इससे तात्पर्य आदरणीय लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियाँ हैं, जिनको उनपर उलट दिया गया ।

[4]अर्थात तत्पश्चात उन पर पत्थरों की वर्षा हुई ।

[5]अथवा संदेह करेगा तथा उनको झुठलायेगा, जबकि वह इतना स्पष्ट तथा सामान्य हैं कि उनका इंकार संभव है न उनका छिपाना ही ।

(५७) आने वाली घड़ी निकट आ गयी है। أَزِفَتِ الْآزِفَةُ

(५८) अल्लाह के अतिरिक्त उसका (निर्धारित समय पर खोल) दिखाने वाला अन्य कोई नहीं। لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ

(५९) तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो ?[1] أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ

(६०) तथा हँस रहे हो ? रोते नहीं ? وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ

(६१) (अपितु) तुम खेल रहे हो। وَأَنتُمْ سَامِدُونَ

(६२) अब अल्लाह के समक्ष सज्दे करो (नत्-मस्तक हो जाओ) तथा (उसी की) इबादत करो।[2] فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا

सूरतुल क़मर-५४ سُورَةُ الْقَمَرِ

सूर: क़मर* मक्का में अवतरित हुई, इसमें पचपन आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

---

[1]बात से तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है, अर्थात तुम इससे आश्चर्य करते तथा इसका परिहास करते हो, जबकि इसमें आश्चर्य की बात है न परिहास एवं झुठलाने की।

[2]यह मुशरिकों (बहुदेववादियों) तथा झुठलाने वालों की फटकार के लिए आदेश दिया। अर्थात जब उनकी दशा यह है कि वह पवित्र क़ुरआन को मानने की जगह उसकी अवहेलना तथा उपहास करते हैं तथा हमारे संदेशवाहक की शिक्षा तथा सदुपदेश का उन पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा है तो हे मुसलमानो ! तुम अल्लाह के सदन में झुक कर तथा उसकी उपासना एवं अनुपालन का प्रदर्शन करके पवित्र क़ुरआन के आदर-सम्मान का प्रयोजन करो। अत: इस आज्ञा के अनुपालन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तथा सहाबा ने सजदा किया यहाँ तक कि सभा में उपस्थित काफ़िरों ने भी सजदा किया, जैसाकि हदीस में है।

*यह भी उन सूरतों में से है जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ में पढ़ा करते थे, जैसाकि पहले वर्णन हो चुका।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

(१) क़यामत निकट आ गई[1] तथा चन्द्रमा फट गया ।[2]

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ②

(२) ये यदि कोई चमत्कार देखते हैं तो मुख फेर लेते हैं तथा कह देते हैं कि ये पहले से चला आता हुआ जादू है ।[3]

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ③

(३) उन्होंने झुठलाया तथा अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया तथा प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर ही निर्धारित है ।[4]

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ

(४) नि:संदेह उनके पास वे सूचनायें आ चुकी

---

[1]एक तो उस समय के अनुसार जो व्यतीत हो गया, क्योंकि जो शेष है वह थोड़ा है दूसरे, प्रत्येक आगामी वस्तु समीप ही है । जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने बारे में फ़रमाया कि मेरा अस्तित्व क़यामत से संलग्न है, अर्थात मेरे तथा प्रलय के बीच कोई ईशदूत नहीं आयेगा ।

[2]यह वह चमत्कार है जो मक्कावासियों की माँग पर दिखाया गया । चाँद के दो भाग हो गये यहाँ तक कि लोगों ने हिरा पर्वत को उसके मध्य देखा, अर्थात उसका एक भाग पर्वत के उस तरफ़ तथा एक भाग इस तरफ हो गया । (सहीह बुख़ारी, मनाकिबुल अंसार, बाबु, इनशिक़ाक़िल क़मर, मुस्लिम किताबु सिफतिल क़यामते, बाबु इन्शिक़ाक़िल क़मर) सभी पहले तथा बाद के विद्वानों का यही मत है (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं । “विद्वानों के निकट इस बात पर सहमति है कि चाँद के दो भाग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में हुए तथा यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्पष्ट चमत्कारों में से है, सही वर्णन-क्रम से प्रमाणित निरंतर हदीस इसको स्पष्ट करती है ।”

[3]अर्थात क़ुरैश ईमान लाने के बजाय इसे जादू कहकर अपने इंकार के रास्ते पर अडिग रहे ।

[4]यह मक्का के काफ़िरों के झुठलाने तथा मनोकांक्षा के अनुसरण का खण्डन करने के लिए फ़रमाया कि प्रत्येक काम की एक सीमा तथा अंत है, वह अच्छा हो अथवा बुरा । अर्थात अंततः उसका परिणाम निकलेगा, अच्छे का अच्छा तथा बुरे का बुरा । यह परिणाम लोक में भी प्रकट हो सकता है यदि अल्लाह की इच्छा हो, अन्यथा परलोक में तो निश्चित है ।

مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝٤
हैं[1] जिनमें डाँट-फटकार (वाली शिक्षा) है ।[2]

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥
(५) तथा पूर्ण हिक्मत की बात है,[3] परन्तु इन डरावनी बातों ने भी कोई लाभ न दिया ।[4]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦
(६) (तो हे नबी !) तुम उनसे मुख फेर लो जिस दिन एक पुकारने वाला अप्रिय वस्तु की ओर पुकारेगा ।[5]

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝٧
(७) ये झुकी आँखों से क़ब्रों से इस प्रकार उठ खड़े होंगे कि जैसे वह विस्तृत टिड्डी दल है ।[6]

مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨
(८) पुकारने वाले की ओर दौड़ते होंगे[7] तथा काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो अत्यन्त कठिन है।

---

[1]अर्थात विगत जातियों का विनाश किया जब उन्होंने झुठलाया।

[2]अर्थात इनमें शिक्षा-दीक्षा के पहलू हैं। कोई इनसे शिक्षा ग्रहण करके शिर्क तथा पाप से बचना चाहे तो बच सकता है। مُزْدَجَرٌ (मुज़्दजर) वास्तव में मुज़्तजर है زَجْرٌ ज़ज्र से यह मीम के साथ उद्गम (धातु) है।

[3]अर्थात ऐसी बात जो विनाश से फेर दे। अथवा यह क़ुरआन पूर्ण हिक्मत वाला है जिसमें कोई दोष एवं त्रुटि नहीं। अथवा अल्लाह तआला जिसे मार्गदर्शन दे तथा जिसको विपथ करे, उसमें बड़ी हिक्मत है जिसको वही जानता है।

[4]अर्थात अल्लाह ने जिसके लिए दुर्भाग्य लिख दिया है तथा उसके दिल पर मुद्रा लगा दी है, उसे पैग़म्बरों की चेतावनी क्या लाभ दे सकती है ? इसे तो डराना न डरना बराबर वाली बात है। लगभग इसी अर्थ की यह आयत है।

﴿قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ﴾ (अल-अंआम-१४९)

[5]يَوْمَ (यौम) से पहले أُذْكُرْ (उज़्कुर) लोप है, अर्थात उस दिन को याद करो। نُكُرٌ (नोकुर) अति भयावह तथा डरावना, अभिप्राय महशर का मैदान तथा हिसाब के स्थान की भयानकता तथा परीक्षायें हैं।

[6]अर्थात क़ब्रों से निकलकर वह ऐसे फैलेंगे तथा हिसाब स्थल की ओर इतनी तीव्रगति से जायेंगे कि जैसे टिड्डी दल हो जो तत्क्षण अंतरिक्ष में फैल जाता हैं।

[7]مُهْطِعِينَ، مُسْرِعِينَ दौड़ेंगे, पीछे नहीं रहेंगे।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ⑨

(९) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने भी हमारे भक्त को झुठलाया था तथा पागल बताकर झिड़क दिया था ।[1]

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ⑩

(१०) तो उसने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि मैं असहाय हूँ तू मेरी सहायता कर ।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ⑪

(११) तो हमने आकाश के द्वारों को मूसलाधार वर्षा से खोल दिया ।[2]

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ⑫

(१२) तथा धरती से स्रोतों को प्रवाहित कर दिया तो उस कार्य के लिये जो भाग्य में लिख दिया गया था (दोनों) पानी एकत्रित हो गया ।[3]

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ⑬

(१३) तथा हमने उसे पटरों एवं कीलों वाली नाव पर सवार कर लिया ।[4]

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ⑭

(१४) जो हमारी आँखों के समक्ष चल रही थी । बदला उसकी ओर से जिसका कुफ़्र किया गया था ।

---

[1]अर्थात नूह की जाति ने नूह अलैहिस्सलाम को झुठलाया ही नहीं, अपितु झिड़का तथा डराया धमकाया भी । जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ﴾

"उन्होंने कहा, हे नूह यदि तू नहीं रूका तो तुझे पत्थराव कर दिया जायेगा ।" (अश्शुअरा-११६)

[2]"مُنْهَمِرٍ" अर्थात बहुत अधिक अथवा जोरदार "هَمْرٌ" बहने के अर्थ में आता है । कहते हैं कि चालीस दिन तक निरंतर घोर वर्षा होती रही ।

[3]अर्थात आकाश तथा धरती के पानी ने मिलकर वह काम पूरा कर दिया जो भाग्य में लिख दिया गया था, अर्थात तूफ़ान बनकर सबको जलमग्न कर दिया ।

[4]"دُسُرٌ" (दुसुर) "دِسَارٌ" (दिसार) का बहुवचन है, वह रस्सियाँ जिनसे नवका के तख़्ते बाँधे गये अथवा वह कीलें तथा खूँटियाँ जिनसे नवका को जोड़ा गया ।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑮

(१५) तथा निःसंदेह हमने इस घटना को निशानी बनाकर[1] शेष रखा, तो है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ।[2]

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ⑯

(१६) (बताओ) मेरा प्रकोप तथा मेरी डराने वाली बातें कैसी रहीं ?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑰

(१७) तथा निःसंदेह हमने क़ुरआन को समझने के लिए सरल कर दिया है ।[3] तो क्या कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला है ?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ⑱

(१८) आद के समुदाय ने भी झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा प्रकोप तथा मेरी डराने वाली बातें ।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ⑲

(१९) हमने उन पर तीव्र निरन्तर चलने वाली हवा एक निरन्तर अशुभ दिन में भेज दी ।[4]

---

[1] تَرَكْنَاهَا में सर्वनाम سَفِينَة सफ़ीना (नवका) है, अथवा فِعْلَة फेलह (कार्य) की ओर फिरता है । अर्थात تركنا هذه الفعلة التى فعلناها بهم عبرة و عظة "यह कार्य जो उनके साथ हमने किया उसे लोगों के लिए शिक्षा एवं सदुपदेश बनाकर छोड़ दिया ।" (फ़तहुल क़दीर)

[2] مُدَّكِر (मुद्दकिर) मूलतः مُذْتَكِر मुज़तकिर है । त को द से बदल दिया तथा ज़ाल को दाल (द) बनाकर दाल की दाल में संधि कर दिया । अर्थ है शिक्षा तथा सदुपदेश ग्रहण करने वाला । (फ़तहुल क़दीर)

[3] अर्थात उसके अर्थ तथा भावार्थ को समझना, उससे शिक्षा ग्रहण करना । उसे याद करना हमने सरल बना दिया है । वास्तविकता यह है कि पवित्र क़ुरआन अपने चमत्कार तथा प्रभाव एवं भाषाशैली के आधार पर अति उच्च शास्त्र होने के उपरान्त कोई व्यक्ति तनिक भी ध्यान दे तो वह अरबी व्याकरण तथा भाषाशैली की किताबें पढ़े बिना भी उसे सरलता से समझ लेता है । इसी प्रकार यह दुनिया की एक मात्र किताब है जो एक-एक शब्द याद कर ली जाती है, अन्यथा छोटी से छोटी किताब को भी इस प्रकार याद कर लेना तथा उसे याद रखना अत्यन्त कठिन है । यदि इंसान अपने मन तथा मस्तिष्क के द्वार खोलकर उसे शिक्षा की आँखों से पढ़े, सदुपदेश के कानों से सुने तथा समझने वाले दिल से उस पर विचार करे तो लोक-परलोक के सौभाग्य के द्वार उस पर खुल जाते हैं तथा यह उसके दिल की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र तथा पाप की सभी मलीनताओं को साफ़ कर देता है ।

[4] कहते हैं कि यह बुधवार की सन्ध्या थी । जब उस प्रचंड, बरफ़ीली तथा शां-शां करती

تَنۡزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمۡ اَعۡجَازُ نَخۡلٍ مُّنۡقَعِرٍ ⑳

(२०) जो लोगों को उठा-उठाकर पटक देती थी, जैसेकि वे जड़ से कटे खजूर के पेड़ हैं।[1]

فَكَيۡفَ كَانَ عَذَابِىۡ وَنُذُرِ ㉑

(२१) तो कैसा रहा मेरा दण्ड एवं मेरा डराना ?

وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا الۡقُرۡاٰنَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّكِرٍ ㉒

(२२) तथा नि:संदेह हमने क़ुरआन को शिक्षा के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

كَذَّبَتۡ ثَمُوۡدُ بِالنُّذُرِ ㉓

(२३) समूद के समुदाय ने (भी) डराने वालों को झुठलाया।

فَقَالُوۡۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِىۡ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ㉔

(२४) तथा कहने लगे कि क्या हमीं में से एक व्यक्ति का हम अनुगमन करने लगें ? तब तो हम अवश्य दोष एवं पागलपन में पड़े हुए होंगे।[2]

ءَاُلۡقِىَ الذِّكۡرُ عَلَيۡهِ مِنۡۢ بَيۡنِنَا بَلۡ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ㉕

(२५) क्या हमारे सब के मध्य मात्र उसी पर प्रकाशना अवतरित की गयी ? नहीं, बल्कि वह झूठा गर्व करने वाला है।[3]

हवा का आरम्भ हुआ, फिर निरन्तर सात रातें और आठ दिन चलती रही। यह हवा घरों तथा दुर्गों में बंद इंसानों को भी ऊपर ले जाती तथा इस प्रकार ज़ोर से उन्हें धरती पर पटकती कि उनके सिर उनके धड़ों से अलग हो जाते। यह दिन उनके लिए यातना के कारण अशुभ सिद्ध हुआ। इसका अभिप्राय यह नहीं कि बुधवार का दिन अशुभ है अथवा किसी अन्य दिन में अशुभ है, जैसाकि कुछ लोग समझते हैं। مُسْتَمِرٌّ (मुस्तमिर्र) का अभिप्राय यह है कि यह प्रकोप उस समय तक चालू रहा जब तक सब नष्ट नहीं हो गये।

[1]यह लम्बे आकार के साथ उनकी विवशता तथा दुर्बलता को भी दिखाना है कि अल्लाह की यातना के आगे वह कुछ न कर सके, जबकि अपनी शक्ति तथा बल पर उन्हें बड़ा घमंड था। أَعْجَازٌ (आजाज़) عَجُزٌ (अजज़) का बहुवचन है, जो किसी वस्तु के पिछले भाग को कहते हैं। مُنْقَعِرٌ (मुनक़इर) अपने मूल से उखड़ जाने तथा कट जाने वाला अर्थात खजूर के उन तनों की भाँति जो अपने मूल से उखड़े एवं कटे हुए हों, उनके शव धरती पर पड़े हुए थे।

[2]अर्थात एक मानव-पुरूष को रसूल (ईशदूत) मान लेना उनके निकट गुमराही तथा दीवानगी थी। سُعُرٌ (सुउर) سَعِيرٌ (सईर) का बहुवचन है, आग की लपट। यहाँ इसको उन्माद तथा कड़ी यातना के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

[3]أَشِرٌ (अशिर) का अर्थ अभिमानी तथा सीमा पार करने वाला, अर्थात उसने झूठ भी बोला

(२६) अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा तथा अहंकारी था ?[1]

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ۝٢٦

(२७) नि:संदेह हम उनकी परीक्षा के लिए ऊँटनी भेजेंगे,[2] तो (हे स्वालेह !) तू उनकी प्रतीक्षा कर तथा धैर्य रख ।[3]

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝٢٧

(२८) तथा उन्हें सूचित कर दे कि पानी उनमें विभाजित है,[4] प्रत्येक अपने फेरे पर उपस्थित होगा ।[5]

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝٢٨

(२९) तो उन्होंने अपने साथी को पुकारा[6] जिसने (ऊँटनी पर) आक्रमण किया[7] तथा (उसकी) कोचें काट दीं ।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝٢٩

है तो बहुत बड़ा कि मुझ पर प्रकाशना आती है, भला हममें से केवल उसी पर प्रकाशना आनी थी ? अथवा उसके द्वारा हम पर अपनी बड़ाई जताना उसका उद्देश्य है ।

[1]यह स्वयं, पैग़म्बर पर आरोप लगाने वाले अथवा ईशदूत सालेह अलैहिस्सलाम, जिनको अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) एवं नबूवत् से सम्मानित किया । 'कल' से अभिप्राय क़यामत का दिन है । अथवा दुनिया में उनकी यातना के लिए निर्धारित दिन ।

[2]कि यह ईमान लाते हैं या नहीं ? यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह ने स्वयं उनके कहने पर पत्थर की एक चट्टान से निकाली थी ।

[3]अर्थात देख कि यह ईमान का मार्ग अपनाते हैं अथवा नहीं ? तथा उनके कष्टों पर धैर्य कर ।

[4]अर्थात एक दिन ऊँटनी के पानी पीने के लिए तथा एक दिन समुदाय के पानी पीने के लिये ।

[5]तात्पर्य है कि प्रत्येक का भाग उस के साथ ही विशेष है जो अपनी-अपनी बारी पर उपस्थित होकर प्राप्त करे, दूसरा उस दिन न आये । شِرْبٌ (शिर्ब) पानी का भाग ।

[6]अर्थात जिसको उन्होंने ऊँटनी को वध करने के लिये तैयार किया था, जिसका नाम क़ुदार पुत्र सालिफ़ बतलाया जाता है, उसे पुकारा कि अपना काम करे ।

[7]अथवा तलवार या ऊँटनी को पकड़ा तथा उसकी टाँगें काट दीं, फिर उसे बध कर दिया । कुछ ने فَتَعَاطَىٰ का अर्थ فَجَسَرَ किया है, फिर उसने दुस्साहस किया ।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

(३०) तो कैसा हुआ मेरा प्रकोप तथा मेरा डराना।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

(३१) हमने उन पर एक चीख़ (तीव्र ध्वनि) भेजी तो वे ऐसे हो गये जैसे बाड़ बनाने वाले की रौंदी हुई घास।[1]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हमने शिक्षा ग्रहण करने के लिए क़ुरआन को सरल कर दिया है, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

(३३) लूत के समुदाय ने भी डराने वालों को झुठलाया।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

(३४) नि:संदेह हमने उन पर पत्थर की वर्षा करने वाली हवा भेजी[2] अतिरिक्त लूत (अलैहिस्सलाम) के परिवार वालों के, उन्हें प्रात:काल के समय[3] हमने सुरक्षा (मुक्ति) प्रदान कर दी।[4]

---

[1] حَظِيرَةٌ (हज़ीरह) مَحْظُورَةٌ (महज़ूरह) के अर्थ में है, अर्थात बाढ़ जो सूखी लकड़ियों तथा झाड़ियों से जानवरों के लिए बनाई जाती है। مُحْتَظِرٌ कर्ता संज्ञा है, صاحِبُ الحَظِيرة ، هَشِيمٌ (हशीम) सूखी घास अथवा कटी हुई सूखी खेती। अर्थात जैसे एक बाड़ बनाने वाले की सूखी लकड़ियाँ तथा झाड़ियाँ निरंतर रोंदे जाने से चूरा-चूरा हो जाती हैं ऐसे ही वह हमारे प्रकोप से चूर-चूर हो गये।

[2]अर्थात ऐसी हवा भेजी जो उन्हें कंकरियाँ मारती थी। अर्थात उनकी बस्तियों को उनके ऊपर ऐसा उलट-पलट दिया गया कि उनका ऊपरी भाग नीचे तथा नीचे का ऊपर हो गया, फिर उस पर कंकर-पत्थर की वर्षा हुई, जैसे कि सूरह हूद आदि में आ चुका है।

[3]आले लूत से अभिप्राय स्वयं ईशदूत लूत अलैहिस्सलाम तथा उन पर ईमान लाने वाले लोग हैं, जिनमें लूत की पत्नी सम्मिलित नहीं, क्योंकि वह ईमान नहीं लाई थी। हाँ, लूत की दो बेटियाँ उनके साथ थीं, जिनको मुक्ति दी गई। سحر (सहर) से अभिप्राय रात का अंतिम भाग है।

[4] अर्थात उनको प्रकोप से बचाना हमारी दया तथा अनुग्रह था जो उन पर हुआ।

(३५) अपनी कृपा से ! प्रत्येक कृतज्ञ को हम इसी प्रकार बदला प्रदान करते हैं।

نِّعۡمَةً مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِىۡ مَنۡ شَكَرَ ﴿۳۵﴾

(३६) निःसंदेह उस (लूत) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था,[1] परन्तु उन्होंने डराने वालों के विषय में संदेह एवं शंका तथा झगड़ा किया।[2]

وَلَقَدۡ اَنۡذَرَهُمۡ بَطۡشَتَنَا فَتَمَارَوۡا بِالنُّذُرِ ﴿۳۶﴾

(३७) तथा लूत (अलैहिस्सलाम) को उनके अतिथियों के विषय में बहलाना चाहा[3] तो हमने उनकी आँखे अंधी कर दीं,[4] (तथा कह दिया) मेरा प्रकोप तथा मेरा डराना चखो।

وَلَقَدۡ رَاوَدُوۡهُ عَنۡ ضَيۡفِهٖ فَطَمَسۡنَاۤ اَعۡيُنَهُمۡ فَذُوۡقُوۡا عَذَابِىۡ وَنُذُرِ ﴿۳۷﴾

(३८) तथा निश्चित बात है कि उन्हें प्रातःकाल ही एक स्थान पर पकड़ने वाले निर्धारित प्रकोप ने नष्ट कर दिया।[5]

وَلَقَدۡ صَبَّحَهُمۡ بُكۡرَةً عَذَابٌ مُّسۡتَقِرٌّ ۚ﴿۳۸﴾

---

[1]अर्थात प्रकोप आने से पहले हमारी कड़ी पकड़ से डराया था।

[2]परन्तु उन्होंने उसकी चिन्ता न की अपितु संदेह किया तथा चेतावनी देने वालों से झगड़ते रहे।

[3]अथवा बहलाया अथवा मांगा लूत से उनके अतिथियों को। अभिप्राय यह है कि जब लूत की जाति को पता लगा कि कुछ सुन्दर युवक लूत के यहां आये हैं (जो वास्तव में फ़रिश्ते थे, जो उन्हें दण्ड देने आये थे) तो उन्होंने लूत से कहा कि इन अतिथियों को हमारे सुपुर्द कर दें ताकि हम उनसे अपनी बिगड़ी अभिरूचि की तृप्ति करें।

[4]कहते हैं कि यह फ़रिश्ते जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील अलैहिमुस्सलाम थे। जब उन्होंने व्यभिचार के लिए अतिथियों को लेने पर अधिक दुराग्रह किया तो जिब्रील ने अपने पंख का एक भाग उन्हें मारा, जिससे उनकी आंखों के ढेले ही बाहर निकल आये। कुछ कहते हैं कि मात्र आंखों की दृष्टि समाप्त हो गई। जो भी हो, साधारण प्रकोप से पहले यह विशेष यातना उन लोगों को पहुँची जो ईशदूत लूत के पास कुविचार से आये थे, तथा वे आंखों अथवा आंखों की दृष्टि से वंचित होकर घर पहुँचे तथा फिर प्रातः उस सार्वजनिक प्रकोप में नाश हो गये जो पूरे समुदाय के लिये आया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[5]अर्थात सवेरे उनके पास निर्धारित प्रकोप आ गया। مُسۡتَقِر का अर्थ उन पर घटित होने वाला, जो उन्हें नाश किये बिना न छोड़े।

فَذُوْقُوْا عَذَابِیْ وَ نُذُرِ ﴿۳۹﴾

(३९) तो मेरे प्रकोप तथा मेरे डराने (चेतावनी) का स्वाद चखो।

وَلَقَدْ یَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۴۰﴾

(४०) तथा नि:संदेह हमने क़ुरआन को शिक्षा एवं सदुपदेश के लिए सरल कर दिया है,[1] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿۴۱﴾

(४१) तथा फ़िरऔनियों के पास भी डराने वाले आये।[2]

كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِیْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۴۲﴾

(४२) उन्होंने हमारी समस्त निशानियों को झुठलाया,[3] तो हमने उन्हें अत्यन्त प्रभावी एवं शक्तिशाली पकड़ने वाले की भाँति पकड़ लिया।[4]

اَكُفَّارُكُمْ خَیْرٌ مِّنْ اُولٰٓىِٕكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِی الزُّبُرِ ﴿۴۳﴾

(४३) (हे मक्का वालो !) क्या तुम्हारे काफ़िर उन काफ़िरों से कुछ श्रेष्ठ हैं ?[5] अथवा तुम्हारे लिए पूर्व की किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है ?[6]

---

[1]इस सूरह में पवित्र क़ुरआन को सरल बनाने की चर्चा बार-बार करने से उद्देश्य यह है कि क़ुरआन को याद कर लेना तथा समझने को सहज कर देना अल्लाह का बड़ा अनुग्रह है। उसकी कृतज्ञता से इंसान को कभी विमुख नहीं होना चाहिए।

[2] نُذُر (नुज़ुर) نَذِیْر नज़ीर (डराने वाला) का बहुवचन है, अथवा إِنْذار (इन्ज़ार) के अर्थ में है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]वह निशानियाँ जिनके द्वारा ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन तथा फ़िरऔनियों को डराया। यह नौ निशानियाँ थीं जिनकी चर्चा पहले गुज़र चुकी है।

[4]अर्थात उन्हें नष्ट कर दिया, क्योंकि वह यातना ऐसे प्रभुत्वशाली की पकड़ थी जो प्रतिकार करने पर समर्थ है, उसकी पकड़ के पश्चात कोई बच नहीं सकता।

[5]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात हे अरबवासियो ! तुम्हारे काफ़िर विगत काफ़िरों से उत्तम नहीं हैं। जब वह अपने कुफ़्र के कारण नाश कर दिये गये तो फिर तुम, जबकि तुम उनसे भी अधिक बुरे हो, प्रकोप से सुरक्षा की आशा क्यों रखते हो ?

[6] زُبُر (ज़ुबुर) से अभिप्राय विगत अम्बिया (ईशदूतों) पर अवतरित किताबें (धर्मशास्त्र) हैं। अर्थात क्या तुम्हारे विषय में पहले की अवतरित किताबों में स्पष्ट कर दिया गया है कि यह अरब अथवा क़ुरैश जो इच्छा हो करते रहें, उन पर कोई प्रभावशाली नहीं होगा।

(४४) अथवा यह कहते हैं कि हम प्रभावशाली होने वाले समूह हैं ।[1]

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

(४५) निकट ही यह समूह पराजित किया जायेगा तथा पीठ दिखाकर भागेगा ।[2]

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

(४६) बल्कि क़ियामत (प्रलय) का क्षण उनके वचन का समय है तथा क़यामत अत्यन्त कठिन एवं अत्यन्त कटु वस्तु है ।[3]

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾

(४७) निःसंदेह पापी भटकावे में तथा यातना में हैं ।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

(४८) जिस दिन वे अपने मुख के बल आग में घसीटे जायेंगे (तथा उनसे कहा जायेगा) नरक की आग लगने का स्वाद चखो ।[4]

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

(४९) निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

---

[1]संख्या की अधिकता तथा शक्ति साधनों के कारण किसी और के हम पर प्रभुत्वशाली होने की संभावना नहीं । अथवा अभिप्राय यह है कि हमारा मामला एकत्र है, हम शत्रु से वदला लेने पर समर्थ हैं ।

[2]अल्लाह ने उनके भ्रम का खण्डन किया । समूह से अभिप्राय मक्का के काफ़िर हैं । जैसे उन्हें वद्र में पराजय हुई तथा वह पीठ फेरकर भागे तथा शिर्क के प्रमुख एवं कुफ़्र के प्रधान नष्ट कर दिये गये । वद्र के रण के अवसर पर जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अति विनम्रता से रो-रोकर अपने शिविर में प्रार्थना में लीन थे तो आदरणीय अबूबक्र रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा कि حسبك يا رسول الله! أَلْحَحْتَ على ربــك बस कीजिए अल्लाह के रसूल ! आपने अपने प्रभु के आगे बहुत रो लिया । फिर आप खेमे से बाहर आये तो आप के मुख पर यही आयत थी । (अल-बुख़ारी, तफ़सीर सूरः इक़्तरबतिस साअः)

[3]أدهى (अदहा) دَهَاء (दहाअ) से बना है, घोर अपमानकारी । أمرّ (अमर्र) مَرارةٌ (मरारह) से है, अति कड़ुवा, अर्थात यह संसार में जो हत किये गये, बंदी बनाये गये आदि उनकी अन्तिम यातना नहीं, वरन् और भी कड़ी यातनायें उन्हें क़यामत के दिन दी जायेंगी जिसका उनसे वादा किया जाता है ।

[4]سَقَر (सक़र) भी नरक का नाम है अर्थात उसका ताप तथा यातना की कड़ाई का स्वाद चखो ।

(निर्धारित) अनुमान पर पैदा किया है ।[1]

(५०) तथा हमारा आदेश केवल एक बार (का एक वाक्य) ही होता है, जैसे पलक का झपकना ।

وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍۭ بِٱلْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

(५१) तथा हमने तुम जैसे बहुतों को नष्ट कर दिया है,[2] तो कोई है शिक्षा ग्रहण करने वाला ।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَآ أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

(५२) तथा जो कुछ उन्होंने (कर्म) किये हैं सब कर्मपत्र में लिखे हुए हैं ।[3]

وَكُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوهُ فِى ٱلزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

(५३) (इसी प्रकार) प्रत्येक छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है ।[4]

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

(५४) नि:संदेह सदाचारी लोग स्वर्ग एवं सरिताओं में होंगे ।[5]

إِنَّ ٱلْمُتَّقِينَ فِى جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

(५५) सत्य एवं सम्मान की बैठक में[6] सामर्थ्य वाले स्वामी के पास ।[7]

فِى مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍۭ ﴿٥٥﴾

---

[1]अइम्मये सुन्नत (इस्लामी धर्म के विशेषज्ञों) ने इस आयत तथा इस प्रकार की अन्य आयतों से अल्लाह के भाग्यलेख को प्रमाणित किया है, जिसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह तआला को सृष्टि के पैदा करने से पहले ही सबका ज्ञान था तथा उसने सबका भाग्य लिख दिया है तथा क़द्रिया सम्प्रदाय का खण्डन किया है जो सहाबा के युग के अंत में प्रकट हुआ ।

[2]अर्थात विगत समुदायों के काफ़िरों को जो कुफ़्र (इंकार) में तुम्हारे ही जैसे थे । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अथवा दूसरा अर्थ है, लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) में अंकित हैं ।

[4]अर्थात सृष्टि के सभी कथन तथा कर्म लिखे हुए हैं, छोटे हों अथवा बड़े, तुच्छ हों अथवा महान । हतभागों की चर्चा के पश्चात अब सौभागियों की चर्चा की जा रही है ।

[5]अर्थात विभिन्न तथा अनेक प्रकार के बाग़ होंगे نَهَرٌ यह जातिवाचक के रूप में है, जिसमें स्वर्ग की सभी नहरें सम्मिलित हैं ।

[6]مَقْعَدِ صِدْقٍ (मकअदे सिद्क़) सत्य अथवा प्रतिष्ठा का आसन जिसमें पाप की बात होगी न बकवाद । अभिप्राय स्वर्ग है ।

[7]مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ सामर्थ्यवान अधिपति अर्थात वह प्रत्येक प्रकार के सामर्थ्य से युक्त है, जो

सूरतुर्रहमान -५५ سُورَةُ الرَّحْمٰنِ

सूर: रहमान* मदीने में अवतरित हुई, इसमें अट्ठहत्तर आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) दयालु ने। اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾

(२) क़ुरआन सिखाया।[1] عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾

(३) उसी ने मनुष्य को पैदा किया।[2] خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾

(४) उसे बोलना सिखाया।[3] عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾

चाहे कर सकता है, कोई उसे विवश नहीं कर सकता। عِنْدَ (पास) यह उस प्रतिष्ठा तथा सम्मान की ओर संकेत है जो ईमानवालों को अल्लाह के पास प्राप्त होगा।

*इस सूर: को लोगों ने मदनी (मदीने में अवतरित) माना है, परन्तु सही यही है कि यह मक्की (मक्के में अवतरित) है। (फ़तहुल क़दीर) इसकी पुष्टि उस हदीस से भी होती है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या बात है कि तुम चुप रहते हो। तुम से तो अच्छे जिन्न हैं कि जब जिन्न वाली रात को मैंने यह सूर: उन पर पढ़ी तो जब भी मैं ﴿فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾ पढ़ता तो वह उसके उत्तर में कहते «لا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ». (तफ़सीर सूरतुर्रहमान, इसकी चर्चा अलबानी ने सहाह तिर्मिज़ी में की है)

[1]कहते हैं कि यह मक्कावासियों के उत्तर में है, जो कहते थे कि यह क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई इंसान सिखाता है। कुछ कहते हैं कि उनके इस प्रश्न के उत्तर में है कि 'रहमान' क्या है ? क़ुरआन सिखाने का अभिप्राय है उसे सहज कर दिया अथवा अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को सिखाया तथा पैग़म्बर ने उम्मत (लोगों) को सिखाया। इस सूरह में अल्लाह ने अपने बहुत से वरदानों को गिनाया है। क्योंकि क़ुरआन की शिक्षा इनमें प्रतिष्ठा, सम्मान तथा महत्व एवं लाभ की दृष्टि से सबसे उत्तम एवं प्रत्यक्ष है, अत: सर्वप्रथम इस उपकार का वर्णन किया। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात यह बन्दर आदि जन्तु से उन्नति करते करते इंसान नहीं बन गये हैं, जैसाकि डारविन का जीव विकास सिद्धान्त है, अपितु इंसान को उसी रूप में अल्लाह ने पैदा किया है जो जानवरों से अलग एक सृष्टि है। इंसान शब्द जातिवाचक स्वरूप है।

[3]इस वर्णन से अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मातृ भाषा (बोली) है जो बिना सीखे

(५) सूर्य तथा चन्द्रमा (निर्धारित) हिसाब से हैं ।[1]	اَلشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥
(६) तथा तारे एवं वृक्ष दोनों सजदा करते हैं ।[2]	وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦
(७) उसी ने आकाश को ऊँचा किया तथा उसी ने तुला रखी ।[3]	وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧
(८) ताकि तुम तौलने में सीमा पार (उलंघन) न करो ।[4]	اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝٨
(९) तथा न्याय के साथ तौल सही रखो तथा तौल में कम न दो ।	وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩
(१०) तथा उसी ने सृष्टि के लिए धरती बिछायी ।	وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠
(११) जिसमें मेवे हैं तथा गुच्छे वाले खजूर के वृक्ष हैं ।[5]	فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١

स्वयं बोल लेता है तथा इसमें अपने मन की बातें व्यक्त कर लेता है, यहाँ तक कि वह छोटा बच्चा भी बोल लेता है जिसको किसी बात का ज्ञान तथा बोध नहीं होता । यह उस ईश्वरीय शिक्षा-दिक्षा का परिणाम है जिसकी चर्चा इस आयत में है ।

[1]अर्थात अल्लाह के निर्धारित किये हिसाब से अपने-अपने स्थानों पर गतिशील हैं, उनका उलंघन नहीं करते ।

[2]जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ ﴾

"क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हैं सभी आकाशों वाले, सभी धरती वाले, सूर्य , चन्द्रमा, तारे, पर्वत, वृक्ष तथा पशु ।" *(अल-हज्ज-१८)*

[3]अर्थात धरती में न्याय रखा, जिसका उसने लोगों को आदेश किया । जैसे कहा :

﴿ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ﴾

"नि:सन्देह हमने अपने संदेष्टाओं को स्पष्ट निशानियाँ देकर भेजा तथा उनके साथ पुस्तक एवं मीज़ान (तुला) अवतरित किया ताकि लोग न्याय पर स्थित रहें ।" *(अल-हदीद-२५)*

[4]अर्थात न्याय का उलंघन न करो ।

[5] أَكْمَام (अकमाम) كِمّ (किम्म) का बहुवचन है, खजूर पर चढ़ा हुआ आवरण ।

(१२) तथा भूसा वाला अनाज़ है[1] तथा सुगन्धित फूल हैं। وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾

(१३) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।[2] فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٣﴾

(१४) उसने मनुष्य को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठिकरी की तरह थी।[3] خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

(१५) तथा जिन्नात को अग्नि की लपट से पैदा किया।[4] وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ نَارٍ ﴿١٥﴾

(१६) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे ?[5] فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٦﴾

(१७) वह प्रभु है दोनों पूर्वों एवं दोनों पश्चिमों का।[6] رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

---

[1] حَبّ हब्ब (दाना) से अभिप्राय प्रत्येक वह खाद्य पदार्थ है जो इंसान तथा जन्तु खाते हैं, सूखकर उसका पौधा भूसा बन जाता है जो जानवरों के काम आता है।

[2] यह मानव तथा दानव (जिन्न) दोनों से संबोधन है। अल्लाह अपने वरदानों को गिना कर उनसे प्रश्न कर रहा है। यह पुनरावृत्ति उस व्यक्ति के समान है जो किसी पर निरन्तर उपकार करे, किन्तु वह उसके उपकार का इंकार करता हो, जैसे कहे कि मैंने तेरा अमुक-अमुक काम किया, क्या तू इंकार करता है ? अमुक-अमुक वस्तु तुझे दी, क्या तुझे याद नहीं ? तुझ पर अमुक उपकार किया, क्या तुझे हमारा तनिक भी ध्यान नहीं ? (फ़तहुल क़दीर)

[3] صَلْصَال (सल्साल) सूखी मिट्टी जिसमें ध्वनि हो। فَخَّار (फ़ख़्ख़ार) आग में पकी मिट्टी, जिसे ठीकरी कहते हैं। उस इंसान से अभिप्राय आदरणीय आदम हैं, जिनका पहले मिट्टी से पुतला वनाया गया तथा फिर अल्लाह ने उसमें आत्मा फूँकी, फिर उनकी बायीं पसली से 'हव्वा' को पैदा किया, फिर इन दोनों से इंसानी वंश चला।

[4] इससे अभिप्राय सबसे पहला जिन्न है, जो जिन्नों का पितामह है अथवा जिन्न जातिवाचक स्वरूप है जैसाकि अनुवाद जातिवाचक के आधार पर किया गया है। مَارِج (मारिज) आग से उच्च होने वाली लपट (ज्वाला) को कहते हैं।

[5] अर्थात तुम्हारी यह पैदाईश तथा फिर तुमसे अधिक वंशों की पैदाईश तथा अधिकता भी अल्लाह के वरदानों में से है। क्या तुम इस उपकार का इंकार करोगे ?

[6] एक गर्मी का पूर्व तथा एक जाड़े का पूर्व, इसी प्रकार पश्चिम है। इसलिए दोनों को

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾

(१८) तो (हे जिन्नो एवं मनुष्यो !) तुम अपने प्रभु की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾

(१९) उसने दो दरिया प्रवाहित कर दिये जो एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

(२०) उन दोनों के मध्य एक आड़ है कि उससे बढ़ नहीं सकते।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢١﴾

(२१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के कौन-कौन से उपहारों को झुठलाओगे ?

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

(२२) उन दोनों में से मोती तथा मूँगे निकलते हैं।[2]

द्विवचन वर्णित किया है। ऋतुओं के अनुसार पूर्व तथा पश्चिम के भिन्न होने में भी इसमें जिन्नों तथा इंसानों के बहुत से हित हैं, इसलिए इसे भी उपकार कहा गया है।

[1] مَرَجَ، أَرْسَلَ के अर्थ में है, अर्थात प्रवाहित कर दिये। इसका सारांश यह है कि दो नदियों से अभिप्राय कुछ के विचार से उनके अलग-अलग अस्तित्व हैं, जैसे मीठे पानी की नदियाँ हैं जिनसे खेतियाँ सींची जाती हैं तथा इंसान उनका पानी अन्य आवश्यकताओं में भी प्रयोग करता है। दूसरा प्रकार सागरों का जल है जो खारा है, जिसके कुछ अन्य लाभ हैं। यह दोनों आपस में नहीं मिलते। कुछ ने इसका भावार्थ यह लिया है कि खारे साग़रों ही में मीठे पानी की लहरें चलती हैं तथा यह दोनों लहरें आपस में नहीं मिलतीं, अपितु एक दूसरे से अलग रहती हैं। उसका एक रूप यह भी है कि अल्लाह तआला ने खारे साग़रों की नीचली तह में ही कई स्थानों पर मीठे पानी की लहरें भी प्रवाहित कर दी हैं तथा वह खारे पानी से अलग ही रहती हैं। दूसरा रूप यह भी है कि ऊपर खारा पानी हो तथा उसकी तह में मीठे जल का स्रोत, जैसाकि वास्तव में कुछ स्थानों पर ऐसा है। तीसरी दशा यह है कि जिन स्थानों पर मीठे पानी की नदियों का पानी सागर में जाकर गिरता है वहाँ कई लोगों ने देखा है कि दोनों का पानी कोसों तक इसी प्रकार साथ-साथ चलता है कि एक ओर मीठा नदी का पानी तथा दूसरी ओर विस्तृत समुद्र का खारा पानी, उनके मध्य यद्यपि कोई आड़ नहीं, परन्तु यह परस्पर नहीं मिलते। दोनों के बीच यह वह बर्ज़ख़ (आड़) है जो अल्लाह ने रख दिया है, दोनों उससे आगे नहीं बढ़ते।

[2] مَرْجَانٌ से छोटे मोती अथवा मूँगे अभिप्राय हैं। कहते हैं कि आकाश से वर्षा होती है तथा सीपियाँ अपना मुख खोल देती हैं, जो बूंद उसके भीतर पड़ जाती है वह मोती बन जाती है। प्रसिद्ध यही है कि मोती आदि मीठे पानी की नदियों से नहीं बल्कि खारे पानी के समुद्रों ही से निकलते हैं, परन्तु पवित्र क़ुरआन ने द्विवचन सर्वनाम प्रयोग किया है जिससे

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾

(२३) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?[1]

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा अल्लाह ही के (स्वामित्व में) हैं वह (जहाज़) जो समुद्रों में पर्वत की भांति उच्च (खड़े हुए) चल रहे हैं ।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾

(२५) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम अपने प्रभु के किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?[3]

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

(२६) धरती पर जो कुछ भी हैं सब नश्वर हैं ।

وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

(२७) केवल तेरे प्रभु का मुख (अस्तित्व) जो महान एवं सम्मानित है, शेष रह जायेगा ।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٨﴾

(२८) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-

विदित होता है कि दोनों ही से मोती निकलते हैं । चूँकि मोती अधिकांशता समुद्रों ही से निकलते हैं, इसलिए उसकी प्रख्याति हो गई है । फिर भी मीठी नदियों से उसका इंकार संभव नहीं, बल्कि वर्तमान युग के प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि मीठी नदियों में भी मोती होते हैं । हां, उनके निरन्तर प्रवाहित रहने के कारण उनसे मोती निकालना कठिन बात है । कुछ ने कहा कि अभिप्राय योग है । इनमें से किसी एक से भी मोती निकल जायें तो उनपर द्विवचन बोलना सही है । कुछ ने कहा कि मीठी नदियां भी साधारणत: समुद्र में ही गिरती हैं, तथा वहीं से मोती निकाला जाता है, इसलिए यद्यपि उद्‌गम खारा समुद्र ही हुआ परन्तु दूसरी नदियों का अंश भी उनमें सम्मिलित है । किन्तु वर्तमान युग के प्रयोगों के पश्चात इन कल्पनाओं की आवश्यकता नहीं ।

[1]यह रत्न तथा मोती सुन्दरता तथा श्रृंगार के साधन हैं, तथा धनी लोग उन्हें अपनी सुन्दरता की रूचि की तृप्ति के लिए तथा शोभा बढ़ाने के लिए प्रयोग करते हैं । अत: इनका अनुकम्पा होना भी स्पष्ट है ।

[2]الجوار (अलजवार) جَارِيَةٌ (जारियह) चलने वाली का बहुवचन है तथा लुप्त विशेष्य السُّفُن (नवकायें) का विशेषर्ण है । مُنْشَآتٌ का अर्थ مرفوعات है, उच्च की हुई । अभिप्राय पाल है, जो वायु पोतों में झंडों के समान ऊपर तथा उच्च बनाई जाती हैं । कुछ ने इसका अर्थ निर्मित किया है, अर्थात अल्लाह की बनाई हुई जो समुद्रों में चलती हैं ।

[3]इनके द्वारा भी यातायात तथा भारवाहन की जो सुविधायें प्राप्त हैं उसे बताने की आवश्यकता नहीं । अत: यह भी अल्लाह की महान अनुकम्पा है ।

किन उपहारों को झुठलाओगे ।[1]

(२९) सब आकाश एवं धरती वाले उसी से माँगते हैं ।[2] प्रत्येक दिन वह एक कार्य में है ।[3]

يَسْـَٔلُهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِى شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

(३०) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठला सकोगे ?[4]

فَبِأَىِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٠﴾

(३१) (हे जिन्नों तथा मनुष्यों के समूहो !) शीघ्र ही हम तुम्हारी ओर पूर्णत: आकर्षित हो जायेंगे ।[5]

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ ٱلثَّقَلَانِ ﴿٣١﴾

(३२) फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ।

فَبِأَىِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٢﴾

(३३) (हे जिन्नों एवं मनुष्यों के गिरोह !) यदि तुममें आकाशों एवं धरती के किनारों से निकलने की शक्ति है तो निकल भागो ।[6] बिना प्रभुत्व

يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ إِنِ ٱسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا۟ مِنْ أَقْطَارِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ فَٱنفُذُوا۟ ۚ لَا تَنفُذُونَ

---

[1]संसार की समाप्ति के पश्चात प्रतिफल तथा दण्ड अर्थात न्याय का प्रबंध होगा, अत: यह भी महान उपकार है जिस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना अनिवार्य है ।

[2]अर्थात सब उस पर आश्रित एवं उसके द्वार के भिखारी हैं ।

[3]प्रतिदिन का अर्थ प्रत्येक क्षण । شأن (शान) का अर्थ कार्य तथा विषय, अर्थात प्रत्येक समय वह कुछ न कुछ करता रहता है, किसी को रोगी बना रहा है तो किसी को स्वस्थ, किसी को धनी बना रहा है तो किसी धनी को निर्धन, किसी को रंक से राजा तो किसी को राजा से रंक, किसी को पदासीन कर रहा है तो किसी को नीचे गिरा रहा है तथा किसी को नास्ति एवं नास्ति को आस्ति कर रहा है आदि । संक्षेप में संसार में यह सब परिवर्तन उसी के आदेश तथा इच्छा से हो रहे हैं तथा रात दिन का कोई ऐसा क्षण नहीं जो उसकी क्रियाशीलता से शून्य हो ।

[4]तथा इतनी महान शक्ति का प्रत्येक समय बंदों के काम में लगा रहना कितनी बड़ी कृपा है ।

[5]इसका अर्थ यह नहीं कि अल्लाह को अवकाश नहीं, बल्कि यह मुहावरे के रूप में कहा गया है, जिसका उद्देश्य धमकी देना तथा फटकारना है । ثقلان सक़लान (जिन्न तथा इंसान को) इसलिए कहा गया है कि उन्हें धर्म-विधान के पालन का पाबंद किया गया है । इस प्रतिबन्ध तथा भार से अन्य सृष्टि अलग है ।

[6]यह धमकी भी उपकार है कि इससे दुराचारी दुराचारों से रूक जाये तथा सदाचारी अधिक पुण्य कमाये ।

إِلَّا بِسُلْطَٰنٍ ﴿٣٣﴾

(एवं शक्ति) के तुम नहीं निकल सकते ।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾

(३४) फिर तुम अपने प्रभु की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾

(३५) तुम पर अग्नि की ज्वाला तथा धुआँ छोड़ा जायेगा[2] फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे ।[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾

(३६) तो तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ।

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

(३७) फिर जबकि आकाश फटकर लाल हो जायेगा, जैसाकि लाल (मुलायम) चमड़ा हो ।[4]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾

(३८) तो फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَن ذَنبِهِ إِنسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾

(३९) उस दिन किसी मनुष्य तथा किसी जिन्न से उसके पापों की पूछताछ न की जायेगी ।[5]

---

[1]अल्लाह के लिखे भाग्य तथा निर्णय से बचकर तुम कहीं भाग सकते हो तो चले जाओ, किन्तु यह शक्ति किस में है ? तथा भाग कर जायेगा कहाँ ? कोई स्थान ऐसा है जो अल्लाह के अधिकार से बाहर हो ? यह भी धमकी है जो उपरोक्त धमकी के समान उपकार है । कुछ ने कहा कि यह महशर के मैदान में कहा जायेगा जब फ़रिश्ते हर तरफ से लोगों को घेर रखे होंगे । दोनों ही भावार्थ अपने स्थान पर सही हैं ।

[2]अभिप्राय यह है कि यदि तुम क़यामत के दिन कहीं भाग कर गये भी तो फ़रिश्ते तुम्हें अग्नि-ज्वाला तथा धुवाँ छोड़कर अथवा पिघला हुआ ताँबा तुम्हारे सिरों पर डालकर वापस लायेंगे । नुहास का दूसरा अर्थ पिघला हुआ ताँबा किया गया है ।

[3]अर्थात अल्लाह के प्रकोप को टालने का तुम सामर्थ्य नहीं रखोगे ।

[4]क़यामत (प्रलय) के दिन आकाश फट जायेगा । धरती पर फ़रिश्ते उतर आयेंगे उस दिन यह धरती नरक की अग्नि के कड़े ताप से पिघलकर लाल चमड़े के समान हो जायेगा । دِهان लाल चमड़ा ।

[5]अर्थात जिस समय वे क़ब्रों से निकलेंगे, अन्यथा तत्पश्चात हिसाब-स्थल में उनसे पूछताछ की जायेगी । कुछ ने इसका भावार्थ यह किया है कि पापों के संदर्भ में नहीं पूछा जायेगा, क्योंकि उनका तो पूरा रेकार्ड ही फ़रिश्तों के पास होगा तथा अल्लाह के ज्ञान में

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾

(४०) फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

(४१) पापी केवल अपने हुलिया से ही पहचान लिये जायेंगे[1] तथा उनके माथों के बाल तथा पैर पकड़ लिए जायेंगे ।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾

(४२) फिर तुम अपने प्रभु के किस-किस उपहारों को झुठलाओगे ?

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) यह है वह नरक जिसे अपराधी असत्य मानते थे ।

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾

(४४) उसके तथा गर्म उबलते पानी के मध्य चक्कर खायेंगे ।[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾

(४५) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उस व्यक्ति के लिए जो अपने प्रभु के समक्ष खड़ा होने से डरा, दो स्वर्ग हैं ।[4]

भी । हाँ, यह पूछा जायेगा कि तुमने यह क्यों किया ? अथवा अभिप्राय यह है कि उनसे नहीं पूछा जायेगा अपितु मानव-अंग स्वयं ही बोल कर सब बात बतलायेंगे ।

[1]अर्थात जिस प्रकार ईमानवालों का चिन्ह होगा कि उनके वज़ू के अंग चमकते होंगे, उसी प्रकार पापियों के मुख काले होंगे, आँखें नीली तथा वे भयभीत होंगे ।

[2]फ़रिश्ते उनके मस्तक तथा उनके पैरों को साथ मिलाकर पकड़ेंगे तथा नरक में झोंक देंगे, अथवा कभी मस्तकों से तथा कभी पगों से उन्हें पकड़ेंगे ।

[3]अर्थात कभी उन्हे नरक की यातना दी जायेगी, कभी खौलता पानी की । آن (आन) गरम अर्थात कड़ा खौलता हुआ गरम पानी, जो उनकी अंतड़ियों को काट देगा ।

[4]हदीस में आता है कि दो बाग़ चाँदी के हैं जिनके बर्तन तथा सभी चीज़ें चाँदी की होंगी तथा दो बाग़ सोने के हैं तथा उसके बर्तन एवं सब वस्तुयें सोने ही की होंगी । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूर: अर्रहमान*) कुछ कथनों (हदीसों) में है कि सोने के बाग़ विशेष ईमानवालों (समीपवर्तियों) के लिए होंगे तथा चाँदी के बाग़ साधारण ईमानवालों के लिए होंगे । (इब्ने कसीर)

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾

(४७) तो फिर अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को तुम झुठलाओगे ?

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

(४८) दोनों स्वर्ग अत्याधिक डालियों (एवं शाखाओं) वाली हैं ।[1]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٩﴾

(४९) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ﴿٥٠﴾

(५०) उन दोनों (स्वर्गों) में दो प्रवाहित जलस्रोत हैं ।[2]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥١﴾

(५१) तो तुम अपने प्रभु के कौन-कौन से उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٢﴾

(५२) उन दोनों (स्वर्गों) में हर प्रकार के मेवों के जोड़े (दो प्रकार) होंगे ।[3]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٣﴾

(५३) फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

(५४) स्वर्ग में रहने वाले ऐसे फ़र्शों पर तकिये लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर सुन्दर आकर्षक रेशम के होंगे,[4] तथा उन दोनों स्वर्गों के मेवे अति निकट होंगे ।[5]

---

[1]यह संकेत है कि उसमें छाया घनी तथा गहन होगी । साथ ही फलों की अधिकता होगी, क्योंकि कहते हैं कि प्रत्येक डाली तथा शाखा फलों से लदी होगी । (इब्ने कसीर)

[2]एक का नाम 'तस्नीम' तथा दूसरे का 'सल्सबील' है ।

[3]अर्थात स्वाद में प्रत्येक फल दो प्रकार का होगा, यह विशेष कृपा का एक रूप है । कुछ ने कहा कि एक प्रकार शुष्क फल का तथा दूसरा ताज़े फल का होगा ।

[4]अर्थात ऊपर का कपड़ा स्तर से सदा उत्तम तथा सुंदर होता है । यहां केवल स्तर का वर्णन है जिसका अभिप्राय यह है कि ऊपर का कपड़ा उससे कहीं अधिक उत्तम होगा ।

[5]इतने समीप होंगे कि बैठे-लेटे भी तोड़ सकेंगे ﴿قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ﴾ (*अल-हाक्क़:-२३*)

(५५) फिर तुम दोनो अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٥

(५६) वहाँ (शर्मीली) नीची दृष्टि वाली हूरें हैं,[1] जिन्हें उनसे पूर्व किसी जिन्न तथा मनुष्य ने हाथ न लगाया होगा।[2]

فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ٥٦

(५७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٧

(५८) वे (हूरें) मणि एवं मूँगे के समान होंगी।[3]

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ٥٨

(५९) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥٩

(६०) उपकार का बदला उपकार (प्रतिफल) के अतिरिक्त क्या है।[4]

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ٦٠

---

[1]अर्थात जिनकी निगाहें अपने पतियों के सिवा किसी पर नहीं पड़ेंगी तथा उन्हें अपने पति ही सबसे सुन्दर तथा अच्छे लगेंगे।

[2]अर्थात कुवाँरी होंगी। इससे पहले वह किसी के विवाह में नहीं रही होंगी। यह आयत तथा इससे पहले की कुछ आयतों से स्पष्ट रूप से विदित होता है कि जो जिन्न ईमानवाले होंगे वे भी ईमान वाले मनुष्यों की भाँति स्वर्ग में जायेंगे, तथा उनके लिए भी वही होगा जो अन्य ईमानवालों के लिए होगा।

[3]अर्थात सफ़ाई में पुलक तथा सफेदी और लालिमा में मोती अथवा मूँगे के सदृश होंगी। जैसे सहीह हदीसों में भी उनकी सुन्दरता तथा शोभा को इन शब्दों में वर्णन किया गया है। «يُرَى مُخُّ سُوقِهِنَّ مِن وَرَاءِ الْعَظْمِ وَاللَّحْمِ». "उनकी शोभा तथा सौन्दर्य के कारण उनकी पिंडली का गूदा, माँस तथा हड्डी के बाहर से झलकता होगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्के, बाबु माजाअ फी सिफ़तिल जन्नते, मुस्लिम, किताबुल जन्नते व सिफ़ते नईमिहा, बाबु अव्वले ज़ुमरतिन तदख़ुलुल जन्नः ...) एक दूसरी हदीस में फ़रमाया कि स्वर्गवासियों की पत्नियाँ इतनी सुन्दर होंगी कि यदि उनमें से एक नारी जगतवासियों की ओर झाँक दे तो आकाश तथा धरती के मध्य का सब भाग प्रकाशित हो जाये तथा सुगंध से भर जाये, तथा उसके सिर का दुपट्टा इतना मूल्यवान होगा कि वह जगत तथा उसमें जो कुछ है, उससे उत्तम है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबुल हूरिल ईन)

[4]पहले एहसान से अभिप्राय पुण्यकर्म तथा अल्लाह की आज्ञा का पालन है तथा दूसरे एहसान से उसका प्रतिफल अर्थात स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधायें हैं।

(६१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦١﴾

(६२) तथा उनके अतिरिक्त दो स्वर्ग और हैं ?[1] وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾

(६३) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٣﴾

(६४) जो दोनों गाढ़े हरे रंग की कालिमा से परिपूर्ण हैं ।[2] مُدْهَامَّتَانِ ﴿٦٤﴾

(६५) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٥﴾

(६६) उनमें दो (तीव्रगति से) उबलने वाले जलस्रोत हैं ।[3] فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ﴿٦٦﴾

(६७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٧﴾

(६८) उन दोनों में मेवे तथा खजूर एवं अनार होंगे ।[4] فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

(६९) तो क्या अब भी तुम दोनों अपने प्रभु के किसी उपहार को झुठलाओगे ? فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٩﴾

(७०) उनमें सच्चरित्र सुन्दर स्त्रियाँ हैं ।[5] فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

---

[1]دُونِهِمَا से यह अर्थ भी निकाला गया है कि यह दो बाग़ श्रेष्ठता तथा प्रधानता में पहले दो बाग़ों से, जिनकी चर्चा आयत न॰ ४६ में गुज़री, कमतर होंगे ।

[2]सिंचाई की अधिकता तथा हरियाली के कारण कालिमा लिये होंगे ।

[3]यह विशेषण تَجْرِيَانِ से हल्का है । الجَرْيُ أَقْوَى مِنَ النَّضْخِ "प्रवाह सिंचाई से अधिक अच्छा होता है ।" (इब्ने कसीर)

[4]जबकि पहले दो स्वर्गों (बाग़ों) की विशेषता का वर्णन किया गया है कि हर फल दो प्रकार का होगा । स्पष्ट है कि इसमें श्रेष्ठता एवं कृपा की अधिकता है, वह दूसरी बात में नहीं है ।

[5]خَيْرَاتٌ से तात्पर्य आचरण तथा स्वभाव की अच्छाईयाँ हैं तथा حِسَانٌ का अर्थ सुन्दरता तथा शोभा में अद्वितीय ।

(७१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧١﴾

(७२) (गोरे रंग की) हूरें (अप्सरायें) स्वर्ग के खेमों में रहने वाली हैं ।[1] | حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

(७३) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٣﴾

(७४) उन (हूरों) को कोई मनुष्य अथवा जिन्न ने इससे पहले हाथ नहीं लगाया (उनसे नहीं मिला) । | لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾

(७५) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ? | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٥﴾

(७६) हरे गद्दों तथा सुन्दर बिछौनों पर तकिये लगाये होंगे ।[2] | مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

(७७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?[3] | فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾

---

[1]हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "स्वर्ग में मोतियों के खेमें होंगे, उनकी चौड़ाई साठ मील होगी । उसके प्रत्येक कोने में जन्नती के परिवार होंगे, जिनको दूसरे कोने वाले नहीं देख सकेंगे । ईमानवाला उसमें घूमे फिरेगा ।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: *रहमान* तथा किताबु बदइल ख़ल्क़, बाबु माजाअ फी सिफ़तिल जन्नते, सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नते, बाबुन फ़ी सिफ़ते ख़ेयामिल जन्नते)

[2]رَفْــرَف (रफ़रफ़) गद्दा, गालीचा अथवा इस प्रकार का उत्तम बिछौना, عَبْقَرِيّ (अबकरी) प्रत्येक उत्तम तथा मूल्यवान वस्तु को कहा जाता है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह शब्द आदरणीय उमर के लिये प्रयोग किया । «فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرِيَّهُ». "मैंने कोई अबकरी (श्रेष्ठ) ऐसा नहीं देखा जो उमर की तरह काम करता हो ।" (सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाबु फ़ज़ले उमर तथा मुस्लिम, फ़ज़ायेलुस सहाबा, बाबुन मिन फ़ज़ाएले उमर) अभिप्राय यह है कि जन्नती ऐसे तख़्तों पर आसीन होंगे जिस पर हरे रंग के गद्दे, कालीनें तथा उच्च प्रकार के सुन्दर, कढ़ाई वाले बिछौने लगे होंगे ।

[3]यह आयत इस सूर: में ३१ बार आई है । अल्लाह ने इस आयत में अपने विभिन्न प्रकार

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

(७८) बड़ा शुभ है तेरे प्रतापवान[1] तथा उदार प्रभु का नाम।

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ

सूरतुल वाक़िअः-५६

सूरः वाक़िअः* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छियानवे आयते एवं तीन रूकूअ हैं।

के उपहारों की चर्चा की है, तथा प्रत्येक अथवा कुछ उपहारों की चर्चा के पश्चात यह प्रश्न किया है, यहाँ तक कि महशर के मैदान की भयानकता तथा नरक की यातना के पश्चात भी यह प्रश्न किया है, जिसका अर्थ है कि परलोक की बातों को याद दिलाना भी एक बड़ी दया है ताकि बचने वाले उससे बचने का प्रयास कर लें। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि जिन्न भी इंसानों की भाँति एक सृष्टि है बल्कि इंसानों के बाद यह दूसरी सृष्टि है जिसे बुद्धि तथा बोध प्रदान किया गया है तथा उसके बदले उनसे केवल यह माँग की गई है कि वह मात्र एक अल्लाह की उपासना करें, उसके साथ किसी को साझी न बनायें। सृष्टि में यही दो हैं जो धार्मिक आदेशों तथा कर्तव्यों के उत्तरदायी हैं। इसलिए उन्हें इरादे तथा इच्छा की स्वाधीनता दी गई है ताकि उनकी परीक्षा हो सके। तीसरे, उपहारों के वर्णन से यह भी सिद्ध हुआ कि अल्लाह के उपहारों से लाभ प्राप्त करना उचित तथा अच्छा है। यह संयम तथा सदाचार के प्रतिकूल है न अल्लाह के साथ लगाव में बाधक, जैसाकि कुछ सूफ़िया (साधु) विश्वास दिलाते हैं। चौथे, बार-बार यह प्रश्न कि तुम अल्लाह की कौन-कौन सी अनुकम्पाओं को झुठलाओगे, यह धमकी तथा चेतावनी स्वरूप हैं, जिसका उद्देश्य उस अल्लाह की अवज्ञा से रोकना है जिसने यह सभी चीज़ें पैदा कीं तथा सुलभ कराये। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके उत्तर में यह पढ़ना पसन्द फ़रमाया है, «لاَ بِشَيْءٍ مِّنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ». "हे हमारे प्रभु, हम तेरे किसी उपहार को भी नहीं झुठलाते, तो सभी प्रशंसायें तेरे ही लिये हैं।"

[1] تَبَارَكَ (तबारक) बरकत से है, जिसका अर्थ नित्यता तथा स्थिरता है। अभिप्राय यह है कि उसका नाम सदा रहने वाला है अथवा उसके पास सदा भलाई के कोष हैं। कुछ ने इसका अर्थ ऊँचाई तथा महानता किया है, तथा जब उसका नाम इतना मंगलमय अर्थात भलाई तथा ऊँचाई वाला है तो फिर वह स्वयं कितना शुभ, बड़ाई तथा ऊँचाई वाला होगा ?

*इस सूरः के विषय में प्रख्यात है कि यह सूरतुल ग़िना (सम्पन्नता की सूरः) है तथा जो व्यक्ति इसे प्रत्येक रात को पढ़ेगा उसे कभी भूखमरी नहीं आयेगी। किन्तु वास्तव में इस सूरः के महत्व में कोई प्रमाणित हदीस नहीं है। प्रत्येक रात पढ़ने तथा बच्चों को सिखाने की हदीसें भी अप्रमाणित बल्कि बनावटी हैं। देखिये (अल-अहादीसुज़ ज़ईफ़ा, लिल अलबानी हदीस न॰ २८९,२९० भाग १\४५७)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾

(१) जब क़्यामत (प्रलय) स्थापित हो जायेगी।[1]

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾

(२) जिसके घटित होने में कोई झूठ नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾

(३) वह ऊँच-नीच करने वाली होगी।[2]

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾

(४) जबकि धरती भूकम्प के साथ हिला दी जायेगी।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

(५) तथा पर्वत पूर्णरूपण कण-कण कर दिये जायेंगे।[3]

فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ﴿٦﴾

(६) फिर वह बिखरी धूल की भाँति हो जायेंगे।

وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾

(७) तथा तुम तीन गुटों में बंट जाओगे।[4]

فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾

(८) तो दाहिने हाथ वाले कैसे अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।[5]

وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾

(९) तथा बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का।[6]

---

[1]वाक़िआ भी क़्यामत के नामों में से है। क्योंकि इसे व्याप्त होना ही आवश्यक है इसलिए इसका यह नाम भी है।

[2]ऊंच-नीच से अभिप्राय आदर तथा अपमान है। अर्थात अल्लाह के आज्ञाकारी बंदों को यह ऊंचा तथा अवज्ञाकारियों को नीचा करेगी, चाहे संसार में मामले इसके विपरीत हों। ईमानवाले वहाँ सम्मानित होंगे तथा काफ़िर एवं अवज्ञाकारी हीन तथा अपमानित।

[3]رَجًّا (रज्जा) का अर्थ गति तथा हलचल (भूकम्प) है, तथा بَسًّا (बस्सा) का अर्थ कण-कण हो जाना है।

[4]أَزْوَاجًا (अज़वाजा) أَصْنَافًا (असनाफ़ा) के अर्थ में है।

[5]इससे साधारण ईमानवाले तात्पर्य हैं जिनको उनके कर्मपत्र दायें हाथ में दिये जायेंगे, जो उनके सौभाग्य का परिचायक होगा।

[6]इससे अभिप्राय काफ़िर हैं, जिनको उनके कर्मपत्र बायें हाथ में दिये जायेंगे।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿۱۰﴾ (१०) तथा जो अग्रिम हैं वे तो अग्रिम ही हैं ।[1]

أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿۱۱﴾ (११) वह पूर्ण निकटता प्राप्त किये हुए हैं ।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۱۲﴾ (१२) सुख-सुविधाओं वाले स्वर्गों में हैं ।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳﴾ (१३) (बहुत बड़ा) गुट तो पहले लोगों में से होगा ।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۴﴾ (१४) तथा थोड़े से पिछले लोगों में से ।[2]

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿۱۵﴾ (१५) (ये लोग) स्वर्ण के तारों से बुने हुए तख़्तों पर ।

---

[1]इनसे अभिप्राय विशेष ईमानवाले हैं । यह तीसरा प्रकार है, जो ईमान लाने में अग्रिम तथा पुण्य के कार्यों में वढ़ चढ़कर भाग लेने वाले हैं, अल्लाह उन्हें विशेष समीपता प्रदान करेगा । यह वाक्य ऐसा ही है जैसे बोलते हैं कि तू तू है तथा ज़ैद ज़ैद, इसमें जैसाकि ज़ैद का महत्व तथा उसकी प्रधानता का वर्णन है ।

[2]ثُلَّـةٌ (सुल्ल:) उस वड़े गिरोह को कहा जाता है जिसकी गणना असंभव हो । कहा जाता है कि पहले लोगों से अभिप्राय आदरणीय आदम से लेकर नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक के समुदाय के लोग हैं तथा पिछलों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्प्रदाय के लोग । अभिप्राय यह है कि पहले के समुदायों में अग्रिम लोगों का एक बड़ा गिरोह है, क्योंकि उनका युग वहुत लम्वा है जिनमें पहले के हज़ारों अम्विया सम्मिलित हैं । उनके मुक़ाबले में उम्मते मोहम्मदिया (मोहम्मदी समुदाय) का युग (क़यामत तक) थोड़ा है, अत: उनमें अग्रगामी भी विगत समुदायों के सापेक्ष थोड़े होंगे । तथा एक हदीस में जो आता है कि नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे आशा है कि तुम जन्नतियों के आधे होगे । (सहीह मुस्लिम न॰ २००) तो यह उपरोक्त आयत के अर्थ के प्रतिकूल नहीं है, क्योंकि उम्मते मोहम्मदिया के अग्रगामियों तथा साधारण मोमिनों को मिलाकर शेष सभी समुदायों से स्वर्ग में जाने वालों का आधा हो जायेंगे । अत: केवल विगत समुदायों के अग्रगामियों की अधिकता से हदीस में वर्णित संख्या का इंकार नहीं होगा । किन्तु यह वात विचारणीय है तथा कुछ ने पहलों तथा पिछलों से इसी मोहम्मदी समुदाय के लोग तात्पर्य लिये हैं । अर्थात इसके पहले लोगों में आगे वालों की संख्या अधिक तथा पिछलों में कम होगी । इमाम इब्ने कसीर ने इसी दूसरे कथन को प्राथमिकता दी है तथा यही सही लगता है । यह मध्यवर्ती वाक्य है, فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ तथा على سُرُرٍ مَّوضُونَـةٍ के मध्य ।

مُّتَّكِـِٔينَ عَلَيْهَا مُتَقَٰبِلِينَ ۝١٦
(१६) एक-दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे।[1]

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَٰنٌ مُّخَلَّدُونَ ۝١٧
(१७) उनके निकट ऐसे लड़के जो सदैव (लड़के ही) रहेंगे,[2] आवागमन करेंगे।

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝١٨
(१८) प्याले तथा सुराही लेकर तथा मदिरा का प्याला लेकर जो प्रवाहित मदिरा से भरा हो।

لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝١٩
(१९) जिससे न सिर में चक्कर हो तथा न बुद्धि भ्रष्ट हो।[3]

وَفَٰكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝٢٠
(२०) तथा ऐसे मेवे लिए हुए जिसे वे पसन्द करें।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝٢١
(२१) तथा पक्षियों के माँस जो उन्हें (अत्यन्त) रूचिकर हों।

وَحُورٌ عِينٌ ۝٢٢
(२२) तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें।

كَأَمْثَٰلِ ٱللُّؤْلُؤِ ٱلْمَكْنُونِ ۝٢٣
(२३) जो छिपे हुए मोतियों की भाँति हैं।[4]

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝٢٤
(२४) यह बदला है उनके कर्मों का।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝٢٥
(२५) न (वे) वहाँ व्यर्थ की बात सुनेंगे तथा न पाप की बात।

---

[1]"مَوضُونَة" बुने तथा जड़े हुए, अर्थात उक्त जन्नती सोने के तारों से बुने तथा जवाहरों से जड़े हुए तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने तकियों पर आसीन होंगे।

[2]अर्थात वह बड़े नहीं होंगे कि बूढ़े हो जायें, न उनके रूप-रेखा तथा आकार में कोई परिवर्तन होगा, बल्कि एक ही आयु तथा अवस्था में रहेंगे, जैसे नव आयु बालक होते हैं।

[3]"صُدَاع" (सुदाअ) सिर की ऐसी पीड़ा को कहते हैं जो मदिरा के नशे के कारण हो। "إِنْزَاف" (इनज़ाफ़) का अर्थ वह बुद्धि का बिगाड़ है जो नशे के कारण हो। दुनिया की मदिरा से यह दोनों बातें होती हैं। परलोक की मदिरा में आनन्द तथा स्वाद तो अवश्य होगा किन्तु यह ख़राबियाँ नहीं होंगी। مَعِين (मईन) प्रवाहित स्रोत जो सूखता न हो।

[4]"مَكْنُون" (मक्नून) जिसे छिपाकर रखा गया हो उसे किसी का हाथ न लगा हो, न धूल-धप्पड़ पहुँचा हो। ऐसी वस्तु पूर्णतः स्वच्छ तथा मूल स्थिति में रहती है।

(२६) केवल सलाम ही सलाम (शान्ति ही शान्ति) की ध्वनि होगी ।[1]

إِلَّا قِيلًا سَلَٰمًا سَلَٰمًا ﴿٢٦﴾

(२७) तथा दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले ।[2]

وَأَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلْيَمِينِ ﴿٢٧﴾

(२८) वे बिना कांटों के बैर,

فِى سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾

(२९) तथा तह पर तह क़िलों,

وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾

(३०) तथा लम्बी-लम्बी छाओं,[3]

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾

(३१) तथा प्रवाहित जल,

وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾

(३२) तथा अत्याधिक फलों में,

وَفَٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾

(३३) जो न समाप्त हों, न रोक लिये जायें,[4]

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

(३४) तथा ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों पर होंगे ।[5]

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

---

[1]अर्थात दुनिया में तो आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि बहन-भाई भी इससे सुरक्षित नहीं । इस मतभेद तथा झगड़े से दिलों में मैल तथा कटुता पैदा होती है, जो एक-दूसरे के विरूद्ध अपशब्द, ग़ाली-गलोज पिशुनता तथा चुगली आदि पर इंसान को उकसाती है । स्वर्ग इन तमाम नैतिक गंदगियों एवं अशिष्टता से न केवल पवित्र होगी परन्तु वहाँ सलाम ही सलाम की ध्वनियाँ सुनने में आयेगी, फ़रिश्तों की ओर से भी तथा परस्पर जन्नतियों की ओर से भी । जिसका अर्थ यह है कि वहाँ सलाम तथा अभिवादन तो होगा किन्तु मन तथा कथन की वह ख़राबियाँ नहीं होंगी, जो संसार में सामान्य हैं यहाँ तक कि बड़े-बड़े धार्मिक पुरूष भी इनसे सुरक्षित नहीं ।

[2]अव तक अग्रगामियों का वर्णन था । अब 'अस्हाबुल यमीन' से साधारण ईमानवालों का वर्णन हो रहा है ।

[3]जैसे एक हदीस में है कि स्वर्ग के एक पेड़ की छाया के नीचे एक घुड़सवार सौ साल तक चलता रहेगा तब भी वह छाया समाप्त न होगी । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल वाक़िअः*, सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नह, बाबुन इन्न फ़िल जन्नते शजरतुन)

[4]अर्थात यह फल सामयिक नहीं होंगे कि ऋतु गुज़रने पर यह फल भी आगामी ऋतु तक समाप्त हो जायें । यह फल इस प्रकार ऋतु से आबद्ध नहीं होंगे अपितु प्रत्येक ऋतु में उपलब्ध होंगे । इस प्रकार उनकी प्राप्ति में कोई रूकावट नहीं होगी ।

[5]कुछ ने फ़र्शों से पत्नियाँ तथा 'मर्फ़ूआ' से उच्च पद का भाव तात्पर्य लिया है ।

(३५) हमने उन (की पत्नियों) को विशेष रूप से बनाया है।

إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ﴿٣٥﴾

(३६) तथा हमने उन्हें कुँवारियाँ बना दिया है।[1]

فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

(३७) प्रेम करने वालियाँ समान आयु की हैं।[2]

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

(३८) दाहिने हाथ वालों के लिए हैं।

لِّأَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

(३९)(बहुत) बड़ा समूह है अग्रणि लोगों में से।[3]

ثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) तथा (बहुत) बड़ा समूह है पिछलों में से।[4]

وَثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْءَاخِرِينَ ﴿٤٠﴾

(४१) तथा बायें हाथ वाले क्या हैं; बायें हाथ वाले।[5]

وَأَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ﴿٤١﴾

---

[1] أنشأناهن में सर्वनाम के फिरने का स्थान यद्यपि समीप नहीं किन्तु वाक्य-क्रम उसे बता रहा है कि इससे अभिप्राय जन्नतियों को मिलने वाली पत्नियाँ तथा हूरें (अप्सरायें) हैं। हूरें जन्म के सामान्य विधि से पैदा नहीं होंगी बल्कि अल्लाह तआला उन्हें स्वर्ग में अपने विशेष सामर्थ्य से पैदा करेगा तथा जो सांसारिक नारियाँ होंगी वह भी हूरों के अतिरिक्त जन्नतियों को पत्नियों के रूप में मिलेंगी। इनमें बूढ़ी, काली, कुरूप जो भी होंगी अल्लाह उनको स्वर्ग में यौवन तथा सौन्दर्य एवं शोभा से अलंकृत कर देगा, न कोई बूढ़ी होगी न कूरूप, बल्कि सब युवती तथा कुंवारी के रूप में होंगी।

[2] عُرُبٌ, यह عَرُوبَة का बहुवचन है, अर्थात ऐसी नारी जो अपनी सुंदरता, शोभा एवं अन्य गुणों के कारण अपने पति की अत्यन्त प्रिय हो। أَتْرَابٌ यह تِرْبٌ का बहुवचन है, समानायु। अर्थात जन्नतियों की पत्नियाँ सभी एक आयु की होंगी, जैसा कि हदीस में वर्णन किया गया है कि सब जन्नती ३३ वर्ष की आयु के होंगे। (तिर्मिज़ी, बाबु माजाअ फ़ी सिन्ने अहलिल जन्नते) यह भी अभिप्राय हो सकता है कि अपने पतियों की समानायु होंगी। दोनों का अभिप्राय एक ही है।

[3] अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक के लोगों में से अथवा स्वयं आपकी उम्मत के अगलों में से।

[4] अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से अथवा आप की उम्मत के पिछलों में से।

[5] इससे अभिप्राय नरकवासी हैं, जिनको उनके कर्मपत्र बायें हाथ में पकड़ाये जायेंगे, जो उनके लेख दुर्भाग्य का लक्षण होगा।

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝٤٢
(४२) गरम वायु तथा गरम जल में (होंगे)।

وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝٤٣
(४३) तथा काले धुयें की छाया में ।[1]

لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝٤٤
(४४) जो न शीतल है, न सुखद ।[2]

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝٤٥
(४५) निःसंदेह ये लोग इससे पूर्व अत्यन्त सम्पन्नता में पले हुए थे ।[3]

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝٤٦
(४६) तथा महापापों पर दुराग्रह करते थे ।

وَكَانُوا يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝٤٧
(४७) तथा कहते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी एवं हड्डी हो जायेंगे, तो क्या हम पुनः जीवित करके खड़े किये जायेंगे ।

أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝٤٨
(४८) तथा क्या हमारे पूर्वज भी ?[4]

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝٤٩
(४९) (आप) कह दीजिए कि निःसन्देह सब अगले तथा पिछले ।

---

[1] سَمُوم आग की तपन अथवा लू की तपन जो शरीर के क्षिद्रों में घुस जाये । حَمِيم (हमीम) खौलता पानी, يَحْمُوم (यहमूम) حِمَمَةٌ (हिममः) से है । अर्थात काला । अत्यधिक काला हो तो أَحَمٌّ कहा जाता है । अभिप्राय यह है कि नरक की यातना से व्याकुल होकर वह एक छाया की ओर दौड़ेंगे, किन्तु जब वहाँ पहुँचेंगे तो पता लगेगा कि यह छाया नहीं, यह नरक की अग्नि का काला धुवाँ है । कुछ कहते हैं कि यह حَمٌّ (हम्म) से है जो उस वसा (चर्वी) को कहते हैं जो अग्नि में जल-जल कर काली हो गई हो । कुछ कहते हैं कि यह حِمَمٌ (हेमम) से है, जो कोयले के अर्थ में है । इसीलिये इमाम ज़हहाक़ फ़रमाते हैं : आग भी काली है तथा जहन्नमी भी काले मुँह होंगे तथा नरक में जो कुछ भी होगा काला ही होगा ।

[2] अर्थात छाया शीतल होती है, परन्तु यह जिसको छाया समझ रहे होंगे वह छाया नहीं होगी जो शीतल हो, वह तो नरक का धुवाँ होगा । وَلَا كَرِيمٍ जिसमें कोई सुदृश्य अथवा भलाई नहीं ।

[3] अर्थात दुनिया में आख़िरत (परलोक) से विमुख होकर आनंद में डूबे हुए थे ।

[4] इससे विदित हुआ कि परलोक के प्रति विश्वास का इंकार ही कुफ़्र, शिर्क तथा पापों में लीन रहने का मूल कारण है । यही बात है कि जब आख़िरत की कल्पना उसके मानने वालों के विचार में धुँधला जाती है तो उनमें दुराचार एवं कुकर्म व्याप्त हो जाता है, जैसे आजकल साधारणतः मुसलमानों की दशा है ।

(५०) अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।	لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾
(५१) फिर तुम हे भटके लोगो, झुठलाने वालो!	ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ﴿٥١﴾
(५२) अवश्य खाने वाले हो ज़क़्क़ूम (थूहड़) का वृक्ष।	لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ﴿٥٢﴾
(५३) तथा उसी से पेट भरने वाले हो।[1]	فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ﴿٥٣﴾
(५४) फिर उस पर गर्म उबलता हुआ पानी पीने वाले हो।	فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ﴿٥٤﴾
(५५) फिर पीने वाले भी प्यासे ऊँटों की तरह।[2]	فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۗ﴿٥٥﴾
(५६) क़यामत के दिन उनका अतिथि-सत्कार यही है।[3]	هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۗ﴿٥٦﴾
(५७) हमने ही तुम सबको पैदा किया है, फिर तुम क्यों नहीं मनाते?[4]	نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

---

[1]अर्थात उस कुदृश्य तथा अत्यन्त कुस्वाद एवं कड़वे वृक्ष का खाना तुम्हें यद्यपि अति अप्रिय होगा, परन्तु अति भूख के कारण तुम्हें उसी से अपना पेट भरना होगा।

[2]هِيم (हीम) أَهْيَم का बहुवचन है, उन प्यासे ऊँटों को कहा जाता है जो एक विशेष रोग के कारण पानी पर पानी पीते जाते हैं किन्तु उनकी प्यास नहीं जाती। अभिप्राय यह है कि ज़क़्क़ूम खाकर पानी भी वैसे ही नहीं पियोगे जो साधारण ढंग से होता है, अपितु एक तो यातना के रूप में तुम्हें पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा, दूसरे तुम उसे प्यासे ऊँट के समान पीते ही चले जाओगे किन्तु तुम्हारी प्यास दूर नहीं होगी।

[3]यह उपहास स्वरूप फ़रमाया : अन्यथा अतिथि-सत्कार तो वह होता है जो अतिथि के आदर-भाव के लिये किया जाता है। जैसे कुछ स्थानों पर फ़रमाया :

﴿ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴾

"उनको दुखदायी यातना की शुभसूचना सुना दो।" (*आले इमरान*-२१)

[4]अर्थात तुम जानते हो कि तुम्हारा स्रष्टा अल्लाह ही है, फिर तुम उसको मानते क्यों नहीं अथवा पुनः जीवन प्रदान करने पर विश्वास क्यों नहीं करते?

(५८) अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो वीर्य तुम टपकाते हो ।

أَفَرَءَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾

(५९) क्या उससे (मनुष्य) तुम बनाते हो अथवा स्रष्टा हम ही हैं ?[1]

ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلْخَٰلِقُونَ ﴿٥٩﴾

(६०) हम ही ने तुममें मृत्यु को निर्धारित कर दिया है[2] तथा हम उससे हारे हुए नहीं हैं ।[3]

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ ٱلْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾

(६१) कि तुम्हारे स्थान पर तुम जैसे अन्य पैदा कर दें तथा तुम्हें नये रूप से (उस संसार में) पैदा करें जिससे तुम (सर्वथा) अनजान हो ।[4]

عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَٰلَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِى مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

(६२) तथा तुम्हें निश्चित रूप से प्रथम जन्म का ज्ञान भी है, फिर शिक्षा क्यों नहीं ग्रहण करते ?[5]

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلنَّشْأَةَ ٱلْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

(६३) अच्छा फिर यह भी बताओ कि तुम जो कुछ बोते हो ।

أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾

(६४) उसे तुम ही उगाते हो अथवा हम उगाने वाले हैं ।[6]

ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ﴿٦٤﴾

---

[1]अर्थात तुम्हारी पत्नियों से संभोग के परिणामस्वरूप तुम्हारे वीर्य की जो बूँदे स्त्रियों के गर्भाशय में जाती हैं, उनसे इंसानी रूप रेखा बनाने वाले हम हैं या तुम ?

[2]अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु का समय निश्चित कर दिया है जिससे कोई आगे नहीं बढ़ सकता जैसे कोई बाल्यकाल में, कोई युवावस्था में तथा कोई बुढ़ापे में मरता है ।

[3]अथवा विवश नहीं, अपितु सामर्थ्यवान हैं ।

[4]अर्थात तुम्हारे रूप बदलकर तुम्हें बन्दर तथा सूअर बना दें तथा तुम्हारी जगह तुम्हारी रूप-रेखा की कोई अन्य सृष्टि पैदा कर दें ।

[5]अर्थात क्यों नहीं समझते कि उसने जिस प्रकार पहली बार पैदा किया (जिसे तुम जानते हो), वह पुन: भी पैदा कर सकता है ।

[6]अर्थात भूमि में तुम जो बीज बोते हो वह एक पौधा बनकर उगता है । अन्न के एक निर्जीव दाने को फाड़कर तथा धरती की छाती को चीरकर इस प्रकार वृक्ष उपजाने वाला कौन है ? यह भी वीर्य की बूँद से इंसान बना देने की भाँति हमारे ही सामर्थ्य की कलाकारी है अथवा तुम्हारी किसी शिल्पकारी अथवा छू मंत्र का परिणाम है ?

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾

(६५) यदि हम चाहें तो उसे कण-कण कर दें तथा तुम आश्चर्य के साथ बातें बनाते ही रह जाओ ।[1]

إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾

(६६) कि हम पर तो दण्ड ही पड़ गया ।[2]

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) बल्कि हम तो पूर्णरूप से वंचित ही रह गये ।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो ।

أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) उसे बादलों से भी तुम ही ने उतारा है अथवा हम वर्षा करते हैं ।

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) यदि हमारी इच्छा हो तो हम उसे कडुवा (विष) कर दें फिर तुम हमारी कृतज्ञता क्यों नहीं व्यक्त करते ?[3]

---

[1]अर्थात खेती को हरी-भरी करने के बाद जब वह पकने के क़रीब हो जाये तो यदि हम चाहें तो उसे सुखाकर चुरा-चुरा कर दें तथा तुम आश्चर्य से मुँह तकते ही रह जाओ । تَفَكُّهٌ के दोनों अर्थ हैं, सुख-आनन्द भी तथा दुख एवं निराशा भी । यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है । इसके अनेक अर्थ किये गये हैं । बातें बनाते रह जाओगे, शोक करोगे, लज्जित होगे, आश्चर्य करोगे, एक-दूसरे को दोष दोगे तथा दुखी होगे आदि । ظَلْتُمْ वास्तव में صِرْتُمْ (हो जाओगे) के अर्थ में है ।

[2]अर्थात पहले हमने भूमि पर हल चलाकर उसे बराबर किया, फिर बीज डाला, फिर उसे पानी देते रहे । किन्तु जब फ़सल पकने का समय आया तो वह सूख गई तथा हमें कुछ भी नहीं मिला । अर्थात यह सब व्यय तथा श्रम एक दण्ड ही हुआ जो हमें सहन करना पड़ा । दण्ड का अर्थ यही होता है कि मनुष्य को उसके माल अथवा परिश्रम का लाभ न मिले, अपितु वह ऐसे ही व्यर्थ हो जाये, अथवा उससे बलपूर्वक कुछ ले लिया जाये तथा उसके बदले उसे कुछ न दिया जाये ।

[3]अर्थात इस अनुग्रह पर हमारी आज्ञा का पालन करके हमारी व्यवहारिक कृतज्ञता क्यों व्यक्त नहीं करते ?

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾

(७१) अच्छा यह भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो।

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) उसके वृक्ष को तुमने पैदा किया है अथवा हम उसके पैदा करने वाले हैं ?[1]

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

(७३) हमने उसे शिक्षा प्राप्त करने का साधन[2] तथा यात्रियों के लाभ की वस्तु बनाया है।[3]

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

(७४) तो अपने महान प्रभु के नाम का जाप किया करो।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

(७५) तो मैं सौगन्ध खाता हूँ सितारों के गिरने की।[4]

---

[1]कहते हैं कि अरब में दो वृक्ष हैं, मर्ख तथा अफ़ार। उन दोनों की डालियाँ लेकर उन्हें आपस में रगड़ने से आग की चिंगारियाँ निकलती हैं।

[2]कि इसके प्रभाव एवं लाभ विचित्र हैं तथा संसार की असंख्य वस्तुओं की तैयारी के लिए उसे रीढ़ की अस्थि का स्थान प्राप्त है, जो हमारे महा सामर्थ्य का प्रतीक है। हमने दुनिया में जैसे यह आग पैदा की है आख़िरत में भी पैदा करने पर समर्थ हैं, जो इससे ६९ गुना तपन में अधिक होगी। (जैसेकि हदीस में है)

[3]مُقْوِين यह مُقْوِي (मुक्वी) का बहुवचन है। قَوَاء (क्वाअ) शून्य वन में प्रवेश करने वाला, अभिप्राय यात्री है। अर्थात यात्री मरूभूमियों तथा जंगलों में इन वृक्षों से लाभ उठाते हैं, इनसे गर्मी, प्रकाश तथा जलावन प्राप्त करते हैं। कुछ ने मुक़्वी से अभिप्राय वह दरिद्र लिये हैं जो भूख के कारण खाली पेट हों। कुछ ने उसका अर्थ लाभ प्राप्त करने वाले किये हैं। इसमें धनी, निर्धन और यात्री सब ही आ जाते हैं तथा सब ही आग से लाभ प्राप्त करते हैं। इसीलिए हदीस में जिन तीन चीज़ों को सार्वजनिक रखने का आदेश दिया गया है, उनमें पानी तथा घास के अतिरिक्त आग भी है। (अबू दाऊद, किताबुल बुयूअ, व इब्ने माजा, किताबुर रुहून, बाबु अल मुस्लिमून शुरकाअ फ़ी सलासिन)

[4]'فَلا أقسم' में 'ला' अधिक है, जो बल देने के लिये है, अथवा यह अधिक नहीं है बल्कि पूर्व की किसी चीज़ को नकारने के लिए है। अर्थात यह क़ुरआन ज्योतिष अथवा कविता नहीं, वरन मैं तारों के गिरने की शपथ लेकर कहता हूँ कि यह क़ुरआन सम्मान वाला है। مواقع النجوم से अभिप्राय तारों के उदय तथा अस्त होने के स्थान एवं ध्रुव हैं। कुछ ने

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝٧٦

(७६) तथा यदि तुम्हें ज्ञान हो तो यह बहुत बड़ी सौगन्ध है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝٧٧

(७७) कि निःसंदेह यह क़ुरआन अत्यन्त सम्मान वाला है।[1]

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۝٧٨

(७८) जो एक सुरक्षित पुस्तक में (लिखित) है।[2]

لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۝٧٩

(७९) जिसे केवल पवित्र लोग ही स्पर्श कर सकते हैं।[3]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝٨٠

(८०) यह अखिल जगत के प्रभु की ओर से अवतरित किया गया है।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ۝٨١

(८१) तो क्या तुम ऐसी बात को साधारण (एवं तुच्छ) समझ रहे हो ?[4]

अनुवाद किया है, शपथ ग्रहण करता हूँ आयतों के उतरने की पैग़म्बर के दिलों में (मुज़िहुल क़ुरआन) अर्थात नुजूम (तारे) क़ुरआन की आयतें तथा मवाक़िअ (उतरने का स्थान) अम्बिया के दिल हैं। कुछ ने इसका अर्थ क़ुरआन का समय-समय से उतरना अभिप्राय लिया है तथा कुछ ने क़यामत के दिन तारों का झड़ना तात्पर्य लिया है। (इब्ने कसीर)

[1]यह शपथ का उत्तर है।

[2]अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में।

[3]لَا يَمَسُّهُ में सर्वनाम लौहे महफ़ूज़ की ओर फिरता है। पवित्रजनों से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं। कुछ ने उसको क़ुरआन की ओर फिराया है अर्थात उसे फ़रिश्ते ही छूते हैं, अर्थात आकाश पर फ़रिश्तों के सिवा किसी की भी पहुँच क़ुरआन तक नहीं होती। अभिप्राय मुशरेकीन का खंडन है जो कहते थे कि क़ुरआन शैतान लेकर उतरते हैं। अल्लाह ने फ़रमाया यह कैसे संभव है। यह क़ुरआन शैतानी प्रभाव से सर्वथा सुरक्षित है।

[4]حديث (हदीस) से अभिप्राय क़ुरआन है। مُدَاهَنَة (मुदाहनत) वह आलस्य जो कुफ़्र तथा शिर्क के मुक़ाबले अपनाई जाये, जबकि उन के मुक़ाबिले में कड़ी नीति की आवश्यकता है। अर्थात इस क़ुरआन को अपनाने के मामले में सभी काफ़िरों को प्रसन्न करने के लिए नम्रता तथा विमुखता का मार्ग अपना रहे हो, जबकि यह क़ुरआन जो उपरोक्त गुणों से युक्त है, इस योग्य है कि उसे अधिक ख़ुशी से अपनाया जाये।

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो।

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो जब कि (प्राण) गले तक पहुँच जाये।

وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा तुम उस समय (आँखों से) देखते रहो।[1]

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा हम उस व्यक्ति से तुम्हारे अपेक्षा अत्याधिक निकट होते हैं,[2] परन्तु तुम नहीं देख सकते।[3]

فَلَوْلَا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तो यदि तुम किसी की आज्ञा के अधीन नहीं।

تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा उस कथन में सत्य हो तो तनिक उस प्राण को तो लौटाओ।[4]

---

[1]अर्थात प्राण निकलते हुए देखते हो किन्तु उसे टाल सकने अथवा उससे कोई लाभ पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते।

[2]अर्थात मरने वाले के हम तुम से भी अधिक समीप होते हैं अपने ज्ञान, सामर्थ्य तथा दर्शन के आधार पर, अथवा हमसे अभिप्राय अल्लाह के कार्यकर्त्ता अर्थात मौत के फ़रिश्ते हैं जो उसका प्राण निकालते हैं।

[3]अर्थात अपनी अज्ञानता के कारण तुम्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि अल्लाह तो तुम्हारी प्राण रग से भी अधिक समीप है अथवा यमदूतों को तुम देख नहीं सकते।

[4]'دَانَ يَدِينُ' का अर्थ है अधीन होना, दूसरा अर्थ है बदला देना। अर्थात यदि तुम इस बात में सच्चे हो कि तुम्हारा कोई मालिक तथा स्वामी नहीं जिसके तुम अधीन हो अथवा प्रतिकार का कोई दिन नहीं आयेगा, तो उस निकाले हुए प्राण को अपनी जगह वापस कर के दिखा दो। यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो स्पष्ट है कि तुम्हारा भ्रम बेकार है। निश्चय तुम्हारा एक स्वामी है तथा निःसंदेह एक दिन आयेगा जिसमें वह मालिक प्रत्येक को उसका कर्मफल देगा।

فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ۝٨٨

(८८) तो जो कोई भी (अल्लाह के दरबार में) निकटतम होगा ।[1]

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝٨٩

(८९) उसे तो सुख है एवं भोजन हैं तथा सुखदायी स्वर्ग है ।

وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ۝٩٠

(९०) तथा जो व्यक्ति दाहिने हाथ वालों में से है ।[2]

فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ۝٩١

(९१) तो भी शान्ति है तेरे लिए कि तू दाहिने वालों में से है ।

وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُكَذِّبِينَ ٱلضَّآلِّينَ ۝٩٢

(९२) परन्तु यदि कोई झुठलाने वाले पथभ्रष्टों में से है ।[3]

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝٩٣

(९३) तो खौलते हुए पानी से सत्कार है ।

وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝٩٤

(९४) तथा नरक में जाना है ।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ ٱلْيَقِينِ ۝٩٥

(९५) यह (सूचना) सर्वथा सत्य तथा पूर्णतया निश्चित है ।

فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ۝٩٦

(९६) तो तू अपने (अत्यन्त महिमावान) प्रभु के नाम की पवित्रता वर्णन कर ।[4]

---

[1]सूर: के आरम्भ में कर्मों के अनुसार इंसानों के जो तीन भेद वर्णन किये गये थे, उनका पुन: वर्णन किया जा रहा है । यह उनका प्रथम प्रकार है जिन्हें मुक़र्रबीन के सिवा साबिक़ीन (अग्रणि) भी कहा जाता है, क्योंकि वह पुण्य के प्रत्येक कार्य में आगे होते हैं, ईमान लाने में भी दूसरों से आगे होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों के कारण वह अल्लाह के सदन के समीपवर्तियों में होते हैं ।

[2]यह दूसरी श्रेणी है, साधारण ईमानवाले । यह भी नरक से बचकर स्वर्ग में जायेंगे परन्तु पदों में साबिक़ीन (अग्रणि लोगों) से कमतर होंगे । मौत के समय उनको भी फ़रिश्ते शान्ति की शुभ-सूचना देते हैं ।

[3]यह तीसरी श्रेणी है जिन्हें सूरह के आरम्भ में أَصْحَابُ الْمَشْئَمَةِ "असहाबुल मशअम:" कहा गया था, बायें हाथ वाले अथवा अशुभ वाले । यह अपने कुफ़्र तथा पाखंड का दण्ड अथवा उसका अशुभ, नरक की यातना के रूप में भुगतेंगे ।

[4]हदीस में आता है कि दो शब्द अल्लाह को अति प्रिय हैं, बोलने में हल्के तथा तौल में

सूरतुल हदीद-५७

سُورَةُ الحَدِيدِ

सूर: हदीद मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें उन्तीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

(१) आकाशों तथा धरती में जो कुछ है (सभी) अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) कर रहे हैं,[1] और वह शक्तिशाली हिक्मत वाला है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ②

(२) आकाशों तथा धरती का राज्य उसी का है,[2] वही जीवन देता है तथा मृत्यु भी तथा वह सभी वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

(३) वही आदि है तथा वही अन्त, वही प्रत्यक्ष है तथा वही अप्रत्यक्ष,[3] तथा वह प्रत्येक वस्तु

भारी हैं। سبحان الله و بحمده سبحان الله العظيم (सहीह बुख़ारी, अन्तिम हदीस तथा सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़िक्र, बाबु फ़ज़लित तहलील वत्तस्बीह वद्दुआ)

[1]यह महिमागान अपनी अवस्था से नहीं बल्कि अपने कथन से करते हैं। इसलिए फ़रमाया :

﴿وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ﴾

'किन्तु तुम उनकी तस्बीह (महिमागान) को नहीं समझ सकते।" (*बनी इस्राईल-४४*)

ईश्दूत दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में आता है कि उनके साथ पर्वत भी तस्बीह (महिमागान) करते थे। (*अल-अम्बिया-७९*) यदि यह तस्बीह अवस्था अथवा संकेत की तस्बीह होती तो ईश्दूत दाऊद के साथ उसको विशेष करने की आवश्यकता न होती।

[2]इसलिए वह उनमें जैसे चाहता है अधिकार करता है, उसके सिवा किसी का आदेश तथा अधिकार नहीं चलता। अथवा अभिप्राय है कि वर्षा, वनस्पति तथा जीविका के सभी कोष उसी के स्वामित्व में हैं।

[3]वही आदि है अर्थात उससे पहले कुछ न था, वही अन्त है, जिसके बाद कोई चीज नहीं

عَلِيمٌ ۝٣
को भली-भाँति जानने वाला है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا

(४) वही है जिसने आकाशों एवं धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर उच्च हुआ,[1] वह (भलीभाँति) जानता है उस वस्तु को जो धरती में जाये[2] तथा जो उससे निकले[3]

होगी। वही व्याप्त है अर्थात सब पर प्रभुत्वशाली है, उस पर कोई प्रभुत्व नहीं रखता। वही अंर्तयामी है, अर्थात अन्त:करण की सभी बातें केवल वही जानता है अथवा लोगों की आँखों तथा बुद्धियों से लुप्त है। (फ़तहुल क़दीर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री फ़ातिमा रज़ी अल्लाहु अन्हा को यह दुआ पढ़ने पर बल दिया था।

«اللَّهُمَّ ! رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، اللَّهُمَّ! أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ».

(सहीह मुस्लिम किताबुज़् ज़िक्रे वद्दुआये) इस दुआ में जो ऋण अदा करने के लिये मस्नून है, प्रथम एवं अंत तथा व्याप्त (गोचर) एवं गुप्त (अगोचर) का अर्थ वर्णन कर दिया गया है।

[1]इसी अर्थ की आयतें *सूरह आराफ़-५४*, *सूरह यूनुस-३*, *सूरह अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ सजदा-४* आदि आयतों में गुज़र चुकी हैं। उनके भाष्य देख लिये जायें।

[2]अर्थात धरती में वर्षा की जो बूँदें तथा अन्न एवं फलों के जो बीज प्रवेश करते हैं, उनकी अवस्था तथा मात्रा को वह जानता है।

[3]जो पेड़ चाहे वह फलों के हों, अथवा अनाजों के, अथवा शोभा एवं सुगन्ध वाले फूलों के, यह जितने भी तथा जैसे भी विकसित होते हैं, सभी अल्लाह के ज्ञान में है। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴾

"तथा अल्लाह ही के पास हैं परोक्ष की चाबियाँ (कोषागार), उनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता, तथा वह सभी वस्तुओं को जानता है जो कुछ थल में हैं तथा जो कुछ समुद्रों में हैं, तथा कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु वह उसको भी जानता है तथा कोई दाना धरती के अंधेरे भागों में नहीं पड़ता तथा न कोई भीगी

وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ④

तथा जो आकाश से नीचे आये[1] तथा जो कुछ चढ़कर उसमें जाये[2] तथा जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है[3] तथा जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह देख रहा है।

لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

(५) आकाशों तथा धरती का राज्य उसी का है, तथा समस्त कार्य उसी की ओर लौटाये जाते हैं।

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑥

(६) वही रात्रि को दिन में प्रवेश कराता है तथा वही दिन को रात्रि में प्रवेश कराता है,[4] तथा सीनों में छिपी हुई बातों का वह पूर्ण ज्ञान रखने वाला है।

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ

(७) अल्लाह पर तथा उसके रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान ले आओ तथा उस धन में से ख़र्च करो जिसमें अल्लाह ने तुम्हें (अन्यों का)

एवं सूखी वस्तु गिरती है किन्तु ये सभी स्पष्ट पुस्तक में हैं।" (*अल-अंआम-५९*)

[1]वर्षा, ओले, बर्फ़, भाग्य तथा वह आदेश जो फ़रिश्ते लेकर उतरते हैं।

[2]फ़रिश्ते इंसानों के जो कर्म लेकर चढ़ते हैं, जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह की ओर रात के कर्म दिन से पहले तथा दिन के कर्म रात से पहले चढ़ते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुन इन्नल्लाह ला यनामु)

[3]अर्थात तुम जल में हो अथवा थल में, रात हो अथवा दिन, घरों में हो अथवा वनों में, प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक समय वह अपने ज्ञान तथा दर्शन शक्ति के आधार पर तुम्हारे साथ है अर्थात तुम्हारे एक-एक कर्म को देखता है, तुम्हारी एक-एक बात जानता तथा सुनता है। यही विषय *सूरः हूद-३*, *सूरः रअ्द-१०* तथा अन्य आयतों में भी वर्णन किया गया है।

[4]अर्थात सब चीज़ों का स्वामी वही है, वह जैसे चाहता है उनमें अधिकार करता है, उसकी आज्ञा एवं आदेश से कभी रात लम्बी, दिन छोटा तथा कभी इसके विपरीत दिन बड़ा तथा रात छोटी हो जाती है तथा कभी दोनों बराबर। इसी प्रकार कभी गर्मी तथा कभी जाड़ा, कभी वसन्त तथा पतझड़। ऋतु का परिवर्तन भी उसी की इच्छा तथा आदेश से होता है।

فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

उत्तराधिकारी बनाया है ।[1] तो तुममें से जो ईमान लायें तथा दान करें उन्हें बहुत बड़ा पुण्य मिलेगा ।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ⑧

(८) तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते ? जबकि स्वयं रसूल तुम्हें अपने प्रभु पर ईमान लाने का आमन्त्रण दे रहा है तथा यदि तुम ईमानवाले हो तो वह तुम से दृढ़ वचन भी ले चुका है ।[2]

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑨

(९) वह (अल्लाह) ही है जो अपने भक्त पर स्पष्ट आयतें अवतरित करता है ताकि वह तुम्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये । निःसंदेह अल्लाह (तआला) तुम पर विनम्र दया करने वाला है ।

---

[1]अर्थात यह माल इससे पहले किसी दूसरे के पास था । इसमें इस बात की ओर संकेत है कि तुम्हारे पास भी यह धन नहीं रहेगा, दूसरे उसके उत्तराधिकारी बनेंगे । यदि तुमने उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं किया तो बाद में इसके उत्तराधिकारी उसे अल्लाह के मार्ग में व्यय करके तुमसे अधिक सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं तथा यदि वह अवज्ञा में ख़र्च करेंगे तो तुम भी सहायता करने के अपराध में पकड़े जाओगे । (इब्ने कसीर) हदीस में आता है कि मनुष्य कहता है कि मेरा धन, मेरा माल, हालाँकि तेरा एक माल तो वह है जो तूने खा-पीकर समाप्त कर दिया । दूसरा वह है जिसे पहन कर पुराना कर दिया तथा तीसरा वह है जो अल्लाह की राह में ख़र्च करके आख़िरत के लिए सुरक्षित कर लिया । इसके सिवा जो कुछ है वह सब दूसरे लोगों के हिस्से में आयेगा । (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, मुसनद अहमद ४\२४)

[2]इब्ने कसीर ने أخذ का कर्त्ता الرسول को बनाया है तथा अभिप्राय वह बैअत (वचन) लिया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा केराम से लेते थे कि सुख एवं दुख प्रत्येक दशा में सुनना तथा अनुपालन करना है । इमाम इब्ने जरीर के निकट इसका कर्त्ता अल्लाह है तथा अभिप्राय वह प्रतिज्ञा है जो अल्लाह तआला ने सभी मनुष्यों से उस समय लिया था जब उन्हें आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से निकाला था, जो 'अहदे अलस्तु' कहलाता है, जिसका वर्णन *सूरह आराफ़*-१७२ में है ।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑩

(१०) तथा तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते ? वास्तव में आकाशों तथा धरती के (समस्त) उत्तराधिकार (वस्तुओं) का स्वामी (अकेला) अल्लाह ही है। तुममें से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में दिया है तथा धर्मयुद्ध किया है वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं,[1] अपितु उनसे अत्यन्त उच्च पद के हैं जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया।[2] हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सबसे है,[3] और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे

---

[1]फ़तह (विजय) से अभिप्राय अधिकांश व्याख्याकारों के निकट मक्का की विजय है। कुछ ने हुदैबिया की संधि को खुली विजय (फ़त्हे मोबीन) मानकर उसे ही तात्पर्य लिया है। जो भी हो, हुदैबिया संधि अथवा मक्का की विजय से पहले मुसलमान संख्या तथा शक्ति में कम थे तथा मुसलमानों की आर्थिक दशा भी बहुत कमज़ोर थी। इन स्थितियों में अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना तथा जिहाद में भाग लेना अत्यन्त कठिन तथा बड़े साहस का काम था, जबकि मक्का विजय के पश्चात यह दशा बदल गई। मुसलमान बल तथा संख्या में भी बढ़ते चले गये तथा उनकी आर्थिक दशा भी पहले से कहीं अच्छी हो गई। इसमें अल्लाह तआला ने दोनों युगों के मुसलमानों के संदर्भ में फ़रमाया कि यह पुण्य में समान नहीं हो सकते।

[2]क्योंकि पहलों का व्यय करना तथा जिहाद दोनों काम अति कठिन स्थिति में हुए। इससे विदित हुआ कि सत्कर्मियों तथा साहसियों को अन्य लोगों पर प्रधानता देनी चाहिए। इसलिए अहले सुन्नत के निकट प्रतिष्ठा एवं प्रधानता में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु सर्वोत्तम हैं, क्योंकि प्रथम ईमानवाले भी वही हैं तथा पहले ख़र्च करने वाले एवं प्रथम मुजाहिद (धर्मयोद्धा) भी वही हैं। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय सिद्दीक़ अकबर रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपने जीवन तथा उपस्थिति में नमाज़ के लिए आगे किया तथा इसी कारण मुसलमानों (सहाबा) ने उन्हें ख़िलाफ़त के अधिकार में प्रथम रखा। (رضي الله عنهم و رضوا عنه)

[3]इसमें स्पष्ट कर दिया कि आदरणीय सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम के मध्य प्रतिष्ठा एवं प्रधानता में अंतर अवश्य है, किन्तु श्रेणियों में अंतर का अर्थ यह नहीं कि बाद के मुसलमान होने वाले सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम ईमान तथा नैतिकता में गये गुज़रे थे,

हो उससे अल्लाह अवगत है।

مَن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥ وَلَهُۥٓ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾

(११) कौन है? जो अल्लाह (तआला) को भली प्रकार से ऋण दे, फिर अल्लाह (तआला) उसके लिए उसको बढ़ाता चला जाये तथा उसका प्रिय बदला सिद्ध हो जाये।[1]

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِم بُشْرَىٰكُمُ الْيَوْمَ جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

(१२) [क़यामत (प्रलय) के] दिन तू देखेगा कि ईमानवाले पुरूषों एवं महिलाओं का प्रकाश उनके आगे-आगे तथा उनके दायें दौड़ रहा होगा।[2] आज तुम्हें उन स्वर्गों की शुभसूचना है, जिनके नीचे (शीतल जल) की सरितायें प्रवाहित हैं, जिनमें सदैव का निवास है। यह है महान सफलता।[3]

जैसाकि कुछ लोग आदरणीय मुआविया रजी अल्लाहु अन्हु तथा उनके पिता एवं अन्य ऐसे ही प्रतिष्ठावान सहाबा के संबंध में अपशब्द अथवा उन्हें 'तुलका' कहकर उनकी अवहेलना तथा अपमान करते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सभी सहाबा के सम्बन्ध में फ़रमाया : لا تَسُبُّوا أَصْحَابِي "मेरे सहाबा को अपशब्द न कहो। सौगंध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, यदि तुममें से कोई ओहुद पर्वत जितना सोना भी अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे तो वह मेरे सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द (वज़न) के बराबर भी नहीं।" (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबु फ़ज़ाएलिस् सहाबा)

[1]अल्लाह को अच्छा ऋण देने का अभिप्राय यह है कि अल्लाह के मार्ग में दान तथा पुण्य करना। यह धन जो इंसान अल्लाह के मार्ग में व्यय करता है, अल्लाह ही का दिया हुआ है। फिर भी उसे ऋण कहना, यह अल्लाह का अनुग्रह तथा दया है कि वह इस ख़र्च पर वैसे ही पुण्य प्रदान करेगा जैसे ऋण का भुगतान अनिवार्य होता है।

[2]यह प्रलय में पुल सिरात पर होगा, यह प्रकाश उनके ईमान तथा पुण्य के कर्मों का प्रतिफल होगा, जिसके प्रकाश में वह स्वर्ग का मार्ग सरलता से तय कर लेंगे। इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर आदि ने وَبِأَيْمَانِهِم का यह अर्थ लिया है कि उनके दायें हाथों में उनके कर्मपत्र होंगे।

[3]यह वह फ़रिश्ते कहेंगे जो उनके स्वागत तथा अगुवाई के लिए वहाँ होंगे।

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

(१३) उस दिन द्वयवादी (मुनाफ़िक़) पुरूष एवं महिलायें ईमानवालों से कहेंगे कि हमारी प्रतीक्षा तो करो कि हम भी तुम्हारी दिव्य ज्योति से कुछ प्रकाश प्राप्त कर लें[1] उत्तर दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ[2] तथा प्रकाश की खोज करो। फिर उनके तथा उनके मध्य[3] एक दीवार स्थापित कर दी जायेगी, जिसमें द्वार भी होगा। उसके भीतरी भाग में कृपा होगी[4] तथा वाहय भाग में यातना होगी।[5]

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ

(१४) ये चिल्ला-चिल्ला कर उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे ?[6] वे कहेंगे कि हाँ, थे तो अवश्य, परन्तु तुमने अपने आपको भटकावे में डाल रखा था, [7] तथा प्रतीक्षा में ही

---

[1]यह अवसरवादी कुछ दूर ईमानवालों के साथ उनके प्रकाश में चलेंगे, फिर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) पर अंधकार आच्छादित कर देगा, उस समय वे ईमानवालों से यह कहेंगे।

[2]इसका अभिप्राय यह है कि संसार में जाकर उसी प्रकार ईमान तथा सत्कर्म की पूँजी लाओ जैसे हम लाये हैं। अथवा उपहास स्वरूप ईमानवाले कहेंगे कि पीछे जहाँ से हम प्रकाश लाये थे वहीं जाकर उसको ढूँढो।

[3]अर्थात ईमानवालों तथा मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) के बीच।

[4]इससे अभिप्राय स्वर्ग है जिसमें ईमानवाले प्रवेश कर चुके होंगे।

[5]यह वह भाग है जिसमें नरक होगा।

[6]अर्थात दीवार की आड़ हो जाने पर मुनाफ़िक़, मुसलमानों से कहेंगे कि हम दुनिया में तुम्हारे साथ नमाज़ें नहीं पढ़ते थे, जिहाद आदि में भाग नहीं लेते थे ?

[7]कि तुमने अपने दिलों में कुफ़्र (इंकार) तथा निफ़ाक़ (अवसरवाद) छिपा रखा था।

الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿١٤﴾

रहे[1] और शंका एवं संदेह करते रहे[2] तथा तुम्हें तुम्हारी (व्यर्थ) आकांक्षाओं ने धोखे में ही रखा,[3] यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश आ पहुँचा[4] तथा तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा।[5]

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوَاكُمُ النَّارُ ۖ هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

(१५) तो आज न तुमसे आर्थिक दण्ड (तथा न बदला) स्वीकार किया जायेगा तथा न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना नरक है। वही तुम्हारा साथी है[6] तथा वह बुरा ठिकाना है।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَن تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا

(१६) क्या अब तक ईमानवालों के लिए समय नहीं आया कि उनके हृदय अल्लाह की याद से तथा जो सत्य अवतरित हो चुका है, उससे कोमल हो जायें [7] तथा उन लोगों

---

[1]कि संभवत: मुसलमान किसी आपदा का शिकार हो जायें।

[2]धर्म के विषय में, इसीलिए न क़ुरआन को माना न प्रमाणों एवं चमत्कारों को।

[3]जिसमें शैतान ने तुम्हें फँसाये रखा।

[4]अर्थात तुम्हें मौत आ गई, अथवा अंत में मुसलमान विजयी हो गये तथा तुम्हारी अभिलाषाओं पर पानी फिर गया।

[5]अर्थात अल्लाह की सहनशीलता तथा उसके अवसर देने के नियम के कारण तुम्हें शैतान ने धोखे में डाले रखा।

[6]مَولىٰ उसको कहते हैं जो किसी के काम का संरक्षक अर्थात उत्तरदायी बने, मानो अब नरक ही इस बात का उत्तरदायी है कि उन्हें कड़ी से कड़ी यातना का स्वाद चखाये। कुछ कहते हैं कि सदा संग रहने वाले को भी मौला कह लेते हैं, अर्थात अब नरक की अग्नि ही नित्य के लिए उनकी साथी तथा संगी होगी। कुछ कहते हैं कि अल्लाह नरक को भी बुद्धि तथा समझ प्रदान करेगा तथा वह काफ़िरों के विरूद्ध क्रोध एवं रोष दिखायेगा। अर्थात उनका साथी बनेगा तथा उन्हें दुखदायी यातना से दोचार करेगा।

[7]संबोधन ईमानवालों को है तथा उद्देश्य उनको अल्लाह के स्मरण की ओर अधिक ध्यान दिलाना तथा पवित्र क़ुरआन से पथ प्रदर्शन ग्रहण करने का उपदेश देना है। خشوع

كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿١٦﴾

की तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पूर्व किताब प्रदान की गयी थी,[1] फिर जब उन पर एक लम्बी अवधि व्यतीत हो गई तो उनके हृदय कठोर हो गये,[2] तथा उनमें अधिकाँश फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं ।[3]

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

(१७) विश्वास करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। हमने तो तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ वर्णित कर दीं ताकि तुम समझो।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَٰتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعَفُ

(१८) नि:संदेह दान देने वाले पुरूष एवं महिलायें तथा जो अल्लाह को प्रेम (शुद्धता) के साथ ऋण दे रहे हैं, उनके लिए यह बढ़ाया

(खुशूअ) का अर्थ दिलों का कोमल होकर अल्लाह की ओर झुक जाना, حق हक़ (सत्य) से तात्पर्य पवित्र (ईशवाणी) क़ुरआन है।

[1]जैसे यहूदी तथा इसाई हैं, अर्थात तुम उन जैसे न हो जाना।

[2]जैसे उन्होंने ईश्वरीय धर्मशास्त्र में परिवर्तन तथा फेर-बदल कर दिया उस के बदले संसार का तुच्छ मूल्य प्राप्त करने को उन्होंने आचरण बना लिया, उसके आदेशों का उलंघन किया, अल्लाह के धर्म में लोगों के अनुगामी (मुकल्लिद) बन गये तथा उनको अपना प्रभु बना लिया। मुसलमानों को सावधान किया जा रहा है कि तुम यह काम मत करना अन्यथा तुम्हारे दिल भी कठोर हो जायेंगे तथा फिर यही कर्म जो उनके लिये अल्लाह की धिक्कार का कारण बने, तुम्हें भी अच्छे लगेंगे।

[3]अर्थात उनके दिल बिगड़े एवं कर्म व्यर्थ हैं। दूसरे स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَٰقَهُمْ لَعَنَّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَٰسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ﴾

"फिर उनके वचन भंग के कारण हमने उन पर धिक्कार उतार दी तथा उनके हृदय कठोर कर दिये कि वह वाणी को उसके स्थान से परिवर्तित कर डालते हैं तथा जो कुछ उपदेश उन्हें किया गया था उसका बहुत बड़ा अंश भूला बैठे।" *(अल-मायेदः -१३)*

لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑱

जायेगा ।[1] तथा उनके लिए अच्छा (प्रतिफल एवं) पुण्य है ।[2]

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۖ وَالشُّهَدَاءُ عِندَ رَبِّهِمْ ط لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ط وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ⑲

(१९) अल्लाह एवं उसके रसूल (संदेष्टा) पर जो ईमान रखते हैं, वही लोग अपने प्रभु के निकट सत्यवादी[3] तथा शहीद हैं। उनके लिए उनका बदला तथा उनकी दिव्य ज्योति है, तथा जो कुफ़्र करते हैं और हमारी निशानियों को झुठलाते हैं, वे नरकवासी हैं।

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ

(२०) ज्ञात रखो कि साँसारिक जीवन केवल खेल तथा मनोरंजन और शोभा तथा आपस

---

[1]अर्थात एक के बदले कम से कम दस गुना तथा उससे अधिक सात सौ गुना, अपितु उससे भी अधिक । यह अधिकता मन की शुद्धता तथा आवश्यकता एवं स्थान तथा समयानुसार हो सकती है । जैसे पहले वर्णन हुआ कि जिन लोगों ने मक्का विजय से पहले ख़र्च किया वह पुण्य तथा प्रतिफल में उनसे अधिक होंगे जिन्होंने उसके बाद ख़र्च किया।

[2]अर्थात स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधायें जिनका कभी विनाश तथा अन्त नहीं। आयत में مُصَّدِّقِين वास्तव में مُتَصَدِّقِين है, त को स से बदलकर स में संयुक्त कर दिया गया।

[3]कुछ व्याख्याकारों ने यहाँ वक़्फ़ (विराम) किया है तथा आगे وَالشُّهَدَاءِ को अलग वाक्य माना है। صديقيت (सिद्दिक़ियत) पूर्ण विश्वास तथा पूर्ण सच्चाई एवम शुद्धता का नाम है। हदीस में आता है कि मनुष्य सदा सच बोलता है तथा सच ही की खोज में तथा प्रयत्न में लगा रहता है यहाँ तक कि अल्लाह के सदन में सिद्दीक़ लिख दिया जाता है। (मुत्तफ़क़ अलैहि, मिश्कात किताबुल आदाब, बाबु हिफ़्ज़िल लेसान) एक और हदीस में सिद्दीक़ों (सत्यवादियों) का वह स्थान बताया गया है जो स्वर्ग में उन्हें प्राप्त होगा। फ़रमाया, “जन्नती अपने ऊपर की अटारी वालों को ऐसे देखेंगे जैसे तुम चमकते हुए पश्चिमी अथवा पूर्वी सितारे को क्षितिज में देखते हो।” अर्थात उनके बीच पदों का इतना अंतर होगा । सहाबा (नबी के सहचरों) ने पूछा कि यह अम्बिया की श्रेणियाँ होंगी जिसे दूसरे प्राप्त नहीं कर सकेंगे ? आपने फ़रमाया, हाँ, सौगन्ध है उस प्रभु की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं ! यह वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह के प्रति विश्वास किया तथा ईशदूतों को सच्चा माना। (सहीह बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क़, बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नते व अन्नहा मख़लूक़तुन) अर्थात ईमान तथा पुष्टिकरण की माँग पूरी किया। (फ़तहुल बारी)

وَلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۙ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝

में गर्व (एवं अहंकार) तथा धन एवं संतान में एक-दूसरे से अपने आप को अधिक बतलाना है, जैसे वर्षा तथा उसकी उपज किसानों[1] को अच्छी लगती है, फिर जब वह सूख जाती है तो पीले रंग में उसको तुम देखते हो, फिर वह पूर्णतः चूरा-चूरा हो जाती है।[2] तथा आख़िरत (परलोक) में कठोर यातनायें[3] तथा अल्लाह की क्षमा एवं प्रसन्नता है,[4] तथा साँसारिक जीवन केवल धोखे के साधन के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं।[5]

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ

(२१) (आओ) दौड़ो अपने प्रभु की क्षमा की ओर[6] तथा उस स्वर्ग की ओर जिसका

---

[1]'कुफ़्फ़ार' किसानों को कहा गया है, इसलिए कि इसका शाब्दिक अर्थ है छिपाने वाला। काफ़िरों के दिलों में अल्लाह तथा परलोक का इंकार छिपा होता है, इस कारण से उसे काफ़िर कहा जाता है। किसानों के लिए यह शब्द इस कारण से प्रयोग किया गया है कि वह भी धरती में बीज बोते अर्थात उन्हें छिपा देते हैं।

[2]यहाँ साँसारिक जीवन के शीघ्र समाप्त हो जाने को खेती से उपमा दी गई है कि जिस प्रकार खेती हरी होती है तो भली लगती है जिसे देखकर किसान अति प्रसन्न होते हैं, परन्तु वह शीघ्र ही सूखी तथा पीली होकर चूर-चूर हो जाती है। इसी प्रकार दुनिया की शोभा एवं सुन्दरता, धन तथा संतान एवं अन्य वस्तुयें मनुष्य का मन लुभाती हैं, किन्तु यह जीवन कुछ दिन ही का है, इसे भी स्थायित्व एवं स्थिरता नहीं।

[3]अर्थात काफ़िरों तथा अवज्ञाकारियों के लिए जो दुनिया के खेलकूद में मग्न हैं तथा उसे ही उन्होंने जीवन का लक्ष्य समझा।

[4]अर्थात ईमानवालों तथा आज्ञाकारियों के लिए, जिन्होंने संसार ही को सब कुछ नहीं समझा, अपितु इसे सामयिक तथा नाशवान एवं परीक्षा गृह समझते हुए अल्लाह की आज्ञा के अनुसार जीवन निर्वाह किया।

[5]किन्तु उसके लिए जो इस के धोखे में फँसा रहा तथा परलोक के लिए कुछ नहीं किया। परन्तु जिसने इस संसार को परलोक की खोज के लिये प्रयोग किया तो उसके लिये यही दुनिया उससे उत्तम जीवन प्राप्त करने का साधन सिद्ध होगी।

[6]अर्थात सदाचार एवं स्वच्छ मन से क्षमा-याचना की क्योंकि यही चीजें प्रभु के क्षमादान

وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ۙ اُعِدَّتۡ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضۡلُ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۲۱﴾

विस्तार आकाश एवं धरती के विस्तार के बराबर है ।[1] यह उनके लिए बनायी गयी है जो अल्लाह पर तथा उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान रखते हैं। यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहे प्रदान करे,[2] तथा अल्लाह अत्यन्त कृपालु है ।[3]

مَاۤ اَصَابَ مِنۡ مُّصِيۡبَةٍ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِىۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ نَّبۡرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ

(२२) न कोई कठिनाई (संकट) संसार में आती है[4] न विशेष तुम्हारे प्राणों पर[5] परन्तु इससे पूर्व कि हम उसको उत्पन्न करें वह एक विशेष किताब में लिखी हुई है ।[6] नि:संदेह

का साधन हैं।

[1]तथा जिसका विस्तार इतना हो उसकी लम्बाई कितनी होगी ? क्योंकि लम्बाई चौड़ाई से अधिक ही होती है।

[2]खुली बात हैं कि उसकी इच्छा उसी के लिये होती है जो कुफ़्र तथा दुराचार से क्षमा माँग कर ईमान तथा सदाचार का जीवन अपना लेता है, इसीलिए वह ऐसे लोगों को ईमान तथा पुण्य के कर्मों का सौभाग्य भी प्रदान करता है।

[3]वह जिस पर चाहता है अपनी दया करता है। जिसे वह कुछ दे कोई रोक नहीं सकता तथा जिससे रोक दे कोई दे नहीं सकता। सभी भलाई उसी के हाथ में है, वही पूर्ण दयानिधि तथा वास्तविक दाता है, जिसके यहाँ कंजूसी की कोई कल्पना नहीं।

[4] जैसे अकाल, बाढ़ तथा अन्य धरती तथा आकाश की विपदायें।

[5]जैसे रोग, थकान, दरिद्रता आदि।

[6]अर्थात अल्लाह ने अपने ज्ञानानुसार पूरी सृष्टि को पैदा करने से पहले ही यह सब बातें लिख दीं। जैसे हदीस में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«قَدَّرَ اللهُ الْمَقَادِيرَ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضَ بِخَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ».

"अल्लाह ने आकाश तथा धरती के पैदा करने से पचास हज़ार वर्ष पहले ही सभी भाग्य लिख दिये थे ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाबु हिजाजे आदम व मूसा अलैहिमुस्सलाम)

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾

यह कार्य अल्लाह (तआला) पर (अत्यन्त) सरल है।

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾ۙ

(२३) ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली वस्तु पर दुखी न हो जाया करो तथा न प्रदान की हुई वस्तु पर गर्व करने लगो,[1] तथा गर्व करने वाले अहंकारियों से अल्लाह प्रेम नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾

(२४) जो (स्वयं भी) कंजूसी करें तथा दूसरों को (भी) कंजूसी की शिक्षा दें। (सुनो !) जो भी विमुख हो,[2] अल्लाह निस्पृह तथा प्रशंसा के योग्य है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ

(२५) निःसंदेह हमने अपने संदेष्टाओं को खुली निशानियाँ प्रदान करके भेजा तथा उनके साथ किताब तथा न्याय (तुला) अवतरित किया[3] ताकि लोग न्याय पर स्थित रहें तथा हमने लोहे को भी अवतरित किया[4] जिसमें अत्यन्त

---

[1]यहाँ जिस शोक तथा प्रसन्नता से रोका गया है, यह वह शोक तथा प्रसन्नता है जो इंसानों को अवैध कामों तक पहुँचाती है। अन्यथा दुख पर शोक तथा सुख पर प्रसन्नता एक स्वाभाविक कर्म है, किन्तु मोमिन दुख पर धैर्य धारण करता है कि अल्लाह की इच्छा तथा भाग्य-लेख है, रोने-चिल्लाने से बदल नहीं सकता, तथा सुख पर इतराता नहीं। अल्लाह का कृतज्ञ होता है कि यह मात्र उसके प्रयास का फल नहीं बल्कि अल्लाह की दया एवं उसका उपकार है।

[2]अर्थात अल्लाह की राह में ख़र्च करने से, क्योंकि वास्तविक कृपणता (कंजूसी) यही है।

[3]ميزان मीज़ान (तुला) से अभिप्राय न्याय है तथा प्रयोजन यह है कि हमने लोगों को न्याय करने का आदेश दिया है। कुछ ने इसका अनुवाद तुला किया है। तराज़ू उतारने से अभिप्राय है कि हमने तराज़ू की ओर लोगों को मार्ग दर्शाया कि उसके द्वारा लोगों को तौलकर उनका पूरा-पूरा अधिकार दो।

[4]यहाँ भी उतारा का अर्थ है पैदा करना तथा उसकी कला सिखाना। लोहे से असंख्य वस्तुयें बनती हैं। यह सब अल्लाह के उस निर्देश तथा दिव्य प्रकाशना का परिणाम है जो

شَدِيدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

(भयानकता एवं) शक्ति है[1] तथा लोगों के लिए अन्य भी बहुत से लाभ हैं,[2] तथा इसलिए भी कि अल्लाह जान ले कि उसकी तथा सन्देष्टाओं की सहायता बिना देखे कौन करता है ।[3] नि:संदेह अल्लाह (तआला) शक्तिशाली एवं सामर्थ्यवान है ।[4]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۖ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) नि:संदेह हमने नूह एवं इब्राहीम (अलैहिमुस्सलाम) को (सन्देष्टा बनाकर) भेजा तथा हमने उन दोनों की सन्तान में पैग़म्बरी (दूतत्व) तथा किताब जारी रखी, तो उनमें से कुछ मार्ग पर आये तथा उनमें से बहुत अधिक अवज्ञाकारी रहे ।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا

(२७) उनके पश्चात फिर भी हम निरन्तर अपने सन्देष्टाओं को भेजते रहे तथा उनके

उसने मनुष्य को किया है ।

[1]अर्थात लोहे से अस्त्र-शस्त्र बनते हैं, जैसे तलवार, बंदूक तथा अब प्रमाणु बम, तोपें, युद्ध तोप, पनडुब्बियाँ, राकेट, टैंक आदि असंख्य वस्तुयें, जिनसे शत्रु पर आक्रमण किये जाते हैं तथा अपनी रक्षा भी ।

[2]अस्त्र-शस्त्र के अतिरिक्त लोहे से और भी बहुत से सामान बनते हैं जो घरों तथा विभिन्न उद्योगो में काम आते हैं, जैसे छुरी, चाक़ू, कैंची, हथौड़ा, सुई, खेती, बढ़ई तथा निर्माण आदि के सामान तथा छोटी बड़ी अनगिनत मशीनें तथा सामग्रियाँ ।

[3]यह لِيَقُومَ का संयोजक है, अर्थात रसूलों को इसलिए भेजा ताकि वह जान ले कि उसके रसूलों पर अल्लाह को देखे बिना कौन विश्वास करता तथा उनकी सहायता करता है ।

[4]उसको इसकी ज़रूरत नहीं कि लोग उसके धर्म की तथा उसके रसूलों की सहायता करें, बल्कि वह चाहे तो इसके बिना ही उनको प्रभुत्व प्रदान कर दे । लोगों को तो उनकी सहायता करने का आदेश उनकी अपनी ही भलाई के लिये दिया गया है ताकि वह इस ढंग से अपने प्रभु को प्रसन्न करके उसकी दया तथा क्षमा के पात्र बन जायें ।

وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِي
قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ط
وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا
عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ
فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا

पश्चात हमने ईसा पुत्र मरियम को भेजा तथा उन्हें इंजील प्रदान की तथा उनके अनुयायिओं के हृदय में प्रेम तथा दया का भाव रख दिया।[1] हाँ बैराग तो उन्होंने स्वयं खोज लिया था[2] हमने उन पर आवश्यक नहीं किया था,[3] सिवाय अल्लाह की प्रसन्नता की खोज के।[4] तो उन्होंने उसका पूर्ण पालन न

---

[1] رَأْفَةً (राफ़:) का अर्थ है कोमलता तथा रहमत का अर्थ है दया। अनुयायियों से अभिप्राय ईसा अलैहिस्सलाम के साथी हवारी हैं। अर्थात उनके दिलों में एक-दूसरे के लिए प्रेम तथा प्यार का भाव उत्पन्न कर दिया, जैसे सहाबा केराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम परस्पर प्रेम तथा दयाभाव करने वाले थे। رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ यहूदी इस प्रकार आपस में प्रेमभाव नहीं रखते थे जैसे आदरणीय ईसा के अनुयायी थे।

[2] رَهْبَانِيَّةً (रहबानियत) رَهَب रहब (भय) से बना है अथवा رُهْبَان रूहबान (फ़क़ीर) से संबन्धित है। इसे رهبة से माना जाये तो इसका धातु رَهِبِيَّت (रहिबियत) है, इसमें 'नून' बढ़ाकर रहबानियत बनाया गया है। (ऐसरूत्तफ़ासीर) रहबानियत का अर्थ बैराग है, अर्थात दुनिया से संबंध त्याग कर वन में जाकर अल्लाह की उपासना करना। इसकी पृष्ठभूमि यह है कि ईशदूत ईसा के पश्चात ऐसे राजा हुए जिन्होंने तौरात तथा इंजील में परिवर्तन कर दिया जिसको एक गिरोह ने नहीं माना तथा राजा के भय से पर्वतों एवं गुफ़ा में शरण लिया। यह उसका आरम्भ था, जिसका आधार विवशता थी। किन्तु बाद के लोगों ने अपने बड़ों के अंधे अनुसरण में इस नगर त्याग को उपासना का एक नया ढंग बना लिया तथा स्वयं को गिरजाघरों तथा पूजा स्थलों में बंद कर लिया तथा उसके लिये संसार के त्याग एवं बैराग को अनिवार्य कर लिया। उसी को अल्लाह ने ابتداع (स्वयं गढ़ना) कहा है।

[3] यह पिछली बात ही की पुष्टि है कि यह बैराग उनका स्वयं बनाया हुआ था, अल्लाह ने उसकी आज्ञा नहीं दी।

[4] अर्थात हमने तो उन पर अनिवार्य किया था कि हमारी प्रसन्नता की खोज करें। दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि उन्होंने यह काम अल्लाह को खुश करने के लिए किया था, किन्तु अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह की प्रसन्नता धर्म में अपनी ओर से नई बातें बनाने से प्राप्त नहीं हो सकती, चाहे वह कितनी ही मनोरम क्यों न हों। अल्लाह की प्रसन्नता तो उसके अनुपालन ही से प्राप्त होती है।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَٰسِقُونَ ﴿٢٧﴾

किया,[1] फिर भी हमने उनमें से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका बदला दिया,[2] तथा उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَءَامِنُوا۟ بِرَسُولِهِۦ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِۦ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِۦ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) हे लोगो जो ईमान लाये हो, अल्लाह से डरते रहा करो तथा उसके संदेष्टा पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया का दुगुना भाग प्रदान करेगा[3] तथा तुम्हें दिव्य ज्योति प्रदान करेगा, जिसके प्रकाश में तुम चलो-फिरोगे तथा (तुम्हारे पाप भी) क्षमा कर देगा, अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ ٱلْكِتَٰبِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَىْءٍ مِّن فَضْلِ ٱللَّهِ ۙ وَأَنَّ ٱلْفَضْلَ بِيَدِ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

(२९) यह इसलिए कि अहले किताब[4] (ग्रन्थ वाले) जान लें कि अल्लाह की कृपा के किसी अंश पर भी उन्हें अधिकार नहीं तथा यह कि समस्त कृपा अल्लाह के हाथ में ही है, वह जिसे चाहे प्रदान करे तथा अल्लाह ही अत्यन्त कृपालु है।

---

[1]अर्थात उन्होंने उद्देश्य अल्लाह की प्रसन्नता की खोज बताया, किन्तु उन्होंने पूरा पालन नहीं किया, अन्यथा वह नई बात बनाने की जगह अनुसरण का मार्ग अपनाते।

[2]यह वह लोग हैं जो ईसा के धर्म पर अटल रह गये थे।

[3]यह दुगुना प्रतिफल उन ईमानवालों को मिलेगा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले के नबी पर ईमान रखते थे फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाये, जैसाकि हदीस में वर्णित है। (सहीह-अल-बुख़ारी, किताबुल इल्म, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु वजूबिल ईमान बिरिसालति नबिय्येना) एक दूसरी व्याख्या के अनुसार जब अहले किताब ने इस बात पर गर्व का प्रदर्शन किया कि उन्हें दुगुना पुण्य मिलेगा तो अल्लाह ने मुसलमानों के पक्ष में यह आयत उतारी। (विस्तार के लिये तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

[4]لِئَلاَّ में ﻻ अधिक है तथा अर्थ है ليعلم أهل الكتاب أنهم لا يقدرون على أن ينالوا شيئا من فضل الله (फ़तहुल क़दीर)